



नई दिल्ली, लखनऊ और रायपुर से प्रकाशित

पायनियर



भाजपा की
आर्थिक नीतियों
पर किया प्रहार
राष्ट्रीय-10

www.dailypioneer.com

मुठभेड़ में 30 नक्सली ढेर दो करोड़ मतदाता आज डालेंगे वोट

पायनियर समाचार सेवा।
नारायणपुर/दत्तेवाड़ा

छत्तीसगढ़ में माओवादियों के खिलाफ सबसे बड़े अभियानों में से एक में, सुरक्षाकर्मियों ने शुक्रवार को बस्तर क्षेत्र में भीषण मुठभेड़ में 30 नक्सलियों को मार गिराया। पुलिस अधिकारियों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।

बस्तर क्षेत्र के पुलिस अधिकारियों ने बताया कि नारायणपुर-दत्तेवाड़ा जिले की सीमा में अबुझमाड़ के थुलथुली गांव के जंगल में सुरक्षाबलों और नक्सलियों के बीच हुई मुठभेड़ में सुरक्षाबलों ने 30 नक्सलियों को मार गिराया। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि नारायणपुर और दत्तेवाड़ा जिले की सीमा में स्थित अबुझमाड़ क्षेत्र में माओवादियों की उपस्थिति की सूचना मिलने पर बृहस्पतिवार को नारायणपुर और दत्तेवाड़ा जिले से सुरक्षाबल के संयुक्त दल को गोवेल, नेंदूर और थुलथुली गांव की ओर खाना किया गया था। सुरक्षाबल के दल में जिला रिजर्व गार्ड (डीआरजी) और विशेष कार्य बल (एसटीएफ) के जवान शामिल थे। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि आज अपराह्न लगभग एक बजे नक्सलवादियों ने सुरक्षाबलों पर गोलीबारी शुरू कर दी, जिसके बाद सुरक्षाबल के जवानों ने भी



जवानों का रॉइड की।

उन्होंने बताया कि सुरक्षाबलों ने घटनास्थल से एके 47 और एसएलआर समेत कई अन्य हथियार बरामद किए हैं। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि मुठभेड़ में सभी जवानों के सुरक्षित होने की जानकारी मिली है। क्षेत्र में नक्सलियों के खिलाफ

अभियान जारी है। पुलिस

महानिरीक्षक (बस्तर रेंज) सुंदरराज पी ने बताया कि नारायणपुर-दत्तेवाड़ा अंतर-जिला सीमा पर अभुजमाड़ में थुलथुली और नेंदूर गांवों के बीच जंगल में दोपहर करीब 1 बजे गोलीबारी हुई, जब सुरक्षाकर्मियों की एक संयुक्त टीम नक्सल विरोधी

अभियान पर निकली थी। उन्होंने कहा कि राज्य पुलिस के जिला रिजर्व गार्ड (डीआरजी) और स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) के जवान ऑपरेशन में शामिल थे। उन्होंने कहा कि मुठभेड़ स्थल से एक एके-47 राइफल और एक एसएलआर (सेल्फ लोडिंग राइफल) सहित हथियारों का जखीरा भी बरामद किया गया है। पुलिस ने बताया कि इस साल अब तक दत्तेवाड़ा और नारायणपुर समेत सात जिलों वाले बस्तर क्षेत्र में अलग-अलग मुठभेड़ों में सुरक्षा बलों ने 185 माओवादियों को मार गिराया है। 16 अप्रैल को कांकेर जिले में सुरक्षाकर्मियों के साथ मुठभेड़ में 29 नक्सली मारे गए थे, जिनमें कुछ उच्च पदस्थ कैडर भी शामिल थे।

राज्य में आखिरी बड़ी मुठभेड़ 3 सितंबर को हुई थी, जब दत्तेवाड़ा और बीजापुर जिलों की सीमा पर छह महिलाओं समेत नौ माओवादी मारे गए थे। 16 अप्रैल को कांकेर जिले में सुरक्षाकर्मियों के साथ मुठभेड़ में कुछ उच्च पदस्थ कैडर समेत 29 नक्सली मारे गए थे। अगस्त में छत्तीसगढ़ के दौरे के दौरान केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा था कि भारत मार्च 2026 तक वामपंथी उपावाद (एलडब्ल्यूई) से मुक्त हो जाएगा और इस खतरे के खिलाफ अंतिम हमला करने के लिए एक मजबूत और निर्भय रणनीति को आवश्यकता है।

हरियाणा विस चुनाव

शिखा शर्मा। चंडीगढ़

हरियाणा में करीब एक माह तक चले चुनाव प्रचार के बाद अब शनिवार को प्रदेश के मतदाता अपना जनादेश देंगे। प्रदेश के दो करोड़, तीन लाख मतदाता चुनावी रण में उतरेंगे। 1031 प्रत्याशियों के भाग्य विधाता बनकर इनमें से 90 को विधानसभा के भीतर भेजने का काम करेंगे।

शनिवार को प्रदेश के 90 विधानसभा हलकों में होने वाले मतदान की सभी तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। पोलिंग पार्टियां मतदान केंद्रों में पहुंच चुकी हैं। राज्य में सुबह सात बजे से मतदान प्रक्रिया शुरू होगी और शाम छह बजे तक जो लोग लाइनों में खड़े होंगे वह अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकेंगे।

हरियाणा विधानसभा की 90 सीटों पर 1031 प्रत्याशियों ने चुनावी ताल ठोकनी है। इनमें 930 पुरुष व 101 महिलाएं शामिल हैं। हालांकि 462 प्रत्याशी निर्दलीय तौर पर चुनावी मैदान में हैं। वर्ष 2019 के विधानसभा चुनाव में 67.74 फीसदी मतदान हुआ था। इस बार चुनाव आयोग ने पिछले चुनाव के मुकाबले 75 फीसदी मतदान का लक्ष्य रखा है। चुनाव आयोग की ओर से 20629 मतदान केंद्र बनाए गए हैं, जहां पर सुरक्षा व्यवस्था कड़ी रहेगी। चुनावों के लिए रिजर्व ईवीएम सहित कुल



सोनीपत स्थित बिट्स कॉलेज ने एक चुनाव अधिकारी ईवीएम और अन्य चुनाव संबंधी सामग्री लेकर अपने मतदान केंद्र की ओर जाता हुआ।

27 हजार 866 ईवीएम (बैलेट यूनिट) का उपयोग होगा। इसके साथ ही 24 हजार 719 कंट्रोल यूनिट तथा 26 हजार 774 वीवीपैट मशीनों का उपयोग किया जाएगा। चुनावों में सुरक्षा की दृष्टि से

केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों की 225 कंपनियां सुरक्षा की कमान संभालेंगी और फ्लाइंग स्कॉड की 500 टीमों तथा 461 स्टेट सर्विलांस टीमों भी तैनात की गई हैं। हरियाणा पुलिस ने प्रदेश में

सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए हैं। विधानसभा चुनाव के दौरान किसी प्रकार की अप्रिय घटना से निपटने के लिए प्रदेश के सभी 90 विधानसभा हलकों में 29 हजार 462 पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया है। हरियाणा पुलिस महानिदेशक शत्रुघ्न कपूर ने शुक्रवार को यह जानकारी देते हुए बताया कि चुनाव इवेंट में पुलिस कर्मियों के अलावा 21 हजार 196 होमगार्ड के जवान तथा 10 हजार 403 एसपीओ की तैनाती की गई है। मतदान प्रक्रिया के दौरान प्रदेश के चप्पे-चप्पे पर पुलिस की कड़ी नजर रहेगी ताकि लोग निर्भय होकर अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकें। कपूर ने बताया कि चुनाव के दौरान कानून व्यवस्था बनाए रखना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है ताकि लोग बिना डरे निष्पक्ष तरीके से मतदान कर सकें। इस दौरान कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए 191 अंतरराज्यीय तथा 201 प्रदेश के भीतर नाके लगाए गए हैं। प्रदेश में मतदान के लिए 10 हजार 495 स्थानों पर कुल 26 हजार 629 मतदान केंद्र स्थापित किए गए हैं। इसके अलावा, 3616 मतदान केंद्रों को संवेदनशील (क्रिटिकल) माना गया है तथा 145 मतदान केंद्रों को वल्टेबल माना गया है। इन मतदान केंद्रों पर अतिरिक्त पुलिस बल तैनात रहेगा। इसके साथ ही प्रदेश में 516 फ्लाइंग स्क्वाड टीम, 469 स्टेटिक सर्विलांस टीम तथा 32 क्रिक रिस्पॉंस टीम बनाई गई हैं।

महाराष्ट्र विस उपाध्यक्ष तीसरी मंजिल से कूदे जाल से बची जान



पायनियर समाचार सेवा। मुंबई

एक नाटकीय घटनाक्रम में धनगर समुदाय को अनुसूचित जनजाति सूची में शामिल करने की मांग के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे आदिवासी नेताओं, जिनमें विधानसभा उपाध्यक्ष नरहरि जिरवाल भी शामिल हैं, ने शुक्रवार को महाराष्ट्र राज्य सचिवालय मंत्रालय की तीसरी मंजिल से नीचे लगे सुरक्षा जाल पर छलांग लगा दी। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि मुख्यमंत्री से मिलने का समय न मिलने के कारण उन्होंने ऐसा किया। इस घटना में किसी के घायल होने की खबर नहीं है, लेकिन छह मंजिला मंत्रालय परिसर में तनाव (शेष पृष्ठ 9)

तृतीय चंद्रघंटा



पिण्डज प्रवाराकूढ चण्डकोपास्त्रकेयुता। प्रसादं तनुते मह्यम् चन्द्रघण्टेति विश्रुता॥

नवरात्र में तीसरे दिन मां चंद्रघंटा की पूजा की जाती है। मां युद्ध मुद्रा में सिंह पर विराजमान हैं। मां चंद्रघंटा के हाथों में त्रिशूल, धनुष, गदा और तलवार हैं। इनके माथे पर घंटे के आकार में अर्द्ध चंद्र विराजमान है, इसी वजह से ये चंद्रघंटा कहलाती हैं। मां राक्षसों का वध करने वाली हैं। इनकी अराधना से मनुष्यों के सभी पाप नष्ट होते हैं। इनके दस हाथों में अस्त्र-शस्त्र सजे हुए हैं। इनकी पूजा करने वाला व्यक्ति पराक्रमी और निर्भय होता जाता है।

पश्चिम एशिया में धधक रही आग में ईरान के खामेनेई ने घी डाला



एजेंसियाँ। तेहरान/ बेरूत

ईरान के सर्वोच्च नेता ने शुक्रवार को देश द्वारा इजरायल पर हाल ही में किए गए मिसाइल हमले की प्रशंसा की और कहा कि यदि आवश्यक हुआ तो वे इसे फिर से करने के लिए तैयार हैं। राज्य टीवी की रिपोर्ट में यह बात कही गई है। लगभग पांच वर्षों में शुक्रवार को नमाज़ में नेता के रूप में अपनी पहली उपस्थिति में अयातुल्ला अली खामेनेई ने मिसाइल हमले को ईरान के सशस्त्र बलों द्वारा एक 'शानदार' काम कहा। दूसरी ओर, इजरायल ने रात भर में कई बड़े हवाई हमले किए, बेरूत के उपनगरों को निशाना बनाया और इजरायली बमबारी से भाग रहे हजारों लोगों के लिए लेबनान और सीरिया के बीच मुख्य सीमा पार करना बंद कर दिया। इजरायली सेना ने शुक्रवार को कहा कि एक दिन पहले बेरूत में किए गए हमले में हिजबुल्लाह के संचार प्रभाग के प्रमुख मोहम्मद राशिद स्काफ़ी की मौत हो गई। सेना ने एक बयान में कहा कि स्काफ़ी एक वरिष्ठ हिजबुल्लाह आतंकवादी था जो 2000 से संचार



वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए शांति जरूरी: मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को मध्य पूर्व में बढ़ते संघर्ष और चल रहे रूस-यूक्रेन युद्ध का परोक्ष रूप से उल्लेख करते हुए कहा कि ये दोनों क्षेत्र वैश्विक अर्थव्यवस्था और ऊर्जा सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं। उनकी यह टिप्पणी मध्य पूर्व में संघर्ष के और बढ़ने की आशंकाओं के बीच आई है। अपार



इकाई के लिए जिम्मेदार था और हिजबुल्लाह के उच्च अधिकारियों के साथ 'निकटता से जुड़ा हुआ' था। मंगलवार को ईरान ने इजरायल पर कम से कम 180 मिसाइलें दागीं, जो इजरायल और ईरान तथा उसके सहयोगियों (शेष पृष्ठ 9)

तिरुपति लड्डू विवाद उच्चतम न्यायालय ने स्वतंत्र एसआईटी का गठन किया

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय ने तिरुपति लड्डू बनाने में पशु चर्बी के इस्तेमाल के आरोपों की जांच के लिए पांच सदस्यीय स्वतंत्र विशेष जांच दल (एसआईटी) का शुक्रवार को गठन करने के साथ ही स्पष्ट किया कि वह अदालत का राजनीतिक युद्ध के मैदान के रूप में इस्तेमाल किए जाने की अनुमति नहीं देगा। यह आदेश इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि शीर्ष अदालत द्वारा नियुक्त जांच दल उस एसआईटी का स्थान लेगा जिसका गठन आंध्र प्रदेश सरकार ने तिरुपति लड्डूओं को बनाने में पशु चर्बी के इस्तेमाल के आरोपों की जांच के लिए 26 सितंबर को किया था। न्यायमूर्ति बी आर गवई और न्यायमूर्ति के वी विश्वनाथन की पीठ ने कहा कि एसआईटी में केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) और आंध्र प्रदेश पुलिस के दो-दो अधिकारियों के अलावा एफएसएसआई (भारतीय खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण) का एक वरिष्ठ अधिकारी भी शामिल होगा। पीठ ने कहा, हम स्पष्ट करते हैं कि हम न्यायालय का राजनीतिक युद्ध के मैदान के रूप में इस्तेमाल नहीं होने देंगे लेकिन करोड़ों लोगों की भावनाओं को शांत करने के लिए हम चाहते हैं कि जांच एक स्वतंत्र एसआईटी द्वारा की जानी चाहिए जिसमें राज्य पुलिस एवं सीबीआई के प्रतिनिधि और एफएसएसआई का एक प्रतिनिधि शामिल हों। पीठ ने निर्देश दिया कि यह उचित होगा कि जांच केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) के निदेशक की निगरानी में की जाए। उसने सुनवाई के दौरान कहा, हम नहीं चाहते कि यह राजनीतिक नाटक बन जाए। दुनिया भर में करोड़ों लोगों की भावनाएं इससे जुड़ी हैं। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने इस महीने की शुरुआत में आरोप लगाया था कि राज्य में वाई एस जगन मोहन रेड्डी के नेतृत्व वाली पिछली सरकार के दौरान तिरुपति मंदिर के लड्डू तैयार करने में पशु चर्बी का इस्तेमाल किया (शेष पृष्ठ 9)



पुणे में कालेज छात्रा से सामूहिक दुष्कर्म

पुस्त्र मित्र को पेड़ में बांधकर पीटा, एक गिरफ्तार, दो संदिग्धों के स्केच जारी किए

टीएन रघुनाथ। मुंबई

बृहस्पतिवार देर रात पुणे के बाहरी इलाके में सुनसान बोपदेव घाट इलाके में एक 21 वर्षीय लड़की से उसके पुरुष मित्र को पेड़ से बांधकर तीन अज्ञात लोगों ने सामूहिक बलात्कार किया। पीड़ित लड़की गुजरात की रहने वाली है और उसका इलाज पुणे के सरकारी अस्पताल में चल रहा है। घटना रात करीब 11 बजे बोपदेव घाट के कम रोशनी वाले और सुनसान इलाके में हुई। पुलिस को घटना की जानकारी शुक्रवार सुबह करीब 5 बजे मिली।

इस घटना में लोगों में काफी रोष फैल गया और स्थानीय पुलिस ने घटना के सिलसिले में पुणे के कोंढवा इलाके के 36 वर्षीय निवासी को गिरफ्तार कर लिया और बाकी दो संदिग्धों की तलाश शुरू कर दी। पुणे पुलिस ने बाकी दो संदिग्धों की तलाश के लिए अपराध और जांच शाखाओं की 10 टीमें बनाई हैं। शुक्रवार शाम को पुलिस ने कथित सामूहिक बलात्कार में शामिल तीन संदिग्धों में से दो के स्केच जारी किए। ये स्केच पीड़ित लड़की द्वारा अस्पताल में पुलिस को दिए गए बयान के आधार पर बनाए गए थे। मीडियाकर्मियों से बात करते हुए पुणे के अतिरिक्त पुलिस आयुक्त रंजन कुमार शर्मा ने कहा, प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, महिला



और उसका पुरुष मित्र बृहस्पतिवार देर रात बोपदेव घर इलाके में गए थे, जहां तीन अज्ञात व्यक्तियों ने कथित तौर पर उसके साथ बलात्कार किया। प्रारंभिक जांच से पता चला है कि तीन संदिग्ध - जिनमें से एक ने खुद को कार्यकर्ता बताया - एक कार में पीड़ित लड़की और उसके प्रेमी के पास पहुंचे और जोड़े से जानना चाहा कि वे उस 'निषिद्ध' क्षेत्र में क्या कर रहे थे। उन्होंने जोड़े की तस्वीरें लीं। गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी देने के बाद, संदिग्धों में से एक ने लड़की को जबरन कार में बिठा लिया। उन्होंने उसके प्रेमी को एक पेड़ से बांध दिया और मामले के अंदर लड़की के साथ बारी-बारी से बलात्कार किया। घटनास्थल से भागने से पहले संदिग्धों ने पीड़ित लड़की के दोस्त पर भी हमला किया। घायल प्रेमी ने पीड़ित लड़की को इलाज के लिए ससून जनरल अस्पताल (शेष पृष्ठ 9)

ऐतिहासिक कश्मीरी गेट अब ट्रैफिक जाम के जंजाल में उलझा



राजेश कुमार। नई दिल्ली

सिविल लाइंस के नजदीक स्थित कश्मीरी गेट पर रोजाना भारी ट्रैफिक जाम रहता है। यहाँ पर मुख्यमंत्री, उपराज्यपाल और कैबिनेट मंत्रियों के आवास स्थित हैं। यह चौबीसों घंटे ट्रैफिक जाम के लिए सबसे कुख्यात हिस्सों में से एक है। लाला हरदेव

मार्ग कश्मीरी गेट मेट्रो स्टेशन और आईएसबीटी के सामने मुख्य सड़क है, जहाँ शाहदरा और दिलशाद गार्डन जैसे पूर्वी दिल्ली के इलाकों से आने वाले फ्लाइंग जाम मिलते हैं। कश्मीरी गेट को चान्दी चौक और दरियागंज से जोड़ने वाला नेताजी सुभाष मार्ग हमेशा अतिक्रमण और संकरी गलियों के कारण जाम रहता है। इस हिस्से पर एक और बड़ा जाम आईएसबीटी कश्मीरी गेट और चंदगी राम अखाड़ा जंक्शन के बीच आता है। हजारों कारों को जोड़ने वाला नित्यानंद मार्ग यहाँ एक और अड़चन है। दिलचस्प बात यह है कि कश्मीरी गेट के आसपास की सड़कों पर वाहनों की संख्या कई गुना बढ़

चौबीस घंटे जाम के लिए कुख्यात इलाकों में से एक है यह हिस्सा



आईएसबीटी कश्मीरी गेट पर ट्रैफिक जाम।

फोटो: रंजन डिमरी

गई है, लेकिन सड़कों और यातायात प्रबंधन की स्थिति वैसी ही बनी हुई है। 2018 में, दिल्ली यातायात पुलिस ने कश्मीरी गेट के आस-पास के क्षेत्र को भारी पैदल यात्रियों की आवाजाही और यातायात की भीड़ के कारण 'दुर्घटना-आसंकित' क्षेत्र के रूप में पहचाना था। उल्लेखनीय है कि 2018 के बाद से स्थिति और भी खराब हो गई है। अवैध पार्किंग, अनियंत्रित निजी वाहन, भारी अतिक्रमण और भारी यातायात के कारण अधिकारी यहाँ बेखबर नजर आते हैं। दिल्ली सरकार के पूर्व परिवहन सचिव रजनी कान्त वर्मा ने कहा कि कश्मीरी गेट पर भारी ट्रैफिक और (शेष पृष्ठ 9)

स्थाई समिति चुनाव में एलजी की दखलंदाजी से सुप्रीम कोर्ट नाराज

उच्चतम न्यायालय ने छठे सदस्य के चुनाव में उपराज्यपाल कार्यालय की ओर से की गई जल्दबाजी पर सवाल उठाया

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली नगर निगम की स्थाई समिति चुनाव में उपराज्यपाल के दखल पर उच्चतम न्यायालय ने नाराजगी जताई है। शीर्ष अदालत ने उपराज्यपाल कार्यालय को नोटिस जारी कर पूछा है कि उन्होंने किस अधिकार का इस्तेमाल कर चुनाव में दखल दिया। एलजी ऑफिस को 2 सप्ताह में जवाब देना है।

न्यायमूर्ति पी. एस. नरसिम्हा और न्यायमूर्ति आर. महादेवन की पीठ ने उपराज्यपाल कार्यालय से कहा कि वह स्थाई समिति के अध्यक्ष पद का



चुनाव तब तक न कराए जब तक वह (न्यायालय) 27 सितंबर को हुए स्थाई समिति चुनाव के खिलाफ महापौर शैली ओबेरॉय की याचिका पर सुनवाई नहीं कर ले।

पीठ ने उपराज्यपाल कार्यालय की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता संजय जैन से कहा, यदि आप एमसीडी स्थाई समिति के अध्यक्ष के लिए चुनाव कराते हैं तो हम इसे

को धारा 487 के तहत कार्यकारी शक्तियों का इस्तेमाल करना शुरू करते हैं तो लोकतंत्र खतरे में पड़ जाएगा। आप चुनावी प्रक्रिया में बाधा कैसे डाल सकते हैं। सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि मामले में राजनीति हो रही है। स्थायी समिति सदस्य चुनाव में मेयर की भूमिका होती है। यह सदन के अंदर का मामला है। इसे एलजी नियंत्रित नहीं कर सकते। कोर्ट ने कहा कि अगर एलजी स्टैंडिंग कमिटी चेरमैन चुनाव में दखल देंगे, तो इसे गंभीरता से लिया जाएगा दिल्ली नगर निगम स्टैंडिंग कमिटी की आखिरी खाली सीट के लिए चुनाव गत शुक्रवार (27 सितंबर) को हुआ था। इस चुनाव में आम आदमी पार्टी और कांग्रेस ने हिस्सा नहीं लिया था। आप ने निगम स्थायी समिति के चुनाव को अवैध और असंवैधानिक करार दिया था और फिर इस चुनाव कराने को लेकर सुप्रीम कोर्ट पहुंच गई और कहा कि यह चुनाव कानून को ताक पर रखकर हुआ है।

कोर्ट हर मामले में नोटिस जारी कर जवाब मांगता है: सचदेवा

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा है कि आम आदमी पार्टी ने गत लगभग 2 साल में दिल्ली नगर निगम को ठप कर दिया है। अब तो स्थिति इतनी खराब है कि हार की सम्भावना से बौखलाई आप नगर निगम एकट अनुसार आवश्यक दलित महापौर चुनने का चुनाव भी नहीं होने दे रही है।

आम आदमी पार्टी आज स्थाई समिति सदस्य के चुनाव के मुद्दे के पर न्यायालय के उपराज्यपाल से पूछे सवालों को अपनी उपलब्धि बता रही है जबकि न्यायालय ऐसे हर मामले में नोटिस कर याचिकाकर्ता के सवालों पर जवाब मांगता है।

वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि आम आदमी पार्टी वर्ष 2022 में दिल्ली नगर निगम की सत्ता में आने के बाद नगर निगम को राजनीतिक एवं कानूनी लड़ाई का आखाड़ा बना दिया है जहाँ एलडमैन की नियुक्ति स्वीकार ने से लेकर स्थाई समिति सदस्यों का चुनाव भी तब हुआ जब न्यायालय ने सख्त आदेश कर दिया। लम्बे इंतजार के बाद सर्वोच्च एवं उच्च न्यायालय के दबाव में नगर



निगम की वाई समितियों एवं स्थाई समिति का चुनाव हुआ पर स्थाई समिति अध्यक्ष के चुनाव में हार मामले में नोटिस कर याचिकाकर्ता के सवालों पर जवाब मांगता है।

वीरेंद्र सचदेवा ने कहा है कि अरविंद केजरीवाल एकतंत्र सरकार चलाने वाले व्यक्ति है और नगर निगम में बराबर की टकराव का विपक्ष है अतः वह नगर निगम को चलने नहीं देना चाहते।

सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी के बाद हमलावर हुई आप

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय की टिप्पणी के बाद आम आदमी पार्टी उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना के खिलाफ आक्रामक हो गई है। मंत्री सौरभ भारद्वाज ने आरोप लगाया कि कि एलजी एक सुनियोजित साजिश के तहत काम कर रहे हैं। भारद्वाज ने मीडिया से बातचीत में कहा कि मेयर शैली ओबेरॉय द्वारा 27 सितंबर को रात 10 बजे



स्थायी समिति का चुनाव स्थगित करने के बाद कहा था कि एलजी द्वारा इस्तेमाल की गई शक्तियां गलत थीं। उप राज्यपाल ने जो किया वह बेहद शर्मनाक कृत्य है। भाजपा 15 साल तक एमसीडी में सत्ता में थी। उसके बाद लोगों ने फैसला किया कि अब वे आम आदमी पार्टी को नगर निकाय में देखना चाहते हैं। लेकिन भाजपा एलजी के जरिए सत्ता हासिल करनेकी कोशिश कर रही है। मालूम हो कि 26 सितंबर को ओबेरॉय ने पार्षदों की हलाशी में व्यवधान के बाद चुनाव को 5 अक्टूबर तक के लिए स्थगित कर दिया था। हालांकि, सक्सेना ने फैसले को पलट दिया और एमसीडी आयुक्त अश्विनी कुमार को 27 सितंबर को चुनाव कराने का निर्देश दिया था। चुनाव में भाजपा ने सीट जीत ली, जिससे उसे स्थायी समिति में 10 सदस्य मिल गए। सत्तारूढ़ आप के पैनल में आठ सदस्य हैं। इससे नगर निगम की सर्वोच्च निर्णय लेने वाली संस्था में प्रस्तावों को मंजूरी देने में भाजपा को अधिक अधिकार मिल गया। 5 करोड़ रुपये और उससे अधिक के व्यय वाले नीति प्रस्तावों को स्थायी समिति को मंजूरी की आवश्यकता होती है।

यूनानी डॉक्टर की हत्या के मामले में नाबालिग को पकड़ा

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

जैतपुर के एक नर्सिंग होम में यूनानी डॉक्टर जावेद अख्तर की हत्या की गुलथी दिल्ली पुलिस ने सुलझा लिया है। अपराध शाखा ने आनंद विहार इलाके से एक किशोर को पकड़ा गया।

पुलिस उपायुक्त राकेश पावरिया ने बताया कि डॉक्टर जावेद अख्तर जैतपुर स्थित नीमा अस्पताल में ड्यूटी पर थे। बुधवार देर रात वह अस्पताल में अपने केबिन में थे। तभी दो किशोर एक से डेढ़ बजे के बीच मरीज बनकर उनके पास आए थे। उनमें एक ने कट्टे से गोलीमार उसकी



हत्या कर दी थी। कर्मचारियों ने इसकी सूचना पुलिस को दी। कालिंदी कुंज थाना पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज किया गया। पुलिस टीम ने अस्पताल के रिसेप्शन, ड्रेसिंग रूम और गैलरी से सीसीटीवी फुटेज की जांच की। छानबीन में पता चला कि 16-17 साल की उम्र के दो लड़के 3

अक्टूबर को रात करीब 1 बजे अस्पताल में दाखिल हुए थे। उनमें से एक ने अपने पैर की ड्रेसिंग बदलने के लिए कहा था, जो पिछली रात भी की गई थी। ड्रेसिंग के बाद, वे पचीं लेने के लिए जावेद के केबिन में गए। कुछ ही देर बाद, नाइट स्टाफ गजाला परवीन और मोहम्मद कामिल ने गोली चलने की आवाज सुनी थी। इस बीच, पुलिस ने नाबालिग के इंस्टाग्राम प्रोफाइल का पता लगाया गया। क्राइम ब्रांच की टीम ने आनंद विहार इलाके से नाबालिग को पकड़ लिया। नाबालिग ने अपने साथी एक अन्य नाबालिग के साथ मिलकर हत्या में शामिल होने की बात कबूल की।

घर खाली कर सांसद के बंगले में शिफ्ट हुए केजरीवाल

आप संयोजक पत्नी, बेटा, बेटों और माता-पिता के साथ दो वाहनों में 5, फिरोजशाह रोड स्थित आवास में रहेंगे

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने 6, पल्लेग स्टॉफ रोड स्थित सीएम आवास खाली कर दिया। अब वह फिरोजशाह रोड पर स्थित आप के राज्यसभा सदस्य को आर्वाइट बंगले में शिफ्ट हो गए हैं। शुक्रवार को उन्होंने पूरे परिवार के साथ मुख्यमंत्री आवास से विदाई ली।

राष्ट्रीय संयोजक पत्नी, बेटा, बेटों और माता-पिता के साथ दो वाहनों में मंडी हाउस के समीप 5, फिरोजशाह रोड स्थित आवास में रहने के लिए चले गए। केजरीवाल, उनकी पत्नी और बेटा एक कार में थे। यह बंगला पंजाब से आम आदमी पार्टी (आप) के राज्यसभा सदस्य अशोक मित्तल को आर्वाइट है। मुख्यमंत्री आवास खाली करने से पहले केजरीवाल परिवार को उनके पुराने आवास के कर्मचारियों ने भावुकतापूर्ण माहौल के बीच विदा किया। मुख्यमंत्री ने पूर्व आवास के कर्मचारियों को गले लगाया। उनको पत्नी सुनीता ने एक सरकारी अधिकारी को परिवार को उनकी चाची सौंपी। छह, पल्लेगस्टॉफ बंगला दिल्ली सरकार के लोक निर्माण विभाग के स्वामित्व में आता है। केजरीवाल परिवार ने गृह प्रवेश की रस्म आदा करने के बाद अपने नए घर में प्रवेश किया। आप नेताओं ने कहा कि परिवार का सामान दो छोटे ट्रकों में नए बंगले में पहुंचाया गया।



अपने माता-पिता और पत्नी के साथ सरकारी आवास खाली करने के बाद जाते हुए आप प्रमुख केजरीवाल

पूर्व सीएम का सरकारी बंगले से नहीं छूटा मोह : गोयल

नई दिल्ली। पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल एक सांसद अशोक मित्तल को आर्वाइट सरकारी बंगले में रहने के लिए अधिकृत नहीं हैं, इस बात को लेकर शुक्रवार को पूर्व केन्द्रीय मंत्री और पूर्व दिल्ली भाजपा अध्यक्ष विजय गोयल ने 5 फिरोजशाह रोड पर विरोध किया। साथ ही कहा वह राज्यसभा के चेरमैन से इस बात की शिकायत करेंगे कि एक सांसद महीनों-महीनों और सालों-साल किसी दूसरे परिवार को अपने घर में कैसे रहने दे सकता है। विजय गोयल ने कहा कि यह एक पूर्व मुख्यमंत्री को शोभा नहीं देता कि वह सांसद को आर्वाइट आवास जिसमें सांसद को अपने संसदीय कार्यों को करने के

लिए रियायती दरों पर सुविधाएं मिलती हैं, उसका लाभ उठाए। यह वही केजरीवाल हैं जिन्होंने घोषणा की थी और पफिडेविट भी दिया था कि वे मुख्यमंत्री बनने पर बंगला, गाड़ी, सुरक्षा नहीं लेंगे। बाद में बड़ी से बड़ी और शोश महल सा करोड़ों रूपयों का बंगला ले लिया। गोयल ने कहा कि इस विरोध का मकसद दिल्ली वालों को केजरीवाल की कथनी और करनी में फर्क बताना है, ताकि जनता एक बार फिर देख सके कि केजरीवाल के दोनों चेहरे कितने अलग-अलग हैं। जब केजरीवाल कह रहे थे कि कई कार्यकर्ता उनको अपने घर में रहने के लिए बोल रहे थे तो वे वहां पर क्यों नहीं गए।

विवि की पहचान नौकरियां सृजन से हो : आतिशी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

मुख्यमंत्री आतिशी ने कहा कि विश्वविद्यालयों को सिर्फ उनके नौकरी दिलाने के रिकॉर्ड के आधार पर नहीं आका जाना चाहिए बल्कि इन संस्थानों से उत्तीर्ण होने वाले स्नातकों ने कितनी नौकरियां सृजित की इस पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।

आतिशी ने नेताजी सुभाष प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के दूसरे दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए युवाओं में उद्यमशीलता कौशल को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर दिया। आतिशी दिल्ली सरकार में शिक्षा मंत्री का पदभार भी संभाल रही हैं। समारोह में 2224 छात्रों डिग्रियां सौंपी



छात्रा को डिग्री प्रदान करते एलजी वीके सक्सेना व सीएम आतिशी।

गई। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा, युवाओं के सामने आज सबसे बड़ी चुनौती बेरोजगारी है। मुझे यह जानकर बेहद खुशी हो रही है कि एनएसयूटी के 81 फीसदी स्नातकों को नौकरी मिल गई। आतिशी ने बिजनेस ब्लास्टर कार्यक्रम की सफलता की कहानियां भी साझा कीं। स्कूली बच्चों को स्टार्टअप शुरू करने के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करता है। उपराज्यपाल वीके सक्सेना भी दीक्षांत समारोह में शामिल हुए। सक्सेना ने अपने संबोधन में इस बात पर जोर दिया कि भारत के युवा राष्ट्र

नेताजी सुभाष प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह

की सबसे बड़ी संपत्ति हैं और उनका योगदान राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। सीएम का युवाओं को संदेश- नौकरी ढूँढने वाले नहीं, नौकरी देने वाले बनें, तभी भारत बनेगा दुनिया में नंबर-1 बिजनेस ब्लास्टर से सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे बने उद्यमी और दे रहे नौकरी, अब ये प्रोग्राम दिल्ली सरकार के सभी विश्वविद्यालय में भी छात्रों को उद्यमी बनाने का मौका देगा।

पांच लाख की 250 ई-सिगरेट जलत, 5 गिरफ्तार

भारत में सितंबर 2019 से ई-सिगरेट का निर्माण, आयात, विज्ञापन या बिक्री प्रतिबंधित है

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

राष्ट्रीय राजधानी में ई-सिगरेट के भंडारण, परिवहन और बिक्री के आरोप में पांच लोगों को गिरफ्तार किया गया है। इन लोगों के पास से करीब पांच लाख रुपए की 257 ई-सिगरेट और चार लाख रुपए बरामद किए गए हैं। भारत में सितंबर 2019 से ई-सिगरेट का निर्माण, आयात, विज्ञापन या बिक्री प्रतिबंधित है।

पुलिस उपायुक्त विचित्र वीर ने बताया कि दो अक्टूबर को रात करीब दो बजे एक टीम राति गश्त पर थी और उसने अशोक पार्क में मेट्रो स्टेशन के पास एक सुनसान जगह पर अटिंगा कार खड़ी देखी जिससे संदेह



उत्पन्न हुआ। जल्द ही एक अन्य कार वहां आकर रस्की और लोग अटिंगा कार में रखे बक्से उस कार में स्थानांतरित करने लगे। डीसीपी ने बताया कि पुलिस ने दोनों वाहनों के चालक को गिरफ्तार कर लिया और उनके पास से 20 डिब्बे बरामद किए, जिनमें प्रत्येक में 10 ई-सिगरेट थीं। गिरफ्तार लोगों के पास से चार लाख रुपए नकद भी बरामद किए गए। दोनों की पहचान रितिक दौलत और सबी कुमार के रूप में हुई है। पूछताछ के दौरान उन्होंने तीन अन्य लोगों अनिकेत, पवन चौधरीसिया और दीक्षांत कुमार के नाम बताए, जो ई-सिगरेट का भंडारण और बिक्री करते थे।

रेशनआर रोड डेढ़ महीने रहेगा बंद

नई दिल्ली। डीएमआरसी द्वारा दोहरी सुरंग के निर्माण के कारण उत्तरी दिल्ली में रेशनआर रोड एक महीने से अधिक समय तक यातायात और पैदल यात्रियों के लिए बंद रहेगी। यातायात पुलिस द्वारा जारी परामर्श में कहा कि यह सड़क शुक्रवार मध्यरात्रि से 18 नवंबर तक बंद रहेगी।

यात्रियों की सुविधा के लिए आईएसबीटी से आने वाली और रेशनआर रोड होते हुए शक्ति नगर की ओर जाने वाली बसों और भावी वाहनों की आवाजाही शमनाथ मार्ग, सिविल लाइंस, माल रोड से खालसा कॉलेज और शक्ति नगर चौक के रस्ते होगी। रेशनआर रोड पर रेशनआर गोल चक्कर से पुल बंगश मेट्रो स्टेशन तक सुरंग निर्माण कार्य चल रहा है।

उधार के पैसे वापस मांगने पर चाकू मारने वाले दो गिरफ्तार

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

जाफराबाद इलाके में एक व्यक्ति ने जब अपने उधार दिए पैसे वापस मांगे तो आरोपी चाकू से हमला कर दिया। इस मामले में तीन आरोपियों में से दो को गिरफ्तार कर लिया है।

डीसीपी जय टिकरी के अनुसार मौजूर इलाके में माता वाली गली में एक व्यक्ति को चाकू मारने की सूचना मिली थी। मौके पर पहुंची पुलिस टीम घायल अवस्था में हुमायूं पित्रा अहमद हसन निवासी ब्रह्मपुरी कीला था। उसके शरीर पर चाकू से कई बार किये गए थे। हुमायूं को जागरूक चंद अस्पताल ले जाया गया।



गया। बाद में उसे गुरु तेग बहादुर अस्पताल में भर्ती कराया गया था। हुमायूं ने बताया उसने तीन मोहम्मद को दो लाख रुपये उधार दिए थे। पैसे वापस करने के बहाने तीन मोहम्मद ने उसे माता वाली गली पार्क के पास बुलाया था। जहां अपने साथियों के साथ मिलकर हुमायूं पर चाकू से हमला कर दिया था।

बस मार्शल की बहाली को लेकर आप-भाजपा आमने सामने

एलजी ने न तो मिलने का समय दिया और न ही भाजपा विधायक सामने आए: भारद्वाज

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

पूर्व बस मार्शलों की बहाली के मुद्दे पर सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी और भारतीय जनता पार्टी के बीच तीखी बहस हुई, जिसमें अंततः दोनों पक्षों ने अपनी नौकरी बहाल करने के प्रस्ताव पर समर्थन जताया। विधानसभा ने प्रस्ताव पारित किया कि आप और भाजपा दोनों विधायक तीन अक्टूबर को सुबह 11 बजे उपराज्यपाल वी.के. सक्सेना से मिलेंगे और मार्शलों की बहाली सुनिश्चित होने तक वापस नहीं लौटेंगे। ऐसी कोई बैठक हालांकि नहीं हुई। उपराज्यपाल भारद्वाज पर निशाना साधते हुए भारद्वाज ने पूछा, क्या इस तरह की तात्कालिक किसी अन्य राज्य में होती है, जहां राज्यपाल के



पास मंत्रियों से मिलने का समय नहीं है और जब वे राज्यपाल से मिलने जाते हैं तो पुलिस द्वारा उनकी पिटाई की जाती है। उन्होंने आरोप लगाया कि एक तानाशाह की तरह उपराज्यपाल राष्ट्रीय राजधानी के युवाओं पर बेरोजगारी थोप रहे हैं। नेता प्रतिपक्ष विजेंद्र गुप्ता ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि सत्तारूढ़ आप की मंशा मार्शलों को राहत देना नहीं बल्कि उनकी भावनाओं के साथ राजनीति करना है। गुप्ता ने दावा किया, जब इनके नेता अरविंद केजरीवाल मुख्यमंत्री थे, तब उन्होंने मार्शलों को नौकरी से निकालने का आदेश दिया था। अब वे उन्हें बहाल नहीं करके इन गरीब लोगों को गुमराह कर रहे हैं। सत्तारूढ़ पार्टी पर हमला तेज करते हुए भाजपा नेता ने कहा, अब नई मुख्यमंत्री आतिशी हैं। वह इन नागरिक स्वयंसेवकों को बहाल क्यों नहीं करती। गुप्ता ने कहा कि भाजपा विधायक पांच अक्टूबर को मुख्यमंत्री से मिलेंगे और उनसे कैबिनेट नोट बनाए और उसे कैबिनेट से मंजूरी दिलाने का अनुरोध करेंगे। हम मुख्यमंत्री से बस मार्शलों की नियुक्ति में ओबीसी, एससी, एसटी

और ईडब्ल्यूएस के लिए आरक्षण का प्रावधान करने का भी अनुरोध करेंगे। मार्शलों को नौकरी से हटाने से पहले 6-7 महीनों तक उन्हें सैलरी क्यों नहीं दी गई। केजरीवाल जवाब दें की इन मार्शलों को बिना कारण नौकरी से बर्खास्त क्यों किया गया।

कार शोरूम में गोलीबारी में दो और शूट गिरफ्तार

नई दिल्ली। नारायणा इलाके में लजरी कार के शोरूम में गोलीबारी करने के आरोप में दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने दो और युवकों को गिरफ्तार किया है।

पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि विशेष प्रकोष्ठ की दक्षिण-पश्चिमी रेंज की एक टीम ने बृहस्पतिवार को महापट्ट के कोलहापुर से आशीष उर्फ भोली और अमित काला को गिरफ्तार किया, जिनकी उम्र 20 साल के आसपास है। पुलिस ने इससे पहले अरमान और अंतरराष्ट्रीय किक-बॉक्सिंग खिलाड़ी दीपक को इस वादात में शामिल होने के आरोप में गिरफ्तार किया था। अरमान को बृहस्पतिवार को बाहरी दिल्ली के माजरा डबवास में दिल्ली पुलिस के विशेष प्रकोष्ठ की एक अन्य टीम ने मुठभेड़ के बाद पकड़ा था। इस दौरान अरमान के पैर में गोली लगी थी।

सांक्षिप्त समाचार

हिंदी साहित्य भारती की कार्यकारिणी बैठक आज
नई दिल्ली। विश्व के 35 से अधिक देशों और भारत के प्रत्येक राज्य में सक्रिय संस्था हिंदी साहित्य भारती की दिल्ली प्रदेश की कार्यकारिणी बैठक आज दिल्ली विश्वविद्यालय के अतिथि गृह के सभागार में आयोजित की जाएगी। यह संस्था हिंदी भाषा और संस्कृति के प्रचार प्रसार हेतु सक्रिय है। संस्था अपने ध्येय वाक्य मानव बन जाये जग सारा, यह पावन संकल्प हमारा के साथ ध्येयनिष्ठ है। हिंदी साहित्य भारती के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष और हंसराज कॉलेज में प्राध्यापक डॉ. प्रभाशु ओझा ने कहा की संस्था का उद्देश्य अपनी मातृभाषा हेतु समर्पित प्राध्यापक, शोधार्थी और विद्यार्थियों तथा आम जन को एक मंच पर लाना है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के पूर्व शिक्षा और कृषि मंत्री प्रसिद्ध कवि एवं हिंदी साहित्य भारती के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. रवींद्र शुक्ल होंगे एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ एपीएस तथा झारखण्ड के पूर्व डीजीपी कमल नयन चौबे करेंगे।

एसजी पाइपर्स के निदेशक बने पूर्व हॉकी खिलाड़ी श्रीजेश

नई दिल्ली। एपीएल अपोलो ग्रुप का हिस्सा एसजी स्पॉर्ट्स, मीडिया और एंटरटेनमेंट (एसजीएसई) ने आने वाले हॉकी इंडिया लीग (एचआईएल) के लिए अपनी फ्रेंचाइजी एसजी पाइपर्स के लॉन्च की घोषणा की। दो बार के ओलंपिक पदक विजेता भारतीय गोलकीपर पीआर श्रीजेश को फ्रेंचाइज ने हॉकी निदेशक के रूप में नियुक्त किया है। एसजी स्पॉर्ट्स के संस्थापक रोहन गुप्ता ने कहा, हॉकी वास्तव में भारत का राष्ट्रीय खेल है और हॉकी से जुड़ना हमारे लिए बहुत सम्मान की बात है। पीआर श्रीजेश ने कहा, मैं हॉकी निदेशक के रूप में एसजी पाइपर्स का कार्यभार संभालने के लिए उत्साहित हूँ। सात साल के अंतराल के बाद अपने छठे संस्करण में वापसी करते हुए, हॉकी इंडिया लीग में आठ पुरुष और छह महिला टीमों शामिल होंगी और यह दिसंबर 2024 से फरवरी 2025 तक खेली जाएगी।



ताला ठीक करने के बहाने उड़ाई ज्वेलरी, दो धरे

नई दिल्ली। शाहदरा के कृष्णा नगर इलाके में दो चाबी बनाने वाले चोरों ने लाखों रूपये की ज्वेलरी पर हाथ साफ कर दिया था। पुलिस ने इस मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों की पहचान सतपाल, सुरजित के रूप में हुई है। सतपाल गुजरात और सुरजित आकाश नगर इंदौर का रहने वाला है। शाहदरा डिस्ट्रिक्ट डीसीपी सुरेंद्र चौधरी ने बताया पुलिस को कृष्णा नगर इलाके से लाखों रूपये की ज्वेलरी की कॉल मिली थी।

मतदान केंद्रों के लिए रवाना हुई पोलिंग पार्टियां

वोटिंग प्रक्रिया को ध्यान से पूरा करने के निर्देश, कहा, निष्पक्ष व पारदर्शी वातावरण में संपन्न कराएं मतदान

● दिव्यांग व बुजुर्ग

मतदाताओं की सुविधा के लिए टी व्हील चेयर

पानियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

विधानसभा चुनाव-24 के लिए आज जिला के चारों विधानसभा क्षेत्रों के लिए राजकीय कन्या महाविद्यालय परिसर से इवीएम मशीन और मतदान सामग्री देकर पोलिंग पार्टियों को पुलिस सुरक्षा में बूथ के लिए रवाना किया गया। जिला के 1507 मतदान केंद्रों के लिए सभी पोलिंग पार्टियां अपने-अपने बूथ पर पहुंच गई हैं। शनिवार को सुबह 7 बजे इन सभी मतदान केंद्रों पर वोटिंग शुरू हो जाएगी।

जिला निर्वाचन अधिकारी निशांत कुमार यादव ने चारों हलकों की पोलिंग पार्टियों को समझाया कि पोलिंग पार्टी व बूथ पर तैनात सुरक्षा कर्मियों को बूथ पर हो रूकना है। कोई कर्मचारी बूथ छोड़कर नहीं जाएगा। पीठासीन अधिकारी सबसे



पहले मतदान केंद्र पर जाकर अपने बूथ को सेट-अप करेंगे। सुबह 5.30 बजे मॉक पोल शुरू होगा। जिन मतदान केंद्रों पर महिला कर्मचारियों की ड्यूटी है, वे सुबह मॉक पोल शुरू होने से पहले बूथ पर पहुंच जाएं। मतदान समाप्त होने के बाद इवीएम मशीनें और आवश्यक फार्म वापस कालेज परिसर में जमा होंगे। पोलिंग पार्टी जिस बस में गई थी, उसी बस में वापस आएगी।

डीसी ने कहा कि पोलिंग पार्टियों के लिए कल रात तक भोजन की व्यवस्था कर दी गई है। कालेज परिसर में शुक्रवार सुबह आठ बजे



गुरुग्राम में पोलिंग स्टेशनों के लिए रवाना होती पोलिंग पार्टियां।

मोबाइल फोन लेकर नहीं आएगा। हर एक मतदाता की वोट आईडी या भारत निर्वाचन आयोग की ओर से मान्य 13 आईडी देखकर ही उनको वोट डालने की अनुमति दी जाए। मतदाता का नाम वोट लिस्ट में अवश्य होना चाहिए। वोटिंग के समय वोटिंग कंपार्टमेंट में केवल वोट ही अंदर जाएगा, उसके साथ अन्य कोई व्यक्ति नहीं होना चाहिए। पंडाल में एलईडी स्क्रीन पर कर्मचारियों को इवीएम तथा वीवीपैट मशीन को चलाने की ट्रेनिंग दी गई। एक पोलिंग पार्टी में पीठासीन अधिकारी के साथ एक एपीओ व दो पोलिंग ऑफिसर

शामिल हैं। पीठासीन अधिकारियों को बताया गया कि वे अपनी डायरी व फार्मों को ध्यान से भरें। पीठासीन अधिकारी नए पीएस 5 फार्म अवश्य भरकर लाएं। दिव्यांग व बुजुर्ग मतदाताओं की सुविधा के लिए पोलिंग पार्टियों को व्हील चेयर भी दी गई हैं। शाम को सैक्टर ऑफिसरों ने पोलिंग पार्टियों के बूथ पर पहुंच जाने के बारे में रिपोर्ट ली। इस अवसर पर मानेसर के एसडीएम दर्शन यादव, तहसीलदार गुलाब सिंह, गुरदेव सिंह, नायब तहसीलदार सुरेंद्र कुमार, सीएसआर ट्रस्ट के एडिशनल सीईओ गौरव सिंह इत्यादि मौजूद रहे।

मतदान केंद्र से 200 मीटर दूर लगा सकते हैं इलेक्शन बूथ

● यहाँ पर कोई भी पोस्ट, झंडे, चिन्ह या कोई अन्य प्रचार सामग्री की नहीं होगी अनुमति

पानियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा मतदान के दिन राजनीतिक दलों व चुनाव लड़ रहे उम्मीदवारों के समर्थकों द्वारा मतदान करने के लिए आने वाले मतदाताओं की सहायता करने के सम्बंध में दिशा निर्देश किए हैं। जिला निर्वाचन अधिकारी निशांत यादव ने कहा कि मतदान केंद्र परिसर से 200 मीटर की परिधि के बाहर ही ऐसे समर्थक अपना इलेक्शन बूथ लगा सकते हैं। जिसमें केवल एक मेज और दो कुर्सियां रखी जा सकती हैं। साथ ही छाया के लिए 10 फुट लम्बा व इतना ही चौड़ा टेंट लगा सकते हैं।

यहाँ पर कोई भी पोस्ट, झंडे, प्रतीक या कोई अन्य प्रचार सामग्री प्रदर्शित नहीं की जा सकेगी। किसी भी प्रकार के खाद्य पदार्थ नहीं परोसे

जाएगी। भीड़ इकट्ठा करने की अनुमति भी नहीं होगी। ऐसे बूथ स्थापित करने से पूर्व स्थानीय प्रशासन से अनुमति भी लेनी होगी। जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि मतदान केंद्र से 200 मीटर से अधिक की दूरी पर किसी उम्मीदवार का केवल एक ही इलेक्शन बूथ बनाया जा सकेगा। ऐसे केंद्र स्थापित करने की इच्छा रखने वाले प्रत्येक उम्मीदवार को लिखित रूप में पहले से ही रिटर्निंग अधिकारी को उनसे मतदान केंद्रों के नाम और क्रम संख्याएं बतानी होंगी जहाँ उनके द्वारा ऐसे बूथ स्थापित किए जाने का प्रस्ताव है। उन्हें ऐसे बूथ स्थापित करने से पहले संबंधित स्थानीय कानूनों के तहत संबंधित सरकारी अधिकारियों या स्थानीय अधिकारियों जैसे निगमों, नगर पालिका, जिला परिषद, पंचायत समितियों आदि से लिखित अनुमति भी लेनी होगी। ऐसी लिखित अनुमति बूथ पर तैनात व्यक्तियों के पास होनी चाहिए ताकि वे मांगे जाने पर संबंधित चुनाव व पुलिस अधिकारियों के समक्ष इसे प्रस्तुत कर सकें।

पटौदी, गुड़गांव और बादशाहपुर में सक्रिय रहेगा वोट इन व्यू एप

गुरुग्राम। विधानसभा चुनाव में सोहना हलके को छोड़कर गुड़गांव, बादशाहपुर और पटौदी विधानसभा क्षेत्र के मतदान केंद्रों पर वोट इन व्यू एप की सुविधा उपलब्ध रहेगी। डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी निशांत कुमार यादव ने बताया कि इस एप को अपने मोबाइल फोन में डाउनलोड कर मतदाता यह जान सकते हैं कि बूथ पर कतार में अभी कितने वोट खड़े हुए हैं। जिससे कि वह अपनी सुविधा के अनुसार भीड़ कम होने पर वोट डालने के लिए मतदान केंद्र पर जा सके। उन्होंने बताया कि इस एप को डाउनलोड करने के बाद मतदाता अपना नाम, बूथ परिया तथा वोट आईडी नंबर अपलोड कर एक ओटीपी प्राप्त करेंगे। ओटीपी डालने के बाद वह एप के माध्यम से अपने बूथ के बीएलओ से जुड़ जाएंगे। बीएलओ हर एक या आधे घंटे बाद बूथ पर मौजूद लोगों की संख्या को एप पर अपलोड करेंगे। उन्होंने कहा कि इसी प्रकार वोट टर्न आउट एप पर मतदाता यह जान सकेंगे कि अभी तक कितनी प्रतिशत वोटिंग हो चुकी है।

‘गुरुग्राम की तरक्की के लिए भाजपा को वोट दें’

● भाजपा जिलाध्यक्ष बोले, चारों विधानसभाओं में खिलने जा रहा है कमल: कमल यादव

पानियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

भाजपा की नीतियां हर वर्ग के लोगों को पसंद आ रही हैं। हर रोज लोग भाजपा में शामिल हो रहे हैं। चुनाव से एक दिन पहले जिला काराधान बार के कई अधिवक्ताओं ने गुरुकमल कार्यालय पहुंचकर भाजपा में आस्था जताई। भाजपा जिला अध्यक्ष कमल यादव ने सभी अधिवक्ताओं का स्वागत किया और भाजपा का पटक पहनाकर पार्टी में शामिल किया।

इस मौके पर कमल यादव ने



भाजपा में शामिल हुए वक्ताओं के साथ जिला अध्यक्ष कमल यादव।

लोगों से प्रदेश व शहर की तरक्की के लिए भाजपा को वोट देने की अपील की। कमल यादव ने कहा कि जनता जनार्दन के आशीर्वाद से भाजपा की सरकार बन रही है और गुरुग्राम की चारों विधानसभाओं में कमल खिल रहा है। भाजपा जिला मीडिया प्रमुख पवन यादव ने बताया कि शुक्रवार को जिला में भाजपा और

मतबूत हुई है। जिला काराधान बार के अध्यक्ष राजीव वत्स, महासचिव धीरज कौशिक, संयुक्त सचिव अशोक खटाना, कोषाध्यक्ष एडवोकेट नरेंद्र सिंह, नरेंद्र कुमार, रवि सैनी, हिमांशु सेनी, अभिनव शर्मा और रितिक प्रकाश सहित कई लोगों ने पार्टी कार्यालय में पहुंचकर भाजपा का दामन थामा।

फरीदाबाद में बनाए गए हैं कुल 1650 पोलिंग बूथ

जिला निर्वाचन अधिकारी विक्रम सिंह ने बताया कि विधानसभा आम चुनाव-2024 के लिए जिला में कुल 1650 बूथ बनाए गए हैं। मतदाताओं की सुविधा के लिए हाईराइज सोसायटी व ग्रुप हाऊसिंग सोसायटी में 57 मतदान केंद्र स्थापित किए गए हैं। जिला के 17 लाख 94 हजार 552 मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग कर विधानसभा चुनाव में भागीदारी निभाएंगे। जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने व महिला मतदाताओं को बूथचढ़कर मतदान के प्रति प्रेरित करने के उद्देश्य से जिला की विधानसभाओं में पिंग पोलिंग बूथ एवं सखी बूथ स्थापित किया गया है। इन सखी बूथ पर पोलिंग पार्टियों में महिलाएं अधिकारी एवं कर्मचारी चुनाव प्रक्रिया संपन्न करवाएंगी।

माइक्रो ऑब्जर्वर को दिया गया अंतिम चरण का प्रशिक्षण

● रिटर्निंग अधिकारी ने कहा, मॉक पोल से लेकर मतदान समाप्ति तक पूरी प्रक्रिया का अवलोकन करें ऑब्जर्वर

पानियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

विधानसभा आम चुनाव में नियुक्त माइक्रो ऑब्जर्वर का अंतिम प्रशिक्षण गुरुवार को गुड़गांव विधानसभा के रिटर्निंग अधिकारी एवं एसडीएम रविंद्र कुमार द्वारा संपन्न कराया गया। सिविल लाइन्स स्थित स्वतंत्रता सेनानी जिला परिषद हॉल में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में एसडीएम रविंद्र कुमार ने माइक्रो ऑब्जर्वर द्वारा भरी जाने वाली सभी



माइक्रोऑब्जर्वर को अंतिम चरण का प्रशिक्षण देते रिटर्निंग अधिकारी रविंद्र कुमार।

प्रमुख बिंदुओं के चेक लिस्ट पर चर्चा करते हुए कहा कि आप सभी को मॉक पोल से लेकर मतदान समाप्ति तक की पूरी प्रक्रिया का अवलोकन करना है। रिटर्निंग अधिकारी रविंद्र कुमार ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में सभी माइक्रो

मतदान केंद्र पर निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित समय पर पहुंच जाना है। मॉक पोल सहित मतदान की पूरी प्रक्रिया का सूक्ष्म अवलोकन करना है। मॉक पोल से लेकर वास्तविक मतदान प्रारंभ के के दौरान इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन के कंट्रोल यूनिट की सीलिंग पर भी नजर रखनी है। उन्होंने कहा कि सभी माइक्रो ऑब्जर्वर को पोलिंग एजेंट पर भी नजर रखनी है कि मॉक पोल के दौरान वह उपस्थित हुए या नहीं। इसके साथ ही प्रत्येक घंटे में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन और मतदाता रजिस्टर से आंकड़े का मिलान करते रहेंगे, ताकि मतदान की स्थिति स्पष्ट होती रहे। दोपहर 3 बजे से लेकर 5 बजे तक कतार में कितने मतदाता उपस्थित थे, इसकी भी रिपोर्ट देनी है।

आज रहेगा पेड हॉलिडे: डीसी

● सभी सीटों के लिए आज होगा मतदान

पानियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

भारत निर्वाचन आयोग की ओर से शनिवार, 5 अक्टूबर को होने वाले विधानसभा आम चुनाव के मद्देनजर राज्य सरकार के अधीनस्थ सभी विभागों के कार्यालयों, बोर्ड, कॉर्पोरेशन और शिक्षण संस्थानों में पेड हॉलिडे दे रहेगा। साथ ही हरियाणा प्रदेश की सीमा से लगते दिल्ली व यूपी राज्य में काम करने वाले मतदाताओं का भी पेड हॉलिडे रहेगा। यह जानकारी जिला निर्वाचन अधिकारी विक्रम सिंह ने दी। सिंह ने बताया कि जन प्रतिनिधि

जनता के आशीर्वाद से बदल देंगे गुरुग्राम की तस्वीर: गोयल

● दिए गए वोट पर मतदाताओं को हमेशा महसूस कराएंगे गौरवान्वित: नवीन

पानियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

गुड़गांव विधानसभा क्षेत्र से 36 बिरादरी के प्रत्याशी नवीन गोयल ने कहा है कि आपको वोट डालते समय यह ध्यान रहे कि गुरुग्राम की बेहतरी, विकास, गुरुग्राम की समस्याओं का समाधान, जनता का सम्मान किन हाथों में सुरक्षित है। आप जब वोट डालें तो आपकी नजरें इवीएम पर 12वें नंबर पर कांच के गिलास पर हों। मैं गुरुग्राम को देवतुल्य जनता से



निर्दलीय प्रत्याशी नवीन गोयल।

यह वायदा करता हूँ कि आपके द्वारा कांच के गिलास पर दिए गए वोट को शर्मिंदा नहीं होने दूंगा। सदा गौरवान्वित महसूस कराऊंगा।

नवीन गोयल ने जनता से अप्रह किया है कि बिना किसी सरकारी तंत्र, बिना किसी सरकारी पद और बिना किसी लोभ-लालच के मैंने पिछले 6 साल से आपकी सेवा की है। मैं मानता हूँ कि मेरी ओर से सेवा में कभी कोई कमी भी रही होगी। मेरा हमेशा यही प्रयास रहा है कि मैं कभी किसी का दिल ना दुखाऊँ। कभी किसी का बुरा ना करूँ। मेरे मन, वचन, कर्म से हर किसी का भला ही हो। कभी किसी का बुरा ना सोचा ना किया। हमेशा अच्छा ही करने का प्रयास किया। दीन-दुखियों को मदद करना हमें विरासत में मिला है। माता-पिता ने यही सिखाया कि हमारे हाथ से अगर किसी के लिए कुछ हो तो वह अच्छा ही हो। हमने अपने हर काम को यही सोचकर किया कि

हमारे काम से समाज के अंतिम व्यक्ति को भी भलाई जुड़ी हो। हमने गुरुग्राम के बच्चे का भी सम्मान किया और उम्रदराज व्यक्ति का भी आशीर्वाद लिया। माताओं-बहनों के सशक्तिकरण के लिए काम किया। युवाओं के बेहतर भविष्य के लिए काम किया। गरीबों को इस लायक बनाने का काम किया कि वे दो समय की रोटी कमा सकें। यह सब करने वाले हम कोई नहीं हैं। इसमें आप सबका आशीर्वाद, प्रार्थना, दुआ शामिल है। गुरुग्राम ने हमें बहुत कुछ दिया है। इसलिए हमने गुरुग्राम को कुछ देने की सोच के साथ समाज सेवा में कदम आगे बढ़ाए। अब जीवन का यही लक्ष्य है कि गुरुग्राम को देवतुल्य जनता के आशीर्वाद से बेहतर से भी बेहतर बनाएँ।

संक्षिप्त समाचार



देर रात फ्लैग मार्च करती पुलिस।

व्यवधान डालने वालों पर होगी कड़ी कार्रवाई: डीसी

फरीदाबाद। डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी विक्रम सिंह ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के नियमानुसार मतदान के 48 घंटे पहले सभी शराब के ठेके बंद रहेंगे और किसी भी होटल या गैस्ट हाउस में किसी दूसरे प्रदेश का व्यक्ति अपने प्रत्याशी के सहयोग के लिए नहीं रुक सकता। निर्वाचन आयोग के निर्देशों की अनुपालना प्रभावी रूप से सुनिश्चित करते हुए हर संदिग्ध व्यक्ति पर प्रशासन की पैन नजर है। इसी के मद्देनजर देर रात्रि जिला निर्वाचन अधिकारी एवं डीसी विक्रम सिंह और पुलिस आयुक्त ओपी नरवाल ने जिला की सभी विधानसभाओं के अंतर्गत आने वाले होटल, रेस्टोरेंट, धर्मशाला तथाशराब के ठेके चेक करने के संबंध में अहम दिशा निर्देश दिए और उक्त स्थानों पर चेक किया। डीसी विक्रम सिंह ने कहा कि फ्लैग मार्च का मुख्य उद्देश्य जिला में कानून-व्यवस्था बनाए रखना और लोगों में सुरक्षा की भावना पैदाकरना है। उन्होंने कहा कि प्रशासन पूरी तरह से सतर्क है और चुनाव प्रक्रिया के दौरान किसी भी प्रकार की अव्यवस्था या गड़बड़ा को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि भयमूक वातावरण में मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करें और लोकतंत्र के इस महापर्व में आहुति डालें। उन्होंने कहा कि निष्पक्ष, निर्भीक और शांतिपूर्ण तरीके से चुनाव संपन्न करने के लिए जिला प्रशासन अलर्ट मोड पर है। उन्होंने लोगों से भी अपील की कि वे चुनावी नियमों का पालन करें और किसी भी संदिग्ध गतिविधि को सूचना तुरंत संबंधित आरओ व पुलिस प्रशासन को दें।

वोटर हेल्पलाइन बनेगी मतदाताओं की सहयोगी

फरीदाबाद। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं डीसी विक्रम सिंह ने कहा कि शनिवार, 5 अक्टूबर को जिला में होने वाले हरियाणा विधानसभा के आम चुनाव के लिए प्रशासन पूरी सक्रियता के साथ कार्य कर रहा है। विभिन्न एप के माध्यम से चुनावी प्रक्रिया के बारे में मतदाता घर बैठकर जानकारी हासिल कर सकते हैं। जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि मतदाताओं की सुविधाओं के मद्देनजर भारत निर्वाचन आयोग की ओर से मोबाइल एप जागरूकता का सशक्त माध्यम बन रहे हैं। मतदाताओं को प्ले स्टोर में जाकर वोटर हेल्पलाइन एप को डाउनलोड करना होगा। इस एप के माध्यम से मतदाता अपने वोट रिलफ डाउनलोड कर सकते हैं, जिसमें उनका नाम, मतदान केंद्र, और अन्य जानकारी होती है। चुनाव या वोटर आईडी से संबंधित किसी भी समस्या के लिए शिक्षावत् दर्ज करना और उसकी स्थिति देखना। साथ ही चुनाव की तारीखें, उम्मीदवारों की सूची, चुनाव परिणाम आदि की जानकारी भी घर बैठे प्राप्त की जा सकती है। डीसी विक्रम सिंह ने कहा कि इस एप के माध्यम से आप अपने पोलिंग बूथ की जानकारी और अधिकारियों के नंबर भी प्राप्त कर सकते हैं। प्रदेश में हो रहे चुनाव में किसी भी उम्मीदवार के बारे में आपको जानकारी चाहिए तो आप इस एप के माध्यम से पता कर सकते हैं। अगर मतदाता की वोटर आईडी कहीं गुम हो गई है या फिर वह वोटर आईडी की डिजिटल कॉपी सहेज कर रखना चाहता है, तो वोटर हेल्पलाइन एप या फिर चुनाव आयोग की वेबसाइट से अपना वोटर आईडी आसानी से मोबाइल या कंप्यूटर पर डाउनलोड कर सकते हैं। डिजिटल वोटर आईडी-ईपीआईसी को डिजिटलॉकर में भी अपलोड जा सकता है। इसके अलावा इसे प्रिंट भी कराया जा सकता है।

मुस्कुराहट जीवन की सबसे बड़ी सुन्दरता है: आशा दीदी

● सुसंस्कृत मां अपने बच्चे को ही नहीं, राष्ट्र को भी श्रेष्ठ संस्कार प्रदान करती है

पानियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

ब्रह्माकुमारीज के तीन दिवसीय महिला सम्मेलन का समापन



महिला सम्मेलन के समापन सत्र में उपस्थित महिलाएं एवं अन्य।

भोजन को शुद्ध बहुत जरूरी है। डॉ. मंजु ने कहा कि सम्बन्धों में देने की भावना ही मधुरता लाती है। हम जो कुछ भी दूसरों को देते हैं, वही प्राप्त करते हैं। उन्होंने कहा कि श्रेष्ठ मूल्य ही जीवन को महान बनाते हैं। दिव्य गुणों के द्वारा ही स्वर्णिम संसार की निर्माण हो सकता है। प्रोफाउंड भारती एजुकेशनल एंड वेल्फेयर सोसाइटी के निदेशक सीएमए अनिरुद्ध गुप्ता ने कहा मातृ शक्ति के बगैर हमारा कोई अस्तित्व नहीं है। मां बच्चे की प्रथम गुरु होती हैं। जितने भी महापुरुष हुए हैं, उनके पीछे मां की हाथ हैं। श्रेष्ठ संस्कारों द्वारा मातृ शक्ति अपने बच्चों को ही नहीं बल्कि राष्ट्र को भी श्रेष्ठ संस्कार प्रदान करती है। दिल्ली, शक्ति

नगर से पधारी वरिष्ठ राजयोगी शिक्षिका बीके लता ने कहा कि नारी अपनी शक्ति को भूलने के कारण स्वयं को कमजोर समझने लगी। उन्होंने कहा कि आज शारीरिक सुंदरता के बजाय आंतरिक सुंदरता को निखारने की जरूरत है। कार्यक्रम में व् यू बेल्स स्कूल की फाउंडर एंड डायरेक्टर सुमन गुलाटी एवं डायरेक्टर, कॉर्पोरेट अफेयर्स महर्षि यूनियर्सिटी, गाजियाबाद के अध्यक्ष डॉ. रंदेश गुप्ता ने भी अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की। राजस्थान से आई सुप्रसिद्ध कविग्रणी डॉ. कविता किरण ने अपनी खूबसूरत रचना से नारी शक्ति को बहुत सुंदर चित्रण किया। तीन

दिवसीय कार्यक्रम में संस्कृति की संरक्षक महिलाएं विषय पर कार्यशाला के साथ-साथ गहन चिंतन भी हुआ। आध्यात्मिक शक्ति द्वारा नारी सशक्तिकरण पर अनुभवी वक्ताओं ने अपने सुझाव दिए। मतदान में राजयोग के अनेक सत्र आयोजित हुए। जिसमें आत्मा, परमात्मा और सृष्टि चक्र से सम्बन्धित गूढ़ रहस्यों की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में आई महिलाओं ने कहा कि इस प्रकार के आध्यात्मिक वातावरण में आने से उन्हें एक नई ऊर्जा मिली है। बीके सुनैना ने नाम मतदाता सूची में है, लेकिन उसके पास मतदाता पहचान पत्र नहीं है तो वह भारत निर्वाचन आयोग द्वारा

हरियाणा में 29 हजार, 462 पुलिसकर्मी तैनात

21 हजार होमगार्ड व 10 हजार एसपीओ ने भी संभाला मार्चा, सोशल मीडिया पर अफवाह फैलाने वालों पर रहेगी मीडिया पर अफवाह फैलाने वालों पर रहेगी

● **आचार संहिता लागू होने के बाद पकड़ी 51 कचेड़ की नकदी व सामान**
पार्यनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

हरियाणा में 5 अक्टूबर को होने वाले विधानसभा चुनाव के मद्देनजर हरियाणा पुलिस ने प्रदेश में सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए हैं। विधानसभा चुनाव के दौरान किसी प्रकार की अप्रिय घटना से निपटने के लिए प्रदेश के सभी 90 विधानसभा हलकों में 29 हजार 462 पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया है।

हरियाणा पुलिस महानिदेशक शत्रुघ्न कपूर ने शुक्रवार को यह जानकारी देते हुए बताया कि चुनाव ड्यूटी में पुलिस कर्मियों के अलावा

‘फर्जी वीडियो की मॉनिटरिंग और त्वरित कार्रवाई’

पुलिस महानिदेशक ने बताया कि मतदान के दिन कई तत्व मतदान केन्द्र की फर्जी वीडियो आदि सोशल मीडिया पर वायरल कर देते हैं जिससे कानून व्यवस्था बाधित होती है। सोशल मीडिया पर इस प्रकार की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए हरियाणा पुलिस की टीमें अलग-2 स्तर पर मॉनिटरिंग करते हुए सक्रियता से कार्य करेगी और फर्जी वीडियो डालने वालों पर कड़ी कार्रवाई होगी। हरियाणा में 16 अगस्त से 4 अक्टूबर के बीच अर्थात् आदर्श आचार संहिता की अवधि के दौरान प्रदेश में लगभग 72 करोड़ रुपये की राशि के नशीले पदार्थ, कैश, शराब तथा बहुमूल्य धातु आदि को जब्त किया गया है जिसमें से लगभग 51 करोड़ रुपये की राशि के नशीले पदार्थ, कैश, शराब तथा बहुमूल्य धातु आदि को हरियाणा पुलिस द्वारा जब्त किया गया है। इसके अलावा 22 करोड़ रुपये से अधिक की नकदी पकड़ी गई है। इसी प्रकार लगभग 12 करोड़ रुपये की शराब बरामद की गई है।

21 हजार 196 होमगार्ड के जवान तथा 10 हजार 403 एसपीओ की तैनाती की गई है। मतदान प्रक्रिया के दौरान प्रदेश के चप्पे-चप्पे पर पुलिस की कड़ी नजर रहेगी ताकि लोग

निर्भय होकर अपने मतदाधिकार का प्रयोग कर सकें।

कपूर ने बताया कि चुनाव के दौरान कानून व्यवस्था बनाए रखना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है ताकि

प्रदेश में 1080 असलहा धारकों के लाइसेंस रद्द

लाइसेंस हथियारों संबंधी जानकारी देते हुए कपूर ने बताया कि प्रदेश में कुल 1 लाख 32225 आर्मड लाइसेंस जारी किए गए हैं जिनमें से 1 लाख 21 हजार 213 लाइसेंस हथियारों को चुनावों के चलते पुलिस थानों में जमा करवाया गया है। आदर्श आचार संहिता की उल्लंघना के चलते प्रदेश में अब तक 54 लाइसेंस हथियारों को जब्त किया जा चुका है जबकि 1080 हथियारों के लाइसेंस रद्द किए जा चुके हैं।

लोग बिना डरे निष्पक्ष तरीके से मतदान कर सकें। इस दौरान कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए 191

अंतरराज्यीय तथा 201 प्रदेश के भीतर नाके लगाए गए हैं। प्रदेश में मतदान के लिए 10 हजार 495 स्थानों पर कुल 20 हजार 629 मतदान केन्द्र स्थापित किए गए हैं। इसके अलावा, 3616 मतदान केन्द्रों को संवेदनशील (क्रिटिकल) माना गया है तथा 145 मतदान केन्द्रों को वलन्टेबल माना गया है। इन मतदान केन्द्रों पर अतिरिक्त पुलिस बल तैनात रहेगा।

इसके साथ ही प्रदेश में 516 फ्लाइंग स्क्वाडर टीम, 469 स्पेटिक सर्विलांस टीम तथा 32 क्विक रिस्पॉन्स टीम बनाई गई है। प्रदेश में कानून व्यवस्था सुनिश्चित करने तथा आदर्श आचार संहिता की पालना सुनिश्चित करने को लेकर 1156 पेट्रोलिंग पार्टी भी लगाई गई है जो दिन रात गश्त कर रही है।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने लाडवा हलके के मतदाताओं से की मतदान की अपील

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि भाजपा सरकार ने युवाओं को बिना खर्ची बिना पचाई के सरकारी नौकरियां देने का काम किया है। उन्होंने कहा कि तीसरी बार भाजपा सरकार आने पर वह 8 अक्टूबर को वह शपथ बाद में लेंगे पहले 25 हजार युवाओं को नियुक्ति पत्र देंगे। इसलिए देश व प्रदेश के हित के लिए आने वाली 5 अक्टूबर को कमल के निशान के सामने वाला बटन दबाकर भाजपा को विजयी बनाएं। भाजपा सरकार को कहती है वह



करके दिखाती है। संकल्प पत्र को लायां लोगों के सुझाव से ही तैयार किया गया है। जिसमें सभी महिलाओं को लाडो लक्ष्मी योजना के तहत प्रतिमाह 2,100 रुपये, आईएमटी खरखौटा की तर्ज पर 10 औद्योगिक शहरों का निर्माण। प्रति शहर 50,000 स्थानीय युवाओं को नौकरी देने के लिए उद्यमियों को विशेष प्रोत्साहन। विरायु-आयुष्मान योजना के तहत प्रत्येक परिवार को 10 लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज वार्ड परिवार को 70 वर्ष से अधिक प्रत्येक बुजुर्ग को

अलग से 5 लाख रुपये तक के मुफ्त इलाज की सुविधा, 24 फसलों की घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर खरीद, 2 लाख युवाओं को बिना पचाई बिना खर्ची पक्की सरकारी नौकरी, 5 लाख युवाओं के लिए अन्य रोजगार के अवसर एवं नेशनल अप्रेंटिसशिप प्रमोशन योजना से मासिक स्ट्राइड, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में 5 लाख आवास सहित 20 नई योजनाओं को आने वाली 8 अक्टूबर के बाद धरातल पर उतारा जाएगा। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने अपील करते हुए कहा कि यह चुनाव केवल सरकार चुनने का नहीं बल्कि लाडवा क्षेत्र के विकास और भविष्य को नई दिशा देने का चुनाव है। हर मतदाता का एक-एक वोट बच्चों की बेहतर शिक्षा, महिलाओं की सुरक्षा और युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसरों को सुनिश्चित करेगा।

कांग्रेस को बड़ा जनादेश दें मतदाता: तंवर

● **पूर्व सांसद ने हरियाणा के दलित और ओबीसी मतदाताओं से की समर्थन की अपील**
पार्यनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

पूर्व सांसद अशोक तंवर शुक्रवार को कांग्रेस में औपचारिक रूप से शामिल हो गए और हरियाणा के दलित एवं अन्य पिछड़े वर्गों के मतदाताओं से आह्वान किया कि वे कांग्रेस को बड़ा जनादेश दें ताकि यह प्रदेश नंबर एक बन सके। तंवर बृहस्पतिवार को लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष रहलु गांधी के साथ महेंद्रगढ़ में चुनावी मंच पर नजर आए थे। इससे कुछ घंटे पहले ही उन्होंने भाजपा के उम्मीदवार के लिए प्रचार किया था।

पार्टी के कोषाध्यक्ष अजय माकन ने कांग्रेस मुख्यालय में तंवर का स्वागत किया और उन्हें संविधान की एक प्रति भी सौंपी। माकन ने तंवर का पार्टी में औपचारिक रूप से स्वागत



करते हुए कहा, हम सभी ने संविधान की रक्षा करने का प्रण लिया है। हम देश के संविधान और बाबासाहेब आंबेडकर के सिद्धांतों की रक्षा के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं। हमें आशा है कि अशोक तंवर के आने से इन प्रयासों को और बल मिलेगा। तंवर ने कहा, मेरे राजनीतिक जीवन को शुरुआत कांग्रेस पार्टी से हुई। कुछ समय के लिए मैं भाजपा में शामिल हो गया था, लेकिन वहां देश के संविधान और बाबासाहेब के प्रति कोई आस्था नहीं है। उन्होंने कहा कि भाजपा लोगों को बांटने का काम करती है, लेकिन रहलु गांधी ने यात्रा निकालकर लोगों को एक करने का

काम किया है। पूर्व सांसद ने कहा, आज मैं फिर देश जोड़ने और संविधान बचाने की लड़ाई में रहलु गांधी के साथ खड़ा हूँ। तंवर ने कहा, मैं हरियाणा के दलितों, वंचितों और पिछड़ों से अनुरोध करता हूँ कि हरियाणा को फिर नंबर एक बनाने के लिए यहां कांग्रेस की सरकार बनाएं। मेरा आह्वान है कि लोग कांग्रेस को बड़ा जनादेश दें जिसका संदेश पूरे देश में जाए। हरियाणा में विधानसभा चुनाव के लिए मतदान से दो दिन पहले भाजपा को झटका देने हुए अशोक तंवर बृहस्पतिवार को महेंद्रगढ़ जिले में रहलु गांधी की रैली में कांग्रेस में शामिल हो गए थे।

कुवि के प्रो. दिनेश कुमार तथा प्रो. संजीव अरोड़ा ने संभाला पदभार

कुरुक्षेत्र। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के जियोफिजिक्स विभाग के प्रोफेसर दिनेश कुमार ने विश्वविद्यालय के डीन एकेडमिक अफेयर्स का पदभार विधिवत रूप से संभाला। इस अवसर पर प्रो. दिनेश कुमार ने कुवि कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा का आभार व धन्यवाद करते हुए कहा कि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय को शैक्षणिक, शोध एवं अनुसंधान सहित सभी क्षेत्रों में बुलाईयों पर ले जाना उनकी सर्वप्रथम प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि शिक्षण एवं अनुसंधान कुरुक्षेत्र की विशिष्ट पहचान रही है इसलिए केयू को वैश्विक पटल पर अग्रणी विश्वविद्यालयों में से एक बनाने पर जोर दिया जाएगा। इसके लिए कुवि के सभी शिक्षक संघर्ष सहस्त्र मिलकर कार्य करें। वहीं रसायन विभाग के प्रो. संजीव अरोड़ा ने डीन फैकल्टी ऑफ साइंसिज का पदभार संभालते हुए कहा कि विज्ञान संकाय से संबंधित सभी संकायों आगे बढ़ाना उनकी प्राथमिकता होगी।

युवाओं के भविष्य से खेल रही कांग्रेस: अमित शाह

पार्यनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

हरियाणा विधानसभा चुनाव की वोटिंग से एक दिन पहले केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने 5600 करोड़ रुपये के ड्रा केस को लेकर बड़ा बयान दिया है। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को अपने सोशल मीडिया अकाउंट 'एक्स' पर लिखा कि एक ओर जहां मोदी सरकार नशामुक्त भारत के लिए जीरो टॉलरेंस की नीति अपना रही है, वहीं उरर भारत से पकड़ी गई ड्रस को 5,600 करोड़ रुपये की खेप में कांग्रेस के एक प्रमुख व्यक्ति की सलिलता बेहद खतरनाक और शर्मनाक है।

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि कांग्रेस के शासन में ड्रस से पंजाब, हरियाणा, जोर सहज उतर भारत में युवाओं का जो साम्राज्य, वह सभी ने देखा है। मोदी सरकार

● **5600 करोड़ के ड्रा केस पर गृह मंत्री बोले, पीपैड्र हड़्ड की सलिपता खतरनाक व शर्मनाक**

● **इरादों को पूरा नहीं होने देगी मोदी सरकार**

युवाओं को खेल, शिक्षा और इनामियों की ओर ले जा रही है, तो वहीं कांग्रेस उन्हें ड्रस की अंधेरी दुनिया में ले जाना चाहती है। यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है कि कांग्रेस के नेता अपने राजनीतिक रसूख का उपयोग कर युवाओं को ड्रस के दलदल में फंसाने का प्रयास कर रहे हैं। लेकिन मोदी सरकार ने दृढ़ संकल्प लिया है



कि कांग्रेस पार्टी के इन नापाक मंसूबों को कभी पूरा नहीं होने दिया जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ड्रस के कारोबारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने के लिए प्रतिबद्ध है, चाहे वह कितनी भी बड़ी राजनीतिक शक्ति रखते हों। शाह ने कहा कि मोदी सरकार का लक्ष्य 'नशामुक्त भारत' है, और हम इस दिशा में हर संभव कदम उठा रहे हैं। हमारे युवाओं का भविष्य सुरक्षित और उज्वल बना रहे।

हम अपील करते हैं कि देश की जनता इस गंभीर मामले पर जागरूक रहे और अपने युवाओं को नशे से दूर रखने के लिए सरकार का साथ दें। मोदी सरकार इस दिशा में दृढ़ संकल्पित है और नशामुक्त भारत बनाने के लिए कोई भी कसर खानी नहीं छोड़ेगी। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सैनी ने केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की पोस्ट को 'एक्स' पर रिपोस्ट करते हुए कहा है कि 5,600 करोड़ रुपये के ड्रस रैकेट में कांग्रेस पार्टी और हरियाणा के एक राजनीतिक परिवार द्वारा संरक्षण के सबूत बेहद खतरनाक हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि राजनीतिक रसूख को बदलते ये परिवार क्या ड्रा कारोबारियों को बचा रहा था? या फिर इतने बड़े ड्रा रैकेट से आने वाला अकूत धन हरियाणा के चुनाव में इस्तेमाल हो रहा है? ये सवाल बेहद जरूरी हैं।

हरियाणा में नशा होगा दूर, रोजगार मिलेगा भरपूर: राहुल

● **लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष ने प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनने की जताई उम्मीद**
पार्यनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने शुक्रवार को कहा कि हरियाणा की सत्ता में आने के बाद कांग्रेस रोजगार सृजन पर जोर देगी तथा राज्य को नशामुक्त किया जाएगा जिससे हर परिवार खुशहाल होगा। उन्होंने यह आरोप भी लगाया कि भाजपा द्वारा फैलाई गई बेरोजगारी की बीमारी ने हरियाणा को गहरा संकट में डाल दिया है। हरियाणा की कुछ बहनों ने विजय संकल्प यात्रा के दौरान आग्रह किया, बहुत जल्द से घर की रोटी खिलाई और साथ ही प्रदेश की चार्ले समर्याएं समझाई। उन्होंने दावा किया कि आज भारत में सबसे अधिक बेरोजगारी हरियाणा में है और इसका कारण यह है कि भाजपा ने एक दरनाक में प्रदेश के युवाओं को रोजगार देने वाली हर प्रणाली की रूढ़ तोड़ दी है। राहुल गांधी ने कहा कि

हरियाणा की सभी सीट पर आज मतदान होगा और मतगणना आठ अक्टूबर को होगी। राहुल गांधी ने हरियाणा में हाल ही में निकली गई अपनी विजय संकल्प यात्रा के दौरान कुछ महिलाओं से हुई मुलाकात का वीडियो एक्स पर साझा किया। उन्होंने कहा कि भाजपा की फैलाई हुई बेरोजगारी की बीमारी ने हरियाणा की जड़ों, युवाओं के भविष्य और प्रदेश की सुरक्षा को गहरे संकट में डाल दिया है। हरियाणा की कुछ बहनों ने विजय संकल्प यात्रा के दौरान आग्रह किया, बहुत जल्द से घर की रोटी खिलाई और साथ ही प्रदेश की चार्ले समर्याएं समझाई। उन्होंने दावा किया कि आज भारत में सबसे अधिक बेरोजगारी हरियाणा में है और इसका कारण यह है कि भाजपा ने एक दरनाक में प्रदेश के युवाओं को रोजगार देने वाली हर प्रणाली की रूढ़ तोड़ दी है। राहुल गांधी ने कहा कि

भाजपा ने गलत जीएसटी और नोटबंदी से छोटे व्यापारों की कमर तोड़ दी। अग्निपथ योजना के जरिए, सेना की तैयारी करने वाले युवाओं का हौसला तोड़ा। तीन काले कानूनों से कृषि व्यापार करने वालों की हिम्मत तोड़ी। खिलाड़ियों से समर्थन छीनकर उनका सपना तोड़ा। परिवार पहचान पत्र से सरकारी भत्तों रोककर परिवारों को तोड़ा। उन्होंने कहा कि इसी का नतीजा है कि नशे की गिरफ्त में युवा हुनर बर्बाद हो रहा है, निरशा नौजवान अपराध की राह पकड़ रहे हैं और 'डंकी' जैसे खतरों के सफर से परिवार तबाह हो रहे हैं। अमेरिका जाने के लिए पर्याप्त दस्तावेजों के अभाव में लोग जब तुर्किए और कजाखस्तान के जागत-साथ दक्षिण अमेरिकी देशों तथा पनामा के जंगलों से होकर खतरनाक रास्ते से यात्रा करते हैं तो इसे डंकी रूट कहा जाता है।

भाजपा ने गलत जीएसटी और नोटबंदी से छोटे व्यापारों की कमर तोड़ दी। अग्निपथ योजना के जरिए, सेना की तैयारी करने वाले युवाओं का हौसला तोड़ा। तीन काले कानूनों से कृषि व्यापार करने वालों की हिम्मत तोड़ी। खिलाड़ियों से समर्थन छीनकर उनका सपना तोड़ा। परिवार पहचान पत्र से सरकारी भत्तों रोककर परिवारों को तोड़ा। उन्होंने कहा कि इसी का नतीजा है कि नशे की गिरफ्त में युवा हुनर बर्बाद हो रहा है, निरशा नौजवान अपराध की राह पकड़ रहे हैं और 'डंकी' जैसे खतरों के सफर से परिवार तबाह हो रहे हैं। अमेरिका जाने के लिए पर्याप्त दस्तावेजों के अभाव में लोग जब तुर्किए और कजाखस्तान के जागत-साथ दक्षिण अमेरिकी देशों तथा पनामा के जंगलों से होकर खतरनाक रास्ते से यात्रा करते हैं तो इसे डंकी रूट कहा जाता है।

लोकतंत्र का भाग्य विधाता है मतदाता: सुधा

कुरुक्षेत्र। भाजपा की कल्याणकारी नीतियों व जनता के आशीर्वाद से हम तीसरी बार राज्य में सरकार बनाने जा रहे हैं। यह कहना है पार्टी के थानेसर प्रत्याशी व राज्य मंत्री सुभाष सुधा का। सुभाष सुधा वीरवार को चुनाव से पहले कार्यकर्ताओं की एक मीटिंग को संबोधित कर रहे थे। मीटिंग में उन्होंने कार्यकर्ताओं से चुनाव की तैयारियों को लेकर समीक्षा की और कार्यकर्ताओं से कहा कि हम सभी को 100 प्रतिशत मतदान करने का रिस्कॉई बनाया है ताकि मजबूत राष्ट्र व मजबूत लोकतंत्र बनाया जा सके। उन्होंने कहा कि मतदाताओं को भी अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए 5 अक्टूबर को बिना किसी डर, प्रलोभन लालच धर्म, जाति व विशेष वर्ग से ऊपर उठकर भाजपा के पक्ष में ज्यादा से ज्यादा वोटिंग करनी है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से कहा कि वह मतदाताओं को समझाए वह बताएं कि आपको यह निर्णय करना है कि बिना पचाई खर्ची और मेहनत के बल पर नौकरी देने वाली सरकार चाहिए या पैसे देकर और प्लाट जमीन बेचकर। उन्होंने यह भी कहा कि पहाड़ के क्षेत्र में स्वास्थ्य के क्षेत्र में बुनियादी सुविधाओं के क्षेत्र में व विकास कार्यों को ध्यान में रखते हुए भाजपा के पक्ष में मतदान करें। सुभाष सुधा ने कहा कि मतदान के दिन यह ना समझें की यह केवल छुट्टी का दिन है बल्कि यह हमारे लोकतंत्र की मजबूती की नींव और पांच साल राज्य का विकास करने वाली सरकार के लिए बहुत अहम है।

सार्वजनिक सूचना
बहू चूना नरेश कुमार गर्ग की ओर से दी जाती है जो खतरा नंबर 1999में से 250 वर्ग गज क्षेत्रफल वाले प्लॉट संख्या 5 के मासिक के, जो राम शेट्टी हस्ते हैं। पुराना और हालत खरीने विलेन परिवारवाले घर में है। प्लॉट में उन्होंने मनीष बंडोवाल के दिनांक 11.01.2023 को क्रेडिट लिखे हैं। इससे पहले मनीष बंडोवाल ने इसे विभाजित रूप से दिनांक 25.03.2021 को क्रेडिट लिखे थे। इन दोनों दिनांकों में 5706 की कुल राशि विलेन घर और विभाजित रूप से कुल राशि से दिनांक 19.03.2018 को क्रेडिट लिखे थे। इन दोनों दिनांकों से कुल राशि से दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, पुराना प्लॉट/डिवाइड क्रेडिट क्रेडिट लिखित/डिवाइड में खुदने इतिहास और 2023 में दिनांक से क्रेडिट वसूला है। दिनांक 20.02.2018 को पंजीकृत जमानत पत्र और अक्टूबर, दस्तावेज संख्या 1114, कुल राशि 14, वरदान संख्या 1405, पत्र संख्या 395-408 के मामलों में है, और बहू नरेश कुमार, प

हरियाणा चुनाव कांटे की टक्कर

हरियाणा चुनाव में कांटे की टक्कर है। भाजपा-जजपा गठबंधन टूटने तथा कांग्रेस विद्रोहियों ने अनिश्चितता बढ़ाई है। 5 अक्टूबर, 2024 को चुनाव में हरियाणा का राजनीतिक परिदृश्य जबरदस्त टकराव तथा गठबंधनों में बदलाव से परिभाषित हो रहा है। यह चुनाव भारतीय जनता पार्टी-भाजपा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है जिसने 2019 में दुष्यंत चौटाला की जननायक जनता पार्टी-जजपा के समर्थन से सरकार बनाई थी, पर अब वह अकेले चुनाव मैदान में उतरी है। भाजपा-जजपा गठबंधन टूटने से भाजपा को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि उसे चुनाव तक अल्पमत सरकार चलानी पड़ी है। अपने पूर्व सहयोगी जजपा के अलग होने के बाद सत्तारूढ़ भाजपा अपने विकास एजेंडे पर ध्यान केन्द्रित कर रही है। वह जनता को गिना रही है कि उसने ढांचागत विकास, शिक्षा तथा महिलाओं की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण काम किए हैं। लेकिन पार्टी को खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है जहां कृषि सुधार जैसे मुद्दों पर भारी विरोध था। कांग्रेस स्वयं को भाजपा के मुख्य विकल्प के रूप में पेश कर रही है। भूपेंद्र सिंह हुड्डा के नेतृत्व में पार्टी को ग्रामीण क्षेत्रों में, खासकर जाट मतदाताओं में व्यापक समर्थन मिलने की उम्मीद है और वह भाजपा सरकार के प्रति कथित असंतोष का लाभ उठाने का प्रयास कर रही है।



दुष्यंत चौटाला अपनी पार्टी का अलग विमर्श बनाने के लिए स्वयं को भाजपा की नीतियों से दूरी बना रहे हैं तथा 'किसान-हिंदूई सुधारों' को पैरवी कर रहे हैं। हरियाणा में पूरे जोश के साथ चुनाव मैदान में उतरी आम आदमी पार्टी-आप' अनिश्चितता और बढ़ा रही है। 'आप' पड़ोसी पंजाब में मिली सफलता यहां दुहराना चाहती है। पार्टी मुख्यतः शहरी मतदाताओं को संबोधित करते हुए स्वास्थ्य, शिक्षा और भ्रष्टाचार-विरोधी कर्मों पर ध्यान केन्द्रित कर रही है। पिछले वर्षों में मजबूत पार्टी रही भारतीय राष्ट्रीय लोकदल-इनेलोद ने अभय सिंह चौटाला के नेतृत्व में बहुजन समाज पार्टी-बसपा से हाथ मिलाया है। हरियाणा में कृषि क्षेत्र केन्द्रीय मुद्दा बना हुआ है। यह नए कृषि कानूनों पर किसानों के विरोध प्रदर्शनों से पैदा हुआ जिनको अब वापस ले लिया गया है। लेकिन सरकार के प्रति किसानों का गुस्सा अभी पूरी तरह ठंडा नहीं हुआ है। विपक्षी पार्टियां, खासकर कांग्रेस और जजपा इसका प्रयोग कर ग्रामीण मतदाताओं को लामबंद करने का प्रयास कर रही हैं। इसके साथ ही हरियाणा में भारत की सर्वाधिक बेरोजगारी दर है। भाजपा और कांग्रेस ने इसे हल करने का वादा किया है। भाजपा जहां अपनी औद्योगिक पहलें गिना रही है, वहीं कांग्रेस नई रोजगार नीतियों का प्रस्ताव कर रही है। इन सबके साथ ही राज्य में 'जातीय राजनीति' का दबदबा है जो सत्ता का निर्धारण करती है। परंपरागत जाट-गैर जाट विभाजन हरियाणा का राजनीतिक परिदृश्य परिभाषित करता है। भाजपा को परंपरागत रूप से गैर-जाट समुदायों का समर्थन मिलता रहा है, लेकिन उसके सामने इस जनाधार को मजबूत करने की चुनौती है। जजपा और कांग्रेस मुख्यतः जाट मतदाताओं पर ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। जातीय गणित हमेशा हरियाणा के राजनीतिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण रही है। इसने मतदाताओं के व्यवहार और चुनाव परिणामों को प्रभावित किया है। हरियाणा की जनसंख्या में 25-30 प्रतिशत जाट सर्वाधिक प्रभावशाली राजनीतिक जाति समूह हैं। हुड्डा के नेतृत्व में कांग्रेस जाट तथा गैर-जाट के बीच खाई पाटने के लिए शहरी-ग्रामीण विकास योजनाओं पर ध्यान दे रही है, लेकिन उसे विद्रोहियों का सामना करना पड़ रहा है। 'जातीय गणित' का प्रबंधन करने वाले दल को ही राज्य में सत्ता मिलेगी।

एकात्म मानववाद : आदर्श एवं चुनौतियां

भाजपा पंडित दीनदयाल उपाध्याय की 108वीं जन्म जयंती मना रही है। उसके सामने 'एकात्म मानववाद' के आदर्शों तथा आधुनिक प्रशासन के बीच संगति बैठाने की चुनौतियां हैं।



के.एस. तोमर
(लेखक, राजनीति विश्लेषक हैं)

भारतीय जनता पार्टी -भाजपा आजकल दीनदयाल उपाध्याय की 108वीं जन्म जयंती मना रही है। उसके सामने 'एकात्म मानववाद' आदर्शों तथा आधुनिक प्रशासन के बीच संगति बैठाने की चुनौतियां हैं। भारतीय जनसंघ के संस्थापक तथा 'एकात्म मानववाद' की अवधारणा व आदर्श पेश करने वाले स्वर्गीय दीनदयाल उपाध्याय की 108वीं जन्म जयंती मनाई जा रही है। ऐसे में भाजपा के सामने चुनौती है कि वह इस दूरदर्शी आदर्श के अनुकूल स्वयं को कहां तक ढाल पाती है और इसे लागू करने में कहां तक सफल होती है। दीनदयाल उपाध्याय के 'एकात्म मानववाद' दर्शन में विकास के प्रति समग्र दृष्टिकोण अपनाया गया है। इसमें मनुष्य की बेहदारी को ध्यान में रखते हुए विकेन्द्रीकरण, स्वदेशी संस्कृति, आत्मनिर्भरता तथा नैतिक प्रशासन पर जोर दिया गया है।

हालांकि, भाजपा ने इन सिद्धान्तों को अवधारणात्मक रूप से स्वीकार किया है, पर उनको दिन-प्रतिदिन के शासन-प्रशासन में स्थापित करना व्यावहारिक रूप से कठिन चुनौती है। इस अवधारणा को लागू करने के लिए आर्थिक आदर्शों को आधुनिक नीतियों के साथ रख कर देखा जरूरी है। दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा विकेन्द्रीकरण के सिद्धान्तों की भारत की वर्तमान स्थितियों से सामंजस्य बैठाना जटिल है। वर्तमान 'वैश्वीकृत' दुनिया में भारत की नीतियां पूंजी-संचालित अर्थनीति पर आधारित हैं। इन नीतियों का प्रारंभ 1990 के दशक में अपनाया गए उदारिकरण सुधारों से हुआ था जिनके केन्द्र में 'उदारिकरण, निजीकरण व वैश्वीकरण'-एलपीजी नीतियां थीं।

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने ऐसी आर्थिक नीतियों पर ध्यान केन्द्रित किया है जिनसे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश-एफडीआई, मुक्त बाजार सुधारों तथा निजीकरण को बढ़ावा मिले। आलोचकों का तर्क है कि इनका दीनदयाल उपाध्याय की आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था की



अवधारणा से टकराव है क्योंकि इसमें ग्रामीण व स्थानीय उद्योगों को प्रोत्साहन, जमीनी स्तर पर रोजगारों के सृजन तथा विदेशी पूंजी पर निर्भरता घटाने को केन्द्र में रखा गया है। सरकार ने स्वदेशी संस्कृति और वैश्वीकरण के बीच संतुलन बनाने का प्रयास किया है। दीनदयाल उपाध्याय ने भारत की स्वदेशी संस्कृति के संरक्षण तथा प्रोत्साहन की पैरवी की थी। हालांकि, इसके साथ देश की आधुनिक प्रशासन में स्थापित करना व्यावहारिक रूप से कठिन चुनौती है। इस अवधारणा को लागू करने के लिए आर्थिक आदर्शों को आधुनिक नीतियों के साथ रख कर देखा जरूरी है। दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा विकेन्द्रीकरण के सिद्धान्तों की भारत की वर्तमान स्थितियों से सामंजस्य बैठाना जटिल है। वर्तमान 'वैश्वीकृत' दुनिया में भारत की नीतियां पूंजी-संचालित अर्थनीति पर आधारित हैं। इन नीतियों का प्रारंभ 1990 के दशक में अपनाया गए उदारिकरण सुधारों से हुआ था जिनके केन्द्र में 'उदारिकरण, निजीकरण व वैश्वीकरण'-एलपीजी नीतियां थीं।

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने ऐसी आर्थिक नीतियों पर ध्यान केन्द्रित किया है जिनसे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश-एफडीआई, मुक्त बाजार सुधारों तथा निजीकरण को बढ़ावा मिले। आलोचकों का तर्क है कि इनका दीनदयाल उपाध्याय की आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था की अवधारणा से टकराव है क्योंकि इसमें ग्रामीण व स्थानीय उद्योगों को प्रोत्साहन, जमीनी स्तर पर रोजगारों के सृजन तथा विदेशी पूंजी पर निर्भरता घटाने को केन्द्र में रखा गया है। सरकार ने स्वदेशी संस्कृति और वैश्वीकरण के बीच संतुलन बनाने का प्रयास किया है। दीनदयाल उपाध्याय ने भारत की स्वदेशी संस्कृति के संरक्षण तथा प्रोत्साहन की पैरवी की थी। हालांकि, इसके साथ देश की आधुनिक प्रशासन में स्थापित करना व्यावहारिक रूप से कठिन चुनौती है। इस अवधारणा को लागू करने के लिए आर्थिक आदर्शों को आधुनिक नीतियों के साथ रख कर देखा जरूरी है। दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा विकेन्द्रीकरण के सिद्धान्तों की भारत की वर्तमान स्थितियों से सामंजस्य बैठाना जटिल है। वर्तमान 'वैश्वीकृत' दुनिया में भारत की नीतियां पूंजी-संचालित अर्थनीति पर आधारित हैं। इन नीतियों का प्रारंभ 1990 के दशक में अपनाया गए उदारिकरण सुधारों से हुआ था जिनके केन्द्र में 'उदारिकरण, निजीकरण व वैश्वीकरण'-एलपीजी नीतियां थीं।

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने ऐसी आर्थिक नीतियों पर ध्यान केन्द्रित किया है जिनसे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश-एफडीआई, मुक्त बाजार सुधारों तथा निजीकरण को बढ़ावा मिले। आलोचकों का तर्क है कि इनका दीनदयाल उपाध्याय की आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था की

अवधारणा से टकराव है क्योंकि इसमें ग्रामीण व स्थानीय उद्योगों को प्रोत्साहन, जमीनी स्तर पर रोजगारों के सृजन तथा विदेशी पूंजी पर निर्भरता घटाने को केन्द्र में रखा गया है। सरकार ने स्वदेशी संस्कृति और वैश्वीकरण के बीच संतुलन बनाने का प्रयास किया है। दीनदयाल उपाध्याय ने भारत की स्वदेशी संस्कृति के संरक्षण तथा प्रोत्साहन की पैरवी की थी। हालांकि, इसके साथ देश की आधुनिक प्रशासन में स्थापित करना व्यावहारिक रूप से कठिन चुनौती है। इस अवधारणा को लागू करने के लिए आर्थिक आदर्शों को आधुनिक नीतियों के साथ रख कर देखा जरूरी है। दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा विकेन्द्रीकरण के सिद्धान्तों की भारत की वर्तमान स्थितियों से सामंजस्य बैठाना जटिल है। वर्तमान 'वैश्वीकृत' दुनिया में भारत की नीतियां पूंजी-संचालित अर्थनीति पर आधारित हैं। इन नीतियों का प्रारंभ 1990 के दशक में अपनाया गए उदारिकरण सुधारों से हुआ था जिनके केन्द्र में 'उदारिकरण, निजीकरण व वैश्वीकरण'-एलपीजी नीतियां थीं।

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने ऐसी आर्थिक नीतियों पर ध्यान केन्द्रित किया है जिनसे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश-एफडीआई, मुक्त बाजार सुधारों तथा निजीकरण को बढ़ावा मिले। आलोचकों का तर्क है कि इनका दीनदयाल उपाध्याय की आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था की अवधारणा से टकराव है क्योंकि इसमें ग्रामीण व स्थानीय उद्योगों को प्रोत्साहन, जमीनी स्तर पर रोजगारों के सृजन तथा विदेशी पूंजी पर निर्भरता घटाने को केन्द्र में रखा गया है। सरकार ने स्वदेशी संस्कृति और वैश्वीकरण के बीच संतुलन बनाने का प्रयास किया है। दीनदयाल उपाध्याय ने भारत की स्वदेशी संस्कृति के संरक्षण तथा प्रोत्साहन की पैरवी की थी। हालांकि, इसके साथ देश की आधुनिक प्रशासन में स्थापित करना व्यावहारिक रूप से कठिन चुनौती है। इस अवधारणा को लागू करने के लिए आर्थिक आदर्शों को आधुनिक नीतियों के साथ रख कर देखा जरूरी है। दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा विकेन्द्रीकरण के सिद्धान्तों की भारत की वर्तमान स्थितियों से सामंजस्य बैठाना जटिल है। वर्तमान 'वैश्वीकृत' दुनिया में भारत की नीतियां पूंजी-संचालित अर्थनीति पर आधारित हैं। इन नीतियों का प्रारंभ 1990 के दशक में अपनाया गए उदारिकरण सुधारों से हुआ था जिनके केन्द्र में 'उदारिकरण, निजीकरण व वैश्वीकरण'-एलपीजी नीतियां थीं।

वैश्विक व्यवस्था का पुनर्संतुलन

इजरायल और ईरान के बीच बढ़ते मिसाइल हमले पश्चिम एशिया में क्षेत्रीय स्थिरता के लिए खतरा हैं।



कुमारीदीप बनर्जी
(लेखक, नीति विश्लेषक हैं)

भारत के विस्तारित पड़ोस में बढ़ते हालात क्षेत्र की आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा बन रहे हैं। हाल ही में इजरायल द्वारा हिजबुल्लाह के कई शीर्ष कमांडरों को मार गिराया जाना, खास तौर पर इसके शीर्ष नेता हसन नसरल्लाह की हत्या, और इजरायली क्षेत्र पर ईरानी मिसाइलों की बारिश से पश्चिम एशिया में संकट बढ़ने की संभावना है। प्रधानमंत्री मोदी ने स्थिति की संवेदनशीलता को समझा और तुरंत अपने इजरायली समकक्ष बेंजामिन नेतन्याहू को संपर्क किया।

भारतीय प्रधानमंत्री का इजरायल को संदेश था कि क्षेत्रीय तनाव को रोकना और सभी बंधकों की सुरक्षित रिहाई बेहद जरूरी है, आतंकवाद के किसी भी रूप

और अभिव्यक्ति के लिए कोई जगह नहीं है और भारत शांति और स्थिरता की जल्द बहाली का समर्थन करने के लिए तैयार है। पिछले महीने न्यूयॉर्क में फ्यूचर समिट के दौरान प्रधानमंत्री ने फिलिस्तीन के राष्ट्रपति महमूद अब्बास से मुलाकात की थी। बैठक के बाद जारी एक प्रेस बयान में कहा गया, प्रधानमंत्री ने इजरायल-फिलिस्तीन मुद्दे पर भारत की समग्र-परीक्षित सैद्धांतिक स्थिति को दोहराया और युद्ध विराम, बंधकों की रिहाई और बातचीत और कूटनीति के रास्ते पर लौटने का आह्वान किया। उन्होंने जोर देकर कहा कि केवल दो राष्ट्र समाधान ही क्षेत्र में स्थायी शांति और स्थिरता प्रदान कर सकता है।

यह याद करते हुए कि भारत फिलिस्तीन को मान्यता देने वाले पहले देशों में से एक था, उन्होंने संयुक्त राष्ट्र में फिलिस्तीन की सदस्यता के लिए भारत के निरंतर समर्थन से अवगत कराया। जब भारतीय प्रधानमंत्री अमेरिका में कई वैश्विक नेताओं के साथ द्विपक्षीय बैठक कर रहे थे, तब बांग्लादेश की अंतरिम



सरकार के नवनिर्वाचित प्रमुख मुहम्मद युनुस को पश्चिमी नेताओं से बहुत जरूरी प्रशंसा मिल रही थी। युनुस ने अपनी अमेरिकी यात्रा के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति जो बिडेन, पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन, अमेरिकी विदेश मंत्री, कनाडाई प्रधानमंत्री, यूरोपीय संघ के अध्यक्ष, भारतीय प्रधानमंत्री अमेरिका में कई वैश्विक नेताओं के साथ द्विपक्षीय बैठक कर रहे थे, तब बांग्लादेश की अंतरिम

गर्मजोशी से मुलाकात की, जहां उन्होंने अपने द्विपक्षीय संबंधों को गहरा करने और क्षेत्रीय निकाय सार्क को पुनर्जीवित करने की इच्छा व्यक्त की। भारत के लिए, ये संबंध संभावित रूप से पाकिस्तान और चीन को बांग्लादेश के साथ इस नए-नए दोस्ताना संबंध का उपयोग भारत के खिलाफ अपने विध्वंसक एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। लगभग उसी समय विदेश मंत्री एस

जयशंकर ने न्यूयॉर्क में एशिया सोसाइटी पॉलिसी इंस्टीट्यूट में अपने भाषण में वैश्विक व्यवस्था को फिर से संतुलित करने पर बात की। उन्होंने कहा, वैश्विक व्यवस्था को फिर से संतुलित करना, जिसकी शुरुआत संयुक्त राष्ट्र के 51 संस्थापक सदस्यों से हुई थी, जो पिछले आठ दशकों में चौगुनी हो गई है, जहां आपके पास न केवल दुनिया में अधिक स्वतंत्र देश हैं, बल्कि वैश्विक व्यवस्था के व्यक्तिगत सदस्यों का आर्थिक, राजनीतिक और यहां तक कि जनसांख्यिकीय भार भी स्थानांतरित हो गया है, एक ऐसे बिंदु पर स्थानांतरित हो गया है जहाँ हममें से कई लोग मानते हैं कि आज हम वास्तव में एक मोड़ पर हैं, मंत्री ने विकसित हो रही वैश्विक व्यवस्था को परिभाषित करने की कोशिश करते हुए एक ही संबोधन में बहुध्रुवीयता और सहमत थिएटर में।

हाल की वैश्विक घटनाएं और इनमें से कई पर भारत का मापा हुआ रुख वही दर्शाता है जिसके बारे में विदेश मंत्री ने न्यूयॉर्क में बात की थी, और एक पुनर्संतुलन चल रहा है।

जिनके अपने मजबूत हित हैं और जो उस हित को आगे बढ़ाने की क्षमता रखते हैं। और इसलिए हम दुनिया के संदर्भ में जो कुछ भी देखते हैं, वह वास्तव में यह है कि व्यवस्था को फिर से संतुलित करना, जिसकी शुरुआत संयुक्त राष्ट्र के 51 संस्थापक सदस्यों से हुई थी, जो पिछले आठ दशकों में चौगुनी हो गई है, जहां आपके पास न केवल दुनिया में अधिक स्वतंत्र देश हैं, बल्कि वैश्विक व्यवस्था के व्यक्तिगत सदस्यों का आर्थिक, राजनीतिक और यहां तक कि जनसांख्यिकीय भार भी स्थानांतरित हो गया है, एक ऐसे बिंदु पर स्थानांतरित हो गया है जहाँ हममें से कई लोग मानते हैं कि आज हम वास्तव में एक मोड़ पर हैं, मंत्री ने विकसित हो रही वैश्विक व्यवस्था को परिभाषित करने की कोशिश करते हुए एक ही संबोधन में बहुध्रुवीयता और सहमत थिएटर में।

हाल की वैश्विक घटनाएं और इनमें से कई पर भारत का मापा हुआ रुख वही दर्शाता है जिसके बारे में विदेश मंत्री ने न्यूयॉर्क में बात की थी, और एक पुनर्संतुलन चल रहा है।

इजरायल और ईरान के बीच बढ़ते मिसाइल हमले पश्चिम एशिया में क्षेत्रीय स्थिरता के लिए खतरा हैं।

नशे का व्यापार

दिल्ली पुलिस के स्पेशल सेल ने 562 किलो कोकेन पकड़ी जो अब तक की सबसे बड़ी जब्ती है और जिसकी कीमत 6.5 हजार करोड़ रुपये बताई जा रही है। दिल्ली पुलिस की यह उपलब्धि उल्लेखनीय है। भारत में नशे के व्यापार और अवैध उपयोग पर सख्त पाबंदी है। इसके बावजूद आए दिन नशीले पदार्थ बढ़ी मात्रा में पकड़े जा रहे हैं और यह व्यापार अरबों रुपए का हो गया है। स्पष्ट है कि इसके लिए बहुत बड़ा अंतरराष्ट्रीय गिरोह सक्रिय है। नशे के व्यापार का काफी पैसा आतंकवादियों की जेब में जाता है जिससे देश में कानून-व्यवस्था की स्थिति खराब होती है। रबे पार्टी के नाम पर युवकों को नशे का आदी

बनाया जा रहा है। इस पर रोक लगाने के लिए आबकारी विभाग का पूरा अमला लगा हुआ है जिसे विभिन्न एजेंसियों का सहयोग मिलता है। इसके बावजूद युवकों में नशाखोरी बढ़ती जा रही है। कई युवा इतने ड्रग एडिक्ट हो चुके हैं कि नशे के लिए पैसा जुटाने हेतु आपराधिक गतिविधियां करने लगते हैं। इनके कारण चोरियों व अन्य आपराधिक घटनाएं बढ़ती जा रही है। इन सब के लिए नशे का व्यापार जिम्मेदार है। सरकार अपना काम कर रही है मगर नौजवानों को नशाखोरी की लत से बचाने के लिए परिवार तथा समाज को भी अपना दायित्व पूरी जिम्मेदारी से निभाना होगा।

जतिगत भेदभाव

विडंबना है कि 78 साल की आजादी के बाद भी देश के कुछ राज्यों में ऐसी कारागार नियामकाली है जहां जाति के आधार पर बैरक आवंटित की जाती है और काम दिया जाता है। इन कारागार नियामकालियों के अनुसार बंदी या हिरासती की जाति का उल्लेख जरूरी है। सुप्रीम कोर्ट ने ऐतिहासिक निर्णय में देश के 11 राज्यों में जारी भेदभाव पर आधारित जेल नियामकाली को निरस्त करने का आदेश दिया है। उसने तीन महीने में आवश्यक संशोधन का आदेश भी दिया है ताकि औपनिवेशिक काल के जातिगत भेदभाव वाले इन प्राविधानों को समाप्त किया जा सके। सुप्रीम कोर्ट का यह निर्णय अत्यंत प्रशंसनीय है और इसे एक बड़े बदलाव के रूप में देखा जाना चाहिए। इस प्रकार से स्पष्ट है कि देश में अब भी अनेक ऐसे औपनिवेशिक कानून मौजूद हैं जिनको तुरंत समाप्त किया जाना चाहिए। जातिगत भेदभाव के सभी रूपों तथा अस्पृश्यता की घटनाओं को पूरी तरह समाप्त करने के लिए शासन-प्रशासन और न्यायपालिका के साथ ही राजनीतिक दलों व सामाजिक संगठनों को पहल करनी चाहिए। जातिगत भेदभाव वाले ऐसे सभी प्राविधानों को समाप्त करना विकसित भारत तथा स्वस्थ समाज बनाने हेतु अनिवार्य है।

आप की बात

हिज्बुल्ला प्रमुख के मारे जाने के बाद ईरान ने इजरायल पर बड़े पैमाने पर मिसाइल हमले किए हैं। इजरायल भी पूरी मजबूती के साथ हमलों का जवाब दे रहा है। उसका कहना है कि वह इस समय सात दुश्मनों से एक साथ लड़ रहा है और वह सबको तबाह करके रहेगा। अमेरिका तथा पश्चिमी देश इस युद्ध में इजरायल के साथ हैं, लेकिन वे भी अनेक कारणों से युद्ध का विस्तार नहीं चाहते हैं। रूस-यूक्रेन युद्ध जारी रहने तथा पश्चिम एशिया में युद्ध का विस्तार होने से विश्व अर्थव्यवस्था पर भारी नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा जो पहले से ही अनेक संकटों का सामना कर

युद्ध का विस्तार

रही है। अमेरिका में अगले महीने होने वाले चुनाव के दृष्टिकोण से भी डेमोक्रेट व रिपब्लिकन किसी प्रकार इजरायल व यहूदियों के समर्थन से पीछे हटना नहीं चाहते हैं। लेकिन युद्धविराम करवाना वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए आसान नहीं है। एक साल पहले इजरायल पर हुआ हमला द्वितीय विश्वयुद्ध के समय यहूदियों के नरसंहार के बाद सबसे बड़ा हमला था। इजरायल की जनता तथा सरकार इस बार अपने दुश्मनों का इस सीमा तक सफाया कर देना चाहते हैं कि वे उसके लिए निकट भविष्य में खतरा न बन सकें। वर्तमान स्थिति अत्यंत जटिल है।

पैसे की गुलामी

फिल्मी गीत-ना बाप बड़ा ना भैया, सबसे बड़ा रुपैया बहुत मशहूर हुआ था। आज के समय में भी यह पूरी तरह प्रासंगिक है और शायद भविष्य में भी रहेगा। पैसा ही सब कुछ हो गया है और पैसे के लिए अनेक लोगों ने अपनी विश्वसनीयता व नैतिकता को लक्ष्मण रेखा तोड़ दी है। एक अस्पताल की नर्स ने महज 5100 रुपए का नेग न मिलने पर एक नवजात शिशु की जान ले ली। इसी तरह दो युवकों ने डेढ़ लाख रुपए के आईफोन मंगवाकर डिलीवरी ब्याय की हत्या कर दी। बहुत अफसोस की बात है कि

रुपए पैसों के आगे इंसान की कीमत घास के तिनके से भी गई होती हो गई है। कहा जाता है कि पहले हमारे देश में दया, करुणा व विश्वास की संस्कृति थी, लेकिन अब पैसे की गुलामी के चलते उसकी हत्या हो रही है। हालांकि, अब भी लोगों के खोए पैसे उनको तलाश कर लौटाने तथा पैसे के लालच में न पड़ कर रुपए का नेग न मिलने पर एक नवजात शिशु की जान ले ली। इसी तरह दो युवकों ने डेढ़ लाख रुपए के आईफोन मंगवाकर डिलीवरी ब्याय की हत्या कर दी। बहुत अफसोस की बात है कि

त्यौहारों को शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने में संभ्रान्तजनों की महत्वपूर्ण भूमिका: जिलाधिकारी

परंपरागत एवं शांतिपूर्ण तरीके से मनायें त्यौहार

लखीमपुर खीरी। आसन्न त्यौहारों श्री दुर्गा पूजा, मूर्ति विसर्जन एवं दशहरा को शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराये जाने के उद्देश्य से शुक्रवार को कलेक्ट्रेट सभागार में डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल व एसपी गणेश प्रसाद साहा ने जिला शान्ति समिति ने बैठक ली। बैठक के दौरान डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने सभी को आसन्न त्यौहारों की शुभकामनाएं देते हुए आयोजकों से अपील की है कि पूजा स्थलों एवं पण्डालों में आस्था के साथ सुरक्षा के मानकों का भी कड़ाई के साथ अनुपालन किया गया। पूजा स्थलों को सीसीटीवी कैमरों के साथ, साथ-साथ अग्निशमन उपकरणों से भी सुसज्जित रखा जाय। त्यौहारों के अवसर पर प्रदेश



सरकार व जिला प्रशासन के लिए सुरक्षा व्यवस्था शीर्ष प्राथमिकता को विषय है किसी भी दशा में जनहानि नहीं होने दी जाएगी।

डीएम.एसपी ने कहा कि सभी आयोजकों मां दुर्गा की प्रतिमाओं की ऊंचाई एवं जुलूसों में डीजे की हाइट एवं ध्वनि के स्तर को मापू उच्च व्याख्याल्य द्वारा निर्धारित मानक के अनुसार रखा जाय तथा आपत्तिजनक गानों को न बजाया जाय। वरिष्ठ

नागरिकों का दायित्व है कि धार्मिक आयोजनों के समय युवाओं को संयमित व्यवहार के लिए प्रेरित करें। एसपी गणेश प्रसाद साहा ने नवरात्रि एवं दुर्गा पूजा के दौरान चाक,चौबंद पुलिस व्यवस्था का आश्वासन देते हुए कहा की त्यौहार को सकुशल संपन्न कराने के लिए यद्यपि पुलिस पूरी तरह से मुस्तैद रहेगी, फिर भी स्थानीय लोगों से इस व्यवस्था में पुलिस का सहयोग करने की अपील

किया तथा कहा कि सुरक्षा व्यवस्था से संबंधित किसी भी आशंका की स्थिति में वे स्थानीय पुलिस चौकी, थाने अथवा सीधा उनसे संपर्क कर सकते हैं। ट्रैफिक मैनेजमेंट हेतु डायवर्सन और सड़कों में अपना अपेक्षित सहयोग दे। एडीएम संजय कुमार सिंह ने कहा कि जनपद में त्यौहारों को मनाए जाने की गौरवशाली परंपरा रही है। उन्होंने लोगों से अपील किया कि इस परंपरा का निर्वहन करते हुए इस वर्ष भी त्यौहारों को शांति, सौहार्द एवं आनंद के वातावरण में आपसी भाई-चारे एवं एक दूसरे की धार्मिक भावनाओं का सम्मान करते हुए परम्परागत तरीके से त्यौहार मनाए। पंडालों और विसर्जनों में भक्ति गीत ही बजाए जाएं। डीएम व एसपी ने कहा कि जिला प्रशासन को आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आसन्न त्यौहार भी सभी के सहयोग से सफल स्थापित कर उनकी जिज्ञासाओं का उत्तर दिया गया।

जयकारे के साथ आदिशक्ति मां ब्रह्मचारिणी की पूजा

दूसरे दिन माता के ब्रह्मचारिणी स्वरूप की हुई पूजा-अर्चना

फतेहपुर। दोआबा में नवरात्र के दूसरे दिन मां ब्रह्मचारिणी के स्वरूप की पूजा अर्चना की गई। पंडालों सहित देवी मंदिरों में भक्तों का तांता लगा रहा। सांभर के तो कहीं प्रसाद वितरण का सिलसिला चलता रहा। वहीं रां-बिरगी झालरों की रोशनी की अनेकी छटा, संगीतमय आरती के स्वर, तालियों की गड़गड़हट संग गुंजते मां भवानी के गान भेदी जयकारों से भक्तिमय माहौल दिखाई दिया। शारदीय नवरात्र के दूसरे दिन शुक्रवार को शहर के देवी मंदिरों सहित पंडालों में सुबह से ही श्रद्धालुओं की कतार लगी रही। भक्तों ने मां के दूसरे स्वरूप मां ब्रह्मचारिणी की पूजा अर्चना की। हर कोई देवी मां के पहले दर्शन करने की होड़ और प्रसाद पाने की ललक लेकर मंदिरों से पंडाल तक पहुंच रहा था। भक्तों ने नारियल,

रोली, गंगाजल, पुष्प, चंदन माता को अर्पित कर सुख समृद्धि मांगी। मां के दर्शन के लिए भक्तों की लंबी कतारें देवी मंदिरों में लगी रही। वहीं शाम के समय पंडालों में माता की संगीतमय आरती की गई। बड़ी संख्या में भक्तों की मौजूदगी से दुर्गा पंडालों में रौनक देखते ही बन रही थी। उधर शहर स्थित मंदिरों में आरती के बाद भजन कीर्तन का आयोजन महिलाओं द्वारा किया गया। आरती के बाद वृहद प्रसाद वितरण किया गया। नवरात्र के दूसरे दिन शाम को लोग पंडालों में पहुंचकर जगत जननी की भक्ति अनेकी छटा, संगीतमय आरती के स्वर, तालियों की गड़गड़हट संग गुंजते मां भवानी के गान भेदी जयकारों से भक्तिमय माहौल दिखाई दिया। शारदीय नवरात्र के दूसरे दिन शुक्रवार को शहर के देवी मंदिरों सहित पंडालों में सुबह से ही श्रद्धालुओं की कतार लगी रही। भक्तों ने मां के दूसरे स्वरूप मां ब्रह्मचारिणी की पूजा अर्चना की। हर कोई देवी मां के पहले दर्शन करने की होड़ और प्रसाद पाने की ललक लेकर मंदिरों से पंडाल तक पहुंच रहा था। भक्तों ने नारियल,

वैट का बकाया राशि न जमा न करने पर ढाई सौ व्यापारियों के खाता सीज

व्यापारियों ने कहा उनका हो रहा है उत्पीड़न, बगैर नोटिस के ही सीज किये जा रहे हैं खाते

हमीरपुर। वैट का बकाया राशि न जमा न करने पर जिले के करीब दो सौ पचास व्यापारियों के खाते सीज कर दिये गये हैं,जिससे व्यापारियों में हड़कंप मच गया है। जब कि व्यापारियों का कहना है कि उनका उत्पीड़न किया जा रहा है। जानकारी के मुताबिक व्यापारियों से कर वसूलने के लिये शासन ने वर्ष 2008 से लेकर 2017 तक वैट प्रक्रिया लागू की गयी थी इसके बाद शासन ने वैट समाप्त कर जीएसटी लागू कर दिया था। नौ साल के अंतराल में वैट बकाया करीब 1700 व्यापारी बकायेदार की सूची में आ गया था व्यापारियों पर करोड़ों रुपये बकाया हो गया था इसके बाद व्यापारियों ने बकाये पर कोई ध्यान नहीं दिया और वह ज्यों का त्यों पड़ा रहा,इधर प्रदेश में भारी रकम बकाया होने के कारण आला अफसरों ने जिले के अधिकारियों पर नकेल कर शीघ्र ही वसूली करने के आदेश कर दिये हैं। जिले में अभी तक करीब 250 व्यापारियों

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना

कानपुर देहात। मुख्य सचिव, उग्र शासन के निर्देशों व जिलाधिकारी आलोक सिंह के मार्गदर्शन में प्रदेश में महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा सम्मान एवं स्वावलम्बन हेतु शरदीय नवरात्र के पर्व पर मिशन शक्ति (फेज.05) के विशेष अभियान के क्रम में अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस के 10 दिवसीय समारोह के उपलक्ष्य में आज दिनांक 04.10.2024 को ब्राइट ऐन्जिल स्कूल अकबरपुर कानपुर देहात में टॉक शो विथ ऑयडलस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में आइडल के रूप में रेनु यादव जिला प्रोवेशन अधिकारी, नेहा सिंह जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी, डा. सुभ्री खत्री चिकित्साधिकारी, महिला यानाथ्यक कानपुर देहात द्वारा जीवन में सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ने की जानकारी दी गई एवं बालिकाओं के साथ संवाद स्थापित कर उनकी जिज्ञासाओं का उत्तर दिया गया।

रेलवे ट्रैक पर पड़ी लकड़ी की भारी टुकड़ा देख चालक ने खड़ी की ट्रेन, चालक की सूझबूझ से मेमू पलटने से बची

सुमेरपुर हमीरपुर।

भरुआ सुमेरपुर रेलवे को दोहरीकरण लाइन और नये प्लेट फार्म का निर्माण कर रही कार्यदायी संस्था केपीटीएल की लापरवाही के चलते मेमू ट्रेन पलटने से बच गई। रेलवे प्लेटफार्म पर लगे ट्रैक पर पड़े लकड़ी के स्लीपो को देख कर ट्रेन के चालक ने इमरजेंसी ब्रेक लगाकर ट्रेन को पहले ही रोक दिया। एक बड़ा हादसा टल गया। स्टेशन प्रबंधक ने इसकी सूचना रेलवे सुरक्षा बल सहित उच्चाधिकारियों को दी। अधिकारी मौके पर पहुंच कर मामले की जांच करने में जुट गए हैं। वहीं रेलवे के अवर अभियंता ने कार्यदायी संस्था के खिलाफ एफआईआर दर्ज अभियोग पंजीकृत करारों की बात कही है। कानपुर से मानिकपुर जाने वाली मेमू ट्रेन सुबह सुमेरपुर रेलवे स्टेशन में प्लेटफार्म नंबर तीन पर पहुंचने वाली थी। दोहरीकरण का कार्य कर मेमू ट्रेन को कंपनी केपीटीएल ने इस प्लेटफार्म में



ट्रेन व उसके आगे रखा लकड़ी का टुकड़ा

कार्य के लिए पटरियों व प्लेटफार्म की दीवार के बीच लकड़ी की स्लीपर लगा रखे थे, जबकि कार्य करने के बाद उनको हटाना नहीं गया। वहीं दूसरी ओर रेलवे स्टेशन में ड्यूटी पर रहने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों की भी लापरवाही समाने नजर आ रही है और ड्यूटी पर तैनात कर्मियों ने कैसे मेमू ट्रेन को बिना प्लेटफार्म को देखे ट्रैक पर ले लिया गया। ट्रेन के ड्राइवर ने जब पटरियों पर लकड़ी के स्लीपो को देखा, तो द्रष्ट रह गए और इमरजेंसी ब्रेक लगा कर मेमू ट्रेन को लकड़ी के स्लीपो से पहले रोक

दिया। ट्रेन के ड्राइवर के सुझ बूझ से एक बड़ा हादसा होते टल गया ट्रेन के ड्राइवरों ने वॉकी टॉकी के माध्यम से स्टेशन मास्टर को इसकी जानकारी दी। और स्टेशन पर ड्यूटी पर तैनात रेलवे कर्मी प्लेटफॉर्म तीन की ओर अनन फोन में दौड़े और पटरियों में लगाये गए स्लीपो को आनन फानन मे रेलवे ट्रैक से हटाया गया।

कार्यदायी संस्था के खिलाफ लापरवाही का मुकदमा

स्टेशन प्रबंधक ने इस मामले की सूचना आरपीएफ सहित उच्चाधिकारियों को दी है। आरपीएफ व अधिकारियों ने मामले की जांच शुरू कर दी है। रेलवे के अवर अभियंता उषेंद्र कुमार ने बताया कि यह कार्यदायी संस्था के कर्मियों की बड़ी लापरवाही है। कार्यदायी संस्था केपीटीएल के खिलाफ इस लापरवाही का मुकदमा दर्ज कराया जा रहा है।

ग्राम समा सेहलवा में किया गया पंडित दीनदयाल पशु आरोग्य मेला का आयोजन

लखीमपुर खीरी। ब्लॉक लखीमपुर के अंतर्गत ग्राम पंचायत सेहलवा में पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु आरोग्य मेले का आयोजन किया गया। आज 04 अक्टूबर 2024 ग्राम पंचायत सेहलवा ब्लॉक लखीमपुर में सरकार की मंशा के अनुरूप एवं मुख्य पशु चिकित्साधिकारी लखीमपुर डॉ. जगदीश प्रसाद के उपस्थिति में पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु आरोग्य शिविर का आयोजन किया गया शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि ग्राम प्रधान मधुराम वर्मा एवम मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी ने गो पूजन कर तथा पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की फोटो पर माल्यार्पण कर शुभारंभ किया मेले में आए हुए 500 सौरभ सिंगही नीमगांव व पशुओं के टीकाकरण व ऋमिनाशक दवा पान के बारे में जानकारी दी। डॉक्टर अमिल दुबे ने किसानों को क्रेडिट कार्ड, टैगिंग का महत्व बीमा के बारे में जानकारी दी।

विक न्यूज

ऊर्जा विकास अभिकरण के तत्वाधान में पीएम सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना के समीक्षा बैठक का आयोजन

फर्रुखाबाद। जिलाधिकारी डॉ. वी.के. सिंह की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार परिसर फोहदह में उप नवीन एवं नवीनीकरण ऊर्जा विकास अभिकरण (यूपी नेट) फर्रुखाबाद के तत्वाधान में प्रधानमंत्री सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना के समाह क्रियायतजन्य व परीक्षण हेतु समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में जिलाधिकारी द्वारा निर्देशित किया गया कि बिजली विभाग योजना के लाभ के बारे में उपभोक्ताओं को अवगत करायेगा, उपभोक्ताओं को नेट नी. उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी विद्युत विभाग की है, जिलाधिकारी द्वारा निर्देशित किया गया कि मुख्य विकास अधिकारी व एल डी एन संयुक्त रूप लोनिंग के लिये बैठकों का लक्ष्य निर्धारित करें। उक्त योजना में 14000 का लक्ष्य जनवाद को प्राप्त हुआ है। योजना की नई गाइडलाइन में 03 किलोवाट तक के नेटों के लिये आईटीआर की आवश्यकता नहीं है, पीओ नेडा को सभी वेशेरे के मोबाइल नम्बर सभी 3जी व बीडीओ को उपलब्ध कराने के लिये निर्देशित किया गया। जिलाधिकारी द्वारा हेडबिल बाटकर उक्त योजना के प्रचार प्रसार के लिये निर्देशित किया गया व अक्टूबर तक लक्ष्य के 50 प्रतिशत को प्राप्त करने के लिये निर्देशित किया। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी, आर जिलाधिकारी, अधीक्षण अभियंता विद्युत, आर उप जिलाधिकारी सदर एलडीएन व संबधित अधिकारियों

सापा प्रतिनिधिमंडल पीडिडों से मिलने जायेगा आज

फर्रुखाबाद। रागत दिन गोनपुर विधानसभा के वाम फोरेडरुपण ब्लॉक कमालगंज में प्रशासन द्वारा बलुडौजार में लगभग आठ क्वान्त तैड दिए गए थे जिसकी जानकारी तथा पीडित परिवार से मिलने हेतु प्रतिनिधिमंडल वाम फोरेडरुपण पहुंचेगा। रिपोर्ट प्रदेश कार्यालय में प्रस्तुत करेगा।

सड़क हादसे में बाइक सवार की मौत, साथी गंभीर

फतेहपुर। थरियायं थाना क्षेत्र के ख्यागा का पुरवा गांव निवासी अजय कुमार का पुत्र बल्लू अपने साथी राजेश 24 वर्ष निवासी अखुआ जगदर चौधारी के साथ रात लगभग नौ बजे बाइक से थरियायं कस्बा आ रहे थे। जैसे ही ये लोग गहिया गंटीर के समीप प्लानर-2 पर पहुंचे तभी अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दिया जिससे बल्लू की घटनास्थल पर मौत हो गई वहीं राजेश घायल हो गया। सूचना पाकर मौके पर पहुंची सकारारी एंबुलेंस ने घायल को उपचार के लिए जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया। वहीं पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर विच्छेदन गृह भेज दिया।

ट्रेन से गिरकर युवक की मौत

फतेहपुर। खाना कोतवाली क्षेत्र के वाम तिलकापुर के समीप गुरुवार को ट्रेन से कानपुर जा रहे 32 वर्षीय युवक की गिरकर मौत हो गई। पुलिस ने शव को विच्छेदन हेतु भेजा है। जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र के जसजगदर गांव निवासी मोहनलाल का पुत्र अश्वेश कुमार ट्रेन से कानपुर जा रहा था। बताते हैं कि तिलकापुर के समीप अचानक चलती ट्रेन से गिर गया। जिससे उसकी घटनास्थल पर मौत हो गई। पुलिस ने शव को विच्छेदन गृह भेज दिया।

कुएं में गिरकर अथेड़ की मौत

फतेहपुर। हुसेनगंज थाना क्षेत्र के वाम भगला का पुरवा में गुरुवार की शाम शौचक्रिया को जा रहे 50 वर्षीय अथेड़ कुएं में गिर गया। जिससे उसकी मौत हो गई। जानकारी के अनुसार भगला का पुरवा गांव निवासी बुढ़ का पुत्र शिव कुमार गुरुवार की शाम सात बजे शौचक्रिया के लिए जा रहा था जब वह अथेड़ कुएं में गिर गया तभी पास में स्थित कुएं में गिर गया। घटनास्थल पहुंची पुलिस ने गांव वालों की मदद से देर रात शव को बाहर निकाल पचनामा भरेते हुए विच्छेदन गृह भेज दिया।

युवक ने पांसी लगाकर टी जान

फतेहपुर। घांटपुर थाना क्षेत्र के भगलपुर गांव निवासी रामकरण का पुत्र बालकृश ने गुरुवार की देर शाम घर के अंदर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर विच्छेदन गृह भेज दिया। पोस्टमॉर्टम हिसप में मृतक के पिता रामकरण ने बताया कि उसका पुत्र व बहू अलग रहते हैं। उनको शक है कि उसके पुत्र की हत्या बहू ने की है।

युवक की अवानक मौत, शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा

संडीला (हरदोई)। सदिंग परिस्थितियों में एक युवक की मौत हो गयी। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा है। थाना कसिमपुर के अंतर्गत वाम अरहैल आनजगपुर में 25 वर्षीय कुलीप राम रामगुलाम गुरुवार की रात खाना खाकर घर में सो रहा था। आधी रात को उसे अवानक उर्रिया होने लगी। उसके छोटे भाई विठिन ने उसे नींदु पाती पिलाया तथा कुछ देर बाद कुलीप सो गया। सुबह उसकी माता ने उसे उठाने की कोशिश की लेकिन वह नहीं उठा।

बीज वितरण कैम्प का आयोजन

कानपुर देहात। जिलाधिकारी आलोक सिंह के निर्देशन में जिला उद्यान अधिकारी बलदेव प्रसाद ने बताया कि जनपद में संचालित राष्ट्रीय कृषि विकास योजनान्तर्गत एवं राज्य सेक्टर योजनान्तर्गत शासन के निर्देश के अन्तर्गत उद्यान विभाग द्वारा अधिकृत कम्पनियों के द्वारा बीज वितरण कैम्प का आयोजन उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण, विभाग द्वारा राजकीय अंलकृत उद्यान आलमचन्द्रपुर कानपुर देहात में जिला उद्यान अधिकारी के सौजन्य से दिनांक 04ण10प2024 को किया गया। जिसमें विभिन्न विकासखण्ड के पंजीकृत कृषकों को बीज वितरण कैम्प के माध्यम से नामित कम्पनियों द्वारा बीण अनुबन्ध किये गये। बीज वितरण कैम्प में नामधारी सीड्स कलशा सीड्स वापना सीड्स ट्रॉपिका सीड्स तथा जे0के0एंप्रीटिक्स सादिक कम्पनियों द्वारा प्रतिभाग किया गया जिसमें पंजीकृत कृषकों द्वारा अपनी पसन्द की कम्पनी स प्रजाति का चयन किया गया।

दुकानदार को पीटकर नहर में फेंककर मार डालने का आरोप

संवाददाता। रूमा, कानपुर देहात

थाना क्षेत्र के गेंदामऊ गाँव में अपने पिता को पीटकर नहर में फेंकने से उनकी मृत्यु होने का आरोप लगा पुत्र ने दो लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करवाया है। पुलिस ने शव को सील कर पोस्टमॉर्टम कर भेजा है तथा आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा जा रहा है। आपको बताते चलें कि गुरुवार की रात्रि थाना क्षेत्र के गेंदामऊ गाँव के पास नहर में गदनुपुर निवासी होटल संचालक प्रेमशंकर कश्यप उम्र 65 वर्ष का शव मिला था। मृतक के पुत्र बनेशन ने बताया कि गुरुवार की रात्रि को करीब 8:30 बजे वह अपने पिता को खाना देकर वापस घर गया था।

उस समय दुकान में विमल व रञ्जन निवासी राम गेंदामऊ पिता से बातचीत कर रहे थे। करीब आधे घण्टे बाद गाँव के ही कछू पुत्र

ओमकार ने सूचना दी कि तुम्हारे पिता को विमल व रञ्जन ने मारपीट कर नहर में फेंक दिया है और तुम्हारे पिता नहर में डूब गये है, मेरे पिता के नहर से बाहर न आने की सूचना पर मैं और मेरे परिजन सहित गाँव के अन्य लोग मौके पर पहुंचे और नहर के भीतर काफी देर खोजबीन की, बहुत दृढ़ने के बाद पिता जी का शरीर मिला लेकिन तब तक नहर के भीतर उनकी मृत्यु हो चुकी थी। मृतक के पुत्र ने बताया कि विमल व रञ्जन ने मेरे पिता के साथ मारपीट कर उनको नहर में फेंक दिया था, जिससे उनकी मौत हो गयी। सूचना पर पहुंचे एसपी राजेश पाण्डेय ने जाँच पडताल की है तथा फेरिसिक टीम ने साक्ष्य एकत्रित किये थे। थानास्थल जेपी शर्मा ने बताया कि मृतक के पुत्र की शिकायत पर मुकदमा पंजीकृत कर दोनों आरोपियों को जेल भेजा जा रहा है।

अग्रवाल जयंती समारोह में पुरस्कार पाकर खुश हुए नन्हें, मुन्हे, युवक और युवतियां

पुरखार्यां, कानपुर देहात। कस्बे के अग्रवाल धर्मशाला में अग्रवाल सभा की ओर से आयोजित महाराजा अग्रसेन जयंती महोत्सव के सातवें दिन शुक्रवार को डॉडिया नृत्यकला, फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता संपन्न हुई। आलोक कंडल, मनोज गोयल और व्यापक मंडल के अनुभव अग्रवाल ने दीप प्रज्वलित कर संयुक्त रूप से उद्घाटन किया। व्यापक मंडल के जिला महामंत्री अनुभव अग्रवाल अग्रवाल ने कहा जयंती समारोह आयोजित होने से ही महापुरुषों को उचित सम्मान मिलता है। अग्रवाल महासभा के अध्यक्ष उमंग अग्रवाल ने बताया कि अभी तक आयोजित की गई सभी प्रतियोगिता शुक्रवार को पुरस्कार बांटे गए हैं। जिसमें सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में रमप ए के लक्ष्य कंडन, रमप बी के हृदय गोयल, रमप सी के सक्षम सिंघल को प्रथम पुरस्कार मिला है। हैडऑडिटिंग में रमप ए की निराली अग्रवाल, रमप बी के



जयंती समारोह में डॉडिया नृत्य करती युवतियां

सौर्य मित्तल व रमप सी को प्राप्ती अग्रवाल को प्रथम पुरस्कार मिला। चित्रकला में रमप ए की राधवी, रमप सी की अंशिका को प्रथम, गर्वित को द्वितीय पुरस्कार रमप डी में निराली को प्रथम, लक्ष्य को द्वितीय, रमप ई में प्रियम प्रथम व सक्षम द्वितीय रहे। रंगोली प्रतियोगिता में शगुन गोयल प्रथम, साक्षी अग्रवाल द्वितीय, व छवि गोयल को स्पेशल पुरस्कार दिया गया। फूड स्टाल में आमची मुंबई की

अपेक्षा अग्रवाल को प्रथम, रोल ऑन बर्गर ममता अग्रवाल को द्वितीय व हंगरी हट सान्वी व मनोजा गोयल को तृतीय पुरस्कार मिला। हेयर स्टाइल में रूबी अग्रवाल को प्रथम, डॉस प्रतियोगिता में रमप ए में आरना सिंघल व आग्या गोयल को प्रथम, राधवी को द्वितीय, रमप बी में अद्रिका गोयल को प्रथम, सानवी गोयल, अथर्व गोयल, इवान गोयल को द्वितीय पुरस्कार मिला।

मिलेट्स बीज उत्पादन के सम्बन्ध में कृषक उत्पादक संगठनों को दिया गया प्रशिक्षण

संवाददाता। कानपुर देहात

जिलाधिकारी आलोक सिंह के निर्देशन में उपनिदेशक कृषि रामबचन राम ने बताया कि कृषि विभाग द्वारा मोटा अनाज ;श्री अन्नद क को बढ़ावा देने हेतु संचालित मिलेट्स पुनरोद्धार कार्यक्रम अन्तर्गत जनपद स्तर पर कृषि कल्याण केन्द्र बारा में कृषक उत्पादक संगठनों के अध्यक्ष साथ प्रतिनिधियों के साथ,साथ प्रगतिशील कृषकों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कर उप कृषि निदेशकए जिला कृषि अधिकारी एवं कृषि वैज्ञानिकों द्वारा मिलेट्स बीज उत्पादन के सम्बन्ध में प्रशिक्षण एवं नवीनतम कृषि तकनीकी के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान की गयी। उक्त के साथ,साथ प्रतिभागियों को श्री अन्न के पोषक महत्वों एवं लाभों के सम्बन्ध में जानकारी का प्रसार करने हेतु

प्रोत्साहित किया गया। उप कृषि निदेशक राम बचन राम द्वारा अवगत कराया गया कि मिलेट्स यथा बाजराए ज्वारए मडुआ;रागीइए अनुसार दोदोए काकुए कुटकीए चेनाए कुडू एवं रामदाना आदि भारत एवं 30प0 की प्राचीन कृषि और आहार परम्परा का महत्वपूर्ण हिस्सा है। पोषण में इनकी महत्ता को देखते हुए ही श्री अन्न को न्यूट्री सौरियल भी कहा जाता है। ये फसले पोषक तत्वों से भरपूर होती है और कई स्वास्थ्य लाभ प्रदान करती है। मिलेट्स प्रोटीनए फाइबरए आयरनए कैल्शियमए विभिन्न विटामिन्स और मिनरल का समृद्ध स्रोत है। इनका सेवन हृदय रोगए मधुमेह और मोटापा जैसी बीमारियों के जोखिम को कम करती है। मिलेट्स का पर्यावरण महत्व भी है। यह फसलें सूखा प्रतिरोधी होती है और कम जल में भी उगाई जा सकती हैए जिससे जल संरक्षण में भी मदद

मिलती है। इसके अलावा श्री अन्न की खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों की आवश्यकता कम होती हैए जिससे मृदा की उर्वरता और जैव विविधता बनी रहती है। जिला कृषि अधिकारी द्वारा श्री अन्न की खेती को बढ़ावा देनेए तथा मिलेट्स को अपने आहार में धान व गेहूँ के स्थान पर प्रयोग करने हेतु जागरूक किया गया। उनके द्वारा मिलेट्स से होने वाले स्वास्थ्य लाभों के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करते हुए किसानों को अवगत कराया गया कि श्री अन्न में धान व गेहूँ की तुलना में फाइबर भी अधिक मात्रा में होने के कारण यह सुपाच्य भी होता है। उनके द्वारा जनपद में मिलेट्स बीज की उपलब्धता एवं निर्धारित मूल्य के साथ,साथ कृषि विभाग द्वारा वितरित किये जाने वाले नियुक्त मिनी किट के सम्बन्ध में अवगत कराया गया।

सांप्रदायिक टिप्पणी पर जांच में प्रभारी निरीक्षक फंसे, कार्यवाही होनी तय

संडीला (हरदोई)। प्रभारी निरीक्षक अतरीली पर अल्प संख्यक समुदाय के एक व्यक्ति पर सांप्रदायिक और अपमानजनक टिप्पणी किए जाने का मामला काफ़ी तूल पकड़ गया है। जांच में उन्हें दोषी पाया गया है हालांकि आरोपी पुलिस अधिकारी आरोपों से इनकार कर रहे हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम महंगांव निवासी निरीक्षक पुत्र शर्षक ने 20 जून 2024 को राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग को प्रेषित शिकायती पत्र में कहा कि ग्राम निवासी राजवर्धन सिंह पुत्र नागेन्द्र सिंह उर्फ कछू सिंह ने कोतवाली जाकर शर्षक पुत्र सिद्दीक आदि के विरुद्ध अवैध निर्माण कराने का प्रार्थना पत्र दिया था। इसकी जांच के लिए उपनिरीक्षक उमाशंकर यादव को सौंपी गयी। जिसपर शर्षक को आने जाने का रास्ता दिला दिया गया। इसके बाद पुनः विवाद होने पर शर्षक के पुत्र इब्राहीम को थाने बुलाया गया। इब्राहीम के अनुसार एक स्थानीय पत्रकार की उपस्थिति में प्रभारी निरीक्षक ने उन्हें कालियां देते हुए कहा कि तुम्हें रास्ता तो दे दिया गया हैए ज्यादा रास्ता चाहिए उन्हीं फासिलत बन गया हैए तो जाओ पाकिस्तान में रहोए यहाँ क्या कर रहे होखू इसी दौरान इब्राहीम ने प्रभारी निरीक्षक से बात चीत की ऑडियो रिकॉर्डिंग कर ली थी और इस ऑडियो को दिक्कर पर डाल दिया था। इस मामले में अल्पसंख्यक आयोग ने पुलिस अधीक्षक हरदोई से सारे मामले की जांच कराकर रिपोर्ट मांगीए जिसपर तत्कालीन सीओ शिल्पा कुमारी को मामले की जांच सौंपी गयी। सीओ ने जांच में प्रभारी निरीक्षक को आवाज ऑडियो में होने की पुष्टि की। इस मामले में अपर पुलिस अधीक्षक पूर्वी ने अल्पसंख्यक आयोग को अपने पत्र संख्या ई252752 द्वारा दिनांक 23ण08ण2024 को आख्या भेज दी है। उधर प्रभारी निरीक्षक अतरीली पर कड़ी कार्यवाही की तलवार लटक गयी हैए हालांकि कुछ समय पूर्व एक महिला कॉन्टेम्प्लिबल ने उनपर तमाम तरह के आरोप लगाए थे, लेकिन बाद में मामला दब गया। दूसरी ओर प्रभारी निरीक्षक इस सारे मामले से इनकार करते हैं।

झांसी, कानपुर एवं चित्रकूटधाम मण्डल बाँदा की रबी उत्पादकता गोष्ठी के आयोजन

बाँदा। आयुक्त चित्रकूटधाम मण्डल बाल कृष्ण त्रिपाठी की अध्यक्षता में मयूर भवन सभागार में आगामी 08 अक्टूबर, 2024 को झांसी, कानपुर एवं चित्रकूटधाम मण्डल बाँदा की रबी उत्पादकता गोष्ठी के आयोजन की तैयारी के संबंध में बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में आयुक्त ने रानी दुर्गावती मैडिकल कॉलेज बाँदा में आयोजित होने वाली रबी गोष्ठी हेतु कृषि विभाग एवं संबंधित विभागों के अधिकारियों को सभी तैयारियाँ समय से पूर्ण किये जाने के निर्देश दिये। किसानों के पंजीकरण के लिए अलग,अलग काउन्टर बनाये जाने तथा कृषि एवं एनआरएलएम से संबंधित स्टालों के लिए स्थान चिन्हित कर लगवाये जाने के निर्देश दिये। साफसफाई व्यवस्था एवं मोबाइल ट्व्यालेट हेतु अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका बाँदा एवं जिला पंचायत राज अधिकारी को निर्देश दिये। कार्यक्रम स्थल पर जनसेट, साउण्ड एवं अन्य सभी आवश्यक व्यवस्थायें समय से कार्याय जाने के निर्देश कृषि विभाग के संयुक्त



सीओ ट्रैफिक को समुचित व्यवस्था करने के निर्देश दिये। जल संस्था द्वारा पानी के टैंकों तथा स्वास्थ्य विभाग द्वारा एम्बुलेन्स सहित चिकित्सा काउन्टर भी लगाये जाने के निर्देश दिये। विद्युत विभाग के अधिकारी नगर पालिका बाँदा को समुचित व्यवस्था किये जाने तथा अग्निशमन सुरक्षा हेतु अग्निशमन अधिकारी को व्यवस्था करने के निर्देश दिये। कार्यक्रम स्थल पर जनसेट, साउण्ड एवं अन्य सभी आवश्यक व्यवस्थायें समय से कार्याय जाने के निर्देश कृषि विभाग के संयुक्त

निदेशक को दिये। रबी उत्पादन गोष्ठी में चित्रकूटधाम मण्डल बाँदा के 300 किसान, हमीरपुर, चित्रकूट एवं महोबा के 100,100 किसान प्रतिभाग करेंगे। रबी गोष्ठी में किसानों को कृषि वैज्ञानिकों द्वारा महत्वपूर्ण जानकारी दिये जाने हेतु तकनीकी सत्र का आयोजन किया जायेगा। क्षेत्रीय भ्रमण के लिए प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, खेत,तालाब कार्यक्रम, जल,जीवन मिशन तथा आईएफएस के कार्यों की तैयारी भी रखने के निर्देश सम्बन्धित विभागों के अधिकारियों को दिये।

कैदियों को गरिमा के साथ जीने का अधिकार है : न्यायालय

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने कहा है कि कैदियों को भी गरिमा के साथ जीने का अधिकार है और कैदियों को इस अधिकार से वंचित रखना उपनिवेशवादी एवं पूर्व-औपनिवेशिक तंत्र की याद दिलाता है। प्रधान न्यायाधीश डी. वार्ड. चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जे. बी. पाद्रीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने बृहस्पतिवार को यह टिप्पणी उस वक्त की जब न्यायालय ने जेलों में कैदियों के बीच जाति के आधार पर काम के बंटवारे, अलग अलग बैक की व्यवस्था और गैर अभिसूचित जनजातियों एवं आदतन अपराधियों को लेकर पूर्वाग्रह पर रोक के संबंध में अपना फैसला सुनाया। शीर्ष अदालत ने उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, मध्यप्रदेश, आंध्र प्रदेश, ओडिशा, केरल, महाराष्ट्र, कर्नाटक और हिमाचल प्रदेश समेत 10 राज्यों की जेल नियमावली में आपत्तिजनक नियमों को असंवैधानिक करार दिया।

प्रधान न्यायाधीश ने पीठ की ओर

से 148 पृष्ठों का फैसला लिखते हुए संविधान के अनुच्छेद 14 (समानता), 15 (भेदभाव का निषेध), 17 (अस्पृश्यता का उन्मूलन), 21 (जीवन एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार) और 23 (जब्तन श्रम के खिलाफ अधिकार) के तहत मौलिक अधिकारों पर चर्चा की। न्यायालय ने अनुच्छेद 21 का जिक्र करते हुए कहा, गरिमा के साथ जीने का अधिकार कैदियों पर भी लागू होता है। कैदियों को सम्मान नहीं देना उपनिवेशवादी और पूर्व-औपनिवेशिक तंत्रों की याद दिलाता है, जहां राष्ट्र के अधीन रहने वालों के साथ अमानवीय व्यवहार तथा उन्हें अपमानित करने के लिए दमनकारी प्रणालियां तैयार की गई थीं।

प्रधान न्यायाधीश ने कहा, संविधान लागू होने से पूर्व के शासन ने जेलों को न केवल कैद रखने के स्थान के रूप में देखा, बल्कि वर्चस्व के साधन के रूप में भी देखा। इस न्यायालय ने संविधान द्वारा लाए गए बदले हुए कानूनी ढांचे पर ध्यान

केंद्रित करते हुए माना है कि कैदियों को भी गरिमा के साथ जीने का अधिकार है।

अनुच्छेद 14 के संबंध में न्यायालय ने कहा कि राज्य किसी भी व्यक्ति को कानून के समक्ष समानता या भारत के राज्यक्षेत्र में कानूनों के समान संरक्षण से वंचित नहीं करेगा तथा समानता संवैधानिक दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण पहलू है। उन्होंने कहा, अनुच्छेद 14 के तहत न्यायालय द्वारा निर्धारित संवैधानिक मानकों को इस प्रकार संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है। सबसे पहले, अगर इसमें स्पष्ट अंतर है और वांछित उद्देश्य के साथ उचित संबंध है तो संविधान वगैरुकरण की अनुमति देता है। दूसरा,

केवल निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए वगैरुकरण परीक्षण को गणितया सूत्र के रूप में लागू नहीं किया जा सकता है...। इसके बाद फैसले में अनुच्छेद 15 पर बात की गई जो जाति, वर्ण, धर्म, भाषा आदि के आधार पर भेदभाव को प्रतिबंधित करता है।

न्यायालय ने कहा, अगर राज्य स्वयं किसी नागरिक के विरुद्ध किसी भी आधार पर भेदभाव करता है, तो यह सर्वोच्च स्तर का भेदभाव है। आखिरकार, राज्य से भेदभाव को रोकने की अपेक्षा की जाती है न कि उसे कायम रखने की। इसलिए हमारा संविधान राज्य को किसी भी नागरिक के विरुद्ध भेदभाव करने से रोकता है। शीर्ष अदालत ने कहा कि भेदभाव निषिद्ध है, क्योंकि इसका मानव जीवन पर कई तरह से प्रभाव पड़ता है और यह किसी व्यक्ति या समूह के प्रति श्रेष्ठता या हीनता, पूर्वाग्रह, अवमानना या घृणा की भावना के कारण उत्पन्न होता है।

प्रधान न्यायाधीश ने कहा, इतिहास में इस तरह की भावनाओं ने कुछ समुदायों के नरसंहार को जन्म दिया। जिस व्यक्ति के साथ भेदभाव किया जाता है, इससे उसके आम-सम्मान को भी ठेस पहुंचती है। यह अवसरों के अनुचित हनन और लोगों के एक समूह के खिलाफ निरंतर हिंसा

का कारण बन सकता है। समाज के वंचित वर्ग से किसी व्यक्ति का लगातार उपहास उड़ाने का अपमानित करके भी भेदभाव किया जा सकता है। यह उस व्यक्ति के लिए बहुत पीड़ादायक होता है जो आजीवन उसे प्रभावित कर सकता है।

प्रधान न्यायाधीश ने कहा, भारत के संविधान के लागू होने से पहले बनाए गए भेदभावपूर्ण कानूनों की जांच की जानी चाहिए और उन्हें समाप्त किया जाना चाहिए। न्यायालय ने अनुच्छेद 17 पर कहा कि यह अस्पृश्यता को प्रतिबंधित करता है और किसी भी रूप में इसका प्रचलन निषिद्ध है। अस्पृश्यता की वजह से किसी को भी अयोग्य ठहराना कानून के अनुसार दंडनीय अपराध होगा और इस प्रावधान का संविधान में विशेष स्थान है क्योंकि यह सामाजिक रूप से भेदभाव के चलन को समाप्त करता है। पीठ ने कहा, अनुच्छेद 17 में कहा गया है कि सभी लोग जन्म से समान होते हैं।

ध्वस्तीकरण संबंधी आदेश की अवमानना हुई तो हम ढांचे को बहाल करने के लिए कहेंगे

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को कहा कि यदि उसने पाया कि गुजरात के अधिकारियों ने संपत्ति के ध्वस्तीकरण संबंधी उसके आदेश की अवमानना की है तो वह उन्हें तोड़े गए ढांचों को फिर से बहाल करने के लिए कहेंगा। न्यायमूर्ति बी आर गवई और न्यायमूर्ति के वी विश्वनाथन की पीठ शीर्ष अदालत के 17 सितंबर के आदेश के कथित उल्लंघन के लिए अवमानना कार्यवाही शुरू करने की अपील वाली याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें कहा गया था कि देशभर में अपराध के आरोपियों सहित अन्य लोगों की संपत्तियों का बिना शीर्ष अदालत की अनुमति के ध्वस्तीकरण नहीं किया जाएगा।

याचिकाकर्ता समस्त पाटनी मुस्लिम जमात की ओर से पेश वरिष्ठ वकील संजय हेगड़े ने कहा कि शीर्ष अदालत के आदेश के बावजूद गुजरात में अधिकारियों ने ढांचों को ध्वस्त कर दिया है। गुजरात के

अधिकारियों की ओर से पेश सॉलिडिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि ढांचे समुद्र से सटे हुए और सोमनाथ मंदिर से लगभग 340 मीटर की दूरी पर थे। मेहता ने कहा, यह न्यायालय द्वारा निर्धारित अपवाद के अंतर्गत आता है। पिछले महीने अपने आदेश में उच्चतम न्यायालय ने कहा था, हम स्पष्ट करते हैं कि अगर किसी सार्वजनिक स्थान जैसे कि सड़क, फुटपाथ, रेलवे लाइन या नदी अथवा किसी जल निकाय से सटी कोई अनाधिकृत संरचना है तो हमारा आदेश लागू नहीं होगा। इसके बजाय अलावा ऐसे मामलों में जहां किसी अदालत द्वारा तोड़फोड़ का आदेश दिया गया हो, वहां भी हमारा आदेश लागू नहीं होगा। पीठ ने शुक्रवार को सुनवाई के दौरान कहा, अगर हमें लगता है कि वे हमारे आदेश की अवमानना कर रहे हैं, तो हम न केवल उन्हें जेल भेजेंगे बल्कि हम उनसे यह सब बहाल करने के लिए भी कहेंगे।

करागारों में जाति आधारित भेदभाव पर प्रतिबंध संबंधी न्यायालय का फैसला स्वागत योग्य: माकपा

नई दिल्ली। माकपा ने करागारों में जाति आधारित भेदभाव पर प्रतिबंध लगाने संबंधी उच्चतम न्यायालय के फैसले का शुक्रवार को स्वागत किया और राज्यों से इसे लागू करने के लिए कदम उठने की मांग की। प्रधान न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली तीन न्यायाधीशों की पीठ विव्यथा के निर्णय घृणित जाति व्यवस्था के खिलाफ अत्यंत आवश्यक लड़ाई में न्यायपालिका की ओर से किया गया एक महत्वपूर्ण हस्तक्षेप है। कैदियों को भी सम्मान के साथ जीने का अधिकार है और विभिन्न करागारों की निरामवातियों और कानूनों में जातिगत पूर्वाग्रह और अलगवा की अनुमति देने वाली प्रावधानों को असंवैधानिक करार दिया। माकपा सभी राज्यों से मांग करती है कि शीर्ष अदालत द्वारा दिए गए सुझावों को तीन महीने के भीतर लागू करने के लिए कदम उठाए ताकि करागारों में जाति आधारित भेदभाव को समाप्त किया जा सके।

पेज 1 का शेष

महाराष्ट्र विस...

की स्थिति बनी रही। घटना दोपहर करीब 12.40 बजे हुई। जिरवाल ने, उनके साथी राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) विधायक किरण लहामटे और भाजपा आदिवासी सांसद हेमंत सवार उन लोगों में शामिल थे, जिन्होंने तीसरी मंजिल से दूसरी मंजिल पर लगे सुरक्षा जाल पर छलांग लगाई। यह घटना स्थल पर पहले भी आत्महत्या के प्रयासों के जवाब में एहतियात के तौर पर की गई थी। इस विरोध प्रदर्शन में सतारूढ़ महायुति गठबंधन के दो विधायक और एक सांसद शामिल थे, जिसने आदिवासी मुद्दों से निपटने के सरकार के तरीके को लेकर बढ़ते तनाव को उजागर किया।पुलिस कर्मियों द्वारा इन नेताओं को जाल से हटाने के बाद, ये आदिवासी प्रतिनिधि ग्राउंड फ्लोर के गलियारे में एकत्र हुए और यह दावा करते हुए धरना शुरू कर दिया कि मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे कोटा मुद्दे पर चर्चा करने के लिए उनसे नहीं मिल रहे हैं। राज्य में धनगर या चरवाहा सप्तदशय आरक्षण के उद्देश्य से एएटी श्रेणी में शामिल किए जाने की मांग कर रहा है। लेकिन जिरवाल और अन्य आदिवासी नेता इस मांग का विरोध कर रहे हैं। पत्रकारों से

तेलंगाना: नृत्य निर्देशक जानी मास्टर को अंतरिम जमानत मिली

भाषा। हैदराबाद

अपने साथ काम करने वाली एक महिला का कथित तौर पर यौन उत्पीड़न करने को लेकर पिछले महीने गिरफ्तार किए गए नृत्य निर्देशक जानी मास्टर को हैदराबाद की एक अदालत ने अंतरिम जमानत दे दी है। अदालत ने बृहस्पतिवार को जानी मास्टर को छह अक्टूबर से 10 अक्टूबर तक अंतरिम जमानत दी, जिनका असली नाम शैक जानी बाशा है। अगले हफ्ते दिल्ली में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय फिल्म पुस्कार समारोह में शामिल होने के लिए जमानत अर्जी दायर की थी। पुलिस के एक अधिकारी ने कहा कि उन्हें 10 अक्टूबर को अदालत में पेश होने का निर्देश दिया गया है। जानी मास्टर को 19 सितंबर को साइबरबाद पुलिस ने गोवा में हिरासत में लिया था और हैदराबाद लाई थी तथा शहर की एक अदालत में पेश किया था जिसने उन्हें 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया था।

महिला ने जानी मास्टर की सहायक नृत्य निर्देशक के रूप में काम किया था।

महिला ने पुलिस में दी एक शिकायत में आरोप लगाया था कि जानी मास्टर ने काम के सिलसिले में 2020 में की गई मुंबई की यात्रा के दौरान उसका यौन उत्पीड़न किया था और बाद में भी उसका यौन शोषण किया।

महिला को जानी मास्टर ने इस बारे में किसी को भी बताया पर गंभीर अंजाम धुगताने की धमकी थी। नर्सिंगी पुलिस थाने में, 15 सितंबर को भारतीय दंड संहिता की धारा 376(2)(एन), 506, 323 के तहत एक मामला दर्ज किया गया था। महिला के बयान दर्ज कराने के दौरान यह खुलासा हुआ कि कथित घटना के वक्त वह नाबालिग थी। इसलिए, मामले में (पॉसको) अधिनियम की धारा भी जोड़ी गई। पीड़िता के बयान के अनुसार, आरोपी ने 2020 से उसके साथ विभिन्न स्थानों -- पीड़िता के घर सहित शूटिंग स्थलों पर कई बार यौन उत्पीड़न किया। साथ ही, आरोपी ने उसके साथ शादी करने के लिए उस पर दबाव भी बनाया।

कोलकाता। कलकत्ता उच्च न्यायालय आरजीकर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल की पीड़िता का कथित तौर पर नाम उजागर करने के लिए कोलकाता के पूर्व पुलिस आयुक्त विनीत गोयल के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने की अनुरोध वाली जनहित याचिका पर सोमवार को सुनवाई करेगा। नौ अगस्त को आर जी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल की चिकित्सक के साथ डॉ.अरुण सिंह उसकी हत्या की घटना के समय गोयल कोलकाता पुलिस के आयुक्त थे और अब पश्चिम बंगाल पुलिस के विशेष कार्य बल (एसटीएफ) के अतिरिक्त महानिदेशक (एडीजी) के रूप में तैनात है। उच्च न्यायालय के समक्ष एक याचिका दायर की गई जिसमें दावा किया गया कि गोयल ने जारी दिशा-निर्देशों का उल्लंघन करते हुए पीड़िता का नाम उजागर किया।

अदालत के समक्ष जनहित याचिका पेश करते हुए वरिष्ठ अधिवक्ता महेश जेटमलानी ने कहा कि याचिकाकर्ता ने पीड़िता की पहचान थी। उच्च न्यायालय के प्राथमिकी के बाद करने अनुरोध किया है। याचिकाकर्ता कलकत्ता उच्च न्यायालय में वकील हैं। जेटमलानी ने मुख्य न्यायाधीश टी एस

शिवज्ञानम की अध्यक्षता वाली खंडपीठ को अवगत कराया कि आर जी कर अस्पताल मामले का स्वतः संज्ञान लेकर सुनवाई कर रहे उच्चतम न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि इस मामले पर सुनवाई उच्च न्यायालय कर सकता है।

पीठ में न्यायमूर्ति बिबास पटनायक भी शामिल हैं। पीठ ने कहा कि इस जनहित याचिका को सुनवाई के वास्ते सोमवार के लिए सूचीबद्ध किया गया है। शीर्ष अदालत के साथ-साथ उच्च न्यायालय ने भी पीड़िता की पहचान उजागर नहीं करने के निर्देश दिए थे। राज्य के जूनियर डॉक्टर घटना के तुरंत बाद हड़ताल पर चले गए थे और इस दौरान उन्होंने पीड़िता के लिए न्याय, कार्यस्थल पर सुरक्षा और कोलकाता पुलिस के तुरंत बंद करने के हटाने आदि की मांग भी की थी। उच्च न्यायालय ने इस मामले पर कई जनहित याचिकाओं पर सुनवाई के बाद मामले की जांच कोलकाता पुलिस से लेकर केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) को सौंप दी थी। इन जनहित याचिकाओं में पीड़िता के माता-प्राथमिकी दर्ज करने अनुरोध किया है। अपनी बेटी की मौत की निष्पक्ष जांच की मांग की थी।

विनीत गोयल पर प्राथमिकी दर्ज करने संबंधी याचिका पर सोमवार को सुनवाई होगी

अदालत ने मंडोली जेल से स्थानांतरण के खिलाफ टग सुकेश चंद्रशेखर की याचिका खारिज की

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने कई आपराधिक मामलों में अभियोजन का सामना कर रहे कथित टग सुकेश चंद्रशेखर की याचिका को स्वीकार करने से इनकार कर दिया, जिसमें जेल अधिकारियों को यह निर्देश देने का अनुरोध किया गया था कि उसे मंडोली जेल से यहां किसी अन्य जेल में स्थानांतरित न किया जाए। आरोपी ने दलील दी कि वह विभिन्न बीमारियों से ग्रस्त है और उसे उपचार के लिए सफदर्जंग एवं राम मनोहर लोहिया अस्पतालों में ले जाया गया था तथा स्थानांतरण से उसके चिकित्सा उपचार में बाधा उत्पन्न होगी।

उच्च न्यायालय ने माना कि जो उपचार वह करा रहा है, वह उसे अन्य जेल परिसरों में भी आसानी से उपलब्ध कराया जा सकता है। न्यायमूर्ति नीना बंसल कृष्णा ने कहा, इसलिए, यह देखते हुए कि

इलाज बाहरी अस्पतालों में चल रहा है, वह उसे अन्य जेल परिसरों में आसानी से उपलब्ध कराया जा सकता है, इस अदालत को प्रशासनिक कारणों से आवश्यक होने पर याचिकाकर्ता को अन्य जेलों में स्थानांतरित न करने के निर्देश जारी करने की कोई आवश्यकता नहीं लगती है। अदालत ने हालांकि कहा कि यदि चंद्रशेखर को इस जेल से किसी अन्य जेल में स्थानांतरित किया जाता है तो उसे तीन दिन पहले सूचना दी जानी चाहिए।

न्यायालय ने कहा कि चिकित्सा स्थिति रिपोर्ट से स्पष्ट है कि आरोपी को उसकी शारीरिक बीमारियों के कारण सफदर्जंग और राम मनोहर लोहिया (आरएमएल) अस्पतालों में ले जाया गया तथा आवश्यकता पड़ने पर उसे उच्चतर केंद्रों में भी ले जाया गया। अदालत ने कहा कि उनकी शारीरिक बीमारियों के लिए उनका

ध्वस्तीकरण संबंधी आदेश की अवमानना हुई तो हम ढांचे को बहाल करने के लिए कहेंगे: न्यायालय

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को कहा कि यदि उसने पाया कि गुजरात के अधिकारियों ने संपत्ति के ध्वस्तीकरण संबंधी उसके हालिया आदेश की अवमानना करने वाला कृत्य किया है तो वह उन्हें तोड़े गए ढांचों को फिर से बहाल करने के लिए कहेंगा। न्यायमूर्ति बी आर गवई और न्यायमूर्ति के वी विश्वनाथन की पीठ शीर्ष अदालत के 17 सितंबर के आदेश के कथित उल्लंघन के लिए अवमानना कार्यवाही शुरू करने की अपील वाली याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें कहा गया था कि देशभर में अपराध के आरोपियों सहित अन्य लोगों की संपत्तियों का बिना शीर्ष अदालत की अनुमति के ध्वस्तीकरण नहीं किया जाएगा। पीठ ने गुजरात में सोमनाथ मंदिर के पास ध्वस्तीकरण पर यथास्थिति का आदेश पारित करने से इनकार कर दिया। गुजरात में अधिकारियों ने गिर सोमनाथ जिले में 28 सितंबर को सोमनाथ मंदिर के पास सरकारी भूमि पर अतिक्रमण हटाने के लिए एक ध्वस्तीकरण अधिनियम चलाया था। प्रशासन ने कहा था कि अभियान के दौरान धार्मिक ढांचों और कंक्र्रीट के घरों को ध्वस्त कर दिया गया जिससे 60 करोड़ रुपए मूल्य की लगभग 15 हेटेयर सरकारी भूमि मुक्त हो गई। याचिकाकर्ता समस्त शीर्ष मुस्लिम जमात की ओर से पेश वरिष्ठ वकील संजय हेगड़े ने कहा कि पीठ अदालत के आदेश के बावजूद गुजरात में अधिकारियों ने ढांचों को ध्वस्त कर दिया है। गुजरात के अधिकारियों की ओर से पेश सॉलिडिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि ढांचे समुद्र से सटे हुए और सोमनाथ मंदिर से लगभग 340 मीटर की दूरी पर थे। मेहता ने कहा, यह न्यायालय द्वारा निर्धारित अपवाद के अंतर्गत आता है। पिछले महीने अपने आदेश में उच्चतम न्यायालय ने कहा था, हम स्पष्ट करते हैं कि अगर किसी सार्वजनिक स्थान जैसे कि सड़क, फुटपाथ, रेलवे लाइन या नदी अथवा किसी जल निकाय से सटी कोई अनधिकृत संरचना है तो हमारा आदेश लागू नहीं होगा। इसके अलावा ऐसे मामलों में जहां किसी अदालत द्वारा तोड़फोड़ का आदेश दिया गया हो, वहां भी हमारा आदेश लागू नहीं होगा। पीठ ने शुक्रवार को सुनवाई के दौरान कहा, अगर हमें लगता है कि वे हमारे आदेश की अवमानना कर रहे हैं, तो हम न केवल उन्हें जेल भेजेंगे बल्कि हम उनसे यह सब बहाल करने के लिए भी कहेंगे। याचिका पर कोई नोटिस जारी किए बिना पीठ ने मेहता से जवाब दाखिल करने के लिए कहा और मामले की अगली सुनवाई के लिए 16 अक्टूबर को तिथि तय की। वरिष्ठ अधिवक्ता हेगड़े ने कहा कि वहां (वह क्षेत्र जहां ध्वस्तीकरण किया गया था) लोगों को जारी किए गए नोटिस में किसी भी तरह के तोड़फोड़ किए जाने की बात नहीं थी, लेकिन 28 सितंबर को ध्वस्तीकरण अभियान चलाया गया। उन्होंने कहा कि 57 एकड़ में फैले क्षेत्र में 45 घर, 10 मस्जिद और पांच दरगाहें शामिल थीं।

न्यायालय ने एमसीडी स्थाई समिति के चुनाव कराने में दिल्ली के उपराज्यपाल की जल्दबाजी पर सवाल उठाए

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) की स्थाई समिति के छठे सदस्य के चुनाव के वास्ते कार्यकारी शक्तियों का प्रयोग करने में उपराज्यपाल कार्यालय की ओर से की गई अत्यधिक जल्दबाजी पर शुक्रवार को सवाल उठाया। न्यायमूर्ति पी. एस. नरसिम्हा और न्यायमूर्ति व.म. मदनवन की पीठ ने उपराज्यपाल कार्यालय से कहा कि वह स्थाई समिति के अध्यक्ष पद का चुनाव तब तक न करए जब तक वह (न्यायालय) 27 सितंबर को हुए स्थाई समिति चुनाव के खिलाफ महापौर शैली ओबेरॉय की याचिका पर सुनवाई न कर ले। पीठ ने उपराज्यपाल कार्यालय की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता संजय जैन से कहा, यदि आप एमसीडी स्थाई समिति के अध्यक्ष के लिए चुनाव करते हैं तो हम इसे गंभीरता से लेंगे। पीठ ने कहा कि उपरुक्षत में वह इस याचिका पर विचार करने की इच्छुक नहीं थी, लेकिन उपराज्यपाल की. के. सक्सेना द्वारा दिल्ली नगरपालिका अधिनियम की धारा 487 के तहत अपनी शक्तियों का इस्तेमाल करने के निर्णय के कारण उसे नोटिस जारी करना पड़ा। पीठ ने उपराज्यपाल कार्यालय से कहा, यदि आप दिल्ली नगर निगम अधिनियम की धारा 487 के तहत कार्यगारों का इस्तेमाल करना शुरू करते हैं तो लोकतंत्र खतरे में पड़ जाएगा। आप चुनावी प्रक्रिया में बाधा कैसे डाल सकते हैं। पीठ ने उपराज्यपाल कार्यालय से दो सप्ताह में जवाब मांगा और मामले की सुनवाई शीर्ष अदालत के दशह अवकाश के बाद निर्धारित की।

जब पूछा गया कि उन्हें इस तरह के विरोध का सहारा क्यों लेना पड़ा, तो जिरवाल ने कहा, 'मैं पहले एक आदिवासी हूं और फिर एक विधायक और एक डिप्टी स्पीकर हूं'।

परिष्करण एशिया

के बीच तेजी से बढ़ते हमलों की श्रृंखला में नवीनतम है, जिससे मध्य पूर्व में क्षेत्रव्यापी युद्ध की आशंका है। इजराइल ने कहा कि उसने कई मिसाइलों को रोक दिया, और वांशिगटन में अधिकारियों ने कहा कि अमेरिकी विध्वंसक जहाजों ने इजराइल की रक्षा में सहायता की। ईरान ने कहा कि उसकी अधिकांश मिसाइलें अपने लक्ष्य पर लगीं। किसी के हाताहत होने की तल्काल कोई रिपोर्ट नहीं है।80 वर्षीय खामेनेई ने तेहरान के मुख्य प्रार्थना स्थल मोसल्ल मस्जिद में हजारों लोगों को संबोधित करते हुए 40 मिनट के भाषण में कहा कि लगभग एक साल पहले 7 अक्टूबर, 2023 को दक्षिणी इजरायल पर हमला के नेतृत्व में किया गया हमला फिलिस्तीनी लोगों को एक वैध कार्रवाई थी। उन्होंने कहा कि मंगलवार का मिसाइल हमला अंतरराष्ट्रीय कानून, देश के कानून और इस्लामी मान्यताओं पर आधारित था।

उन्होंने अफगानिस्तान से यमन और ईरान से गाजा और यमन तक देशों से दुश्मन के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए तैयार रहने का आग्रह किया और ऐसा करते हुए मारे गए

लोगों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा, लेबनान और फिलिस्तीन में हमारे प्रतिरोधी लोग, आप बहादुर लड़के, आप वफादार और धैर्यवान लोग, ये शहादतें और जो खून बहा है, वह आपके दृढ़ संकल्प को हिला नहीं सकता बल्कि आपको और अधिक दृढ़ बनाता चाहिए। खामेनेई ने अरब देशों को संबोधित करते हुए अपना आधा भाषण अरबी में दिया। खामेनेई की शुक्रवार की नमाज में अंतिम उपस्थिति रिवोल्यूशनरी गार्ड जनरल कासिम सुलेमानी की मृत्यु के बाद हुई थी, जो 2020 में बगदाद में अमेरिकी ड्रोन हमले में मारे गए थे। खामेनेई के भाषण से पहले लेबनानी हिज्जुब्लह नेता हसन नसरल्लह की मृत्यु की संमर्धन में एक समारोह आयोजित किया गया था। राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन और शीर्ष रिवोल्यूशनरी गार्ड जनरलों सहित अधिकांश उच्च पदस्थ ईरानी अधिकारी समारोह में शामिल हुए। ईरान हिज्जुब्लह का मुख्य समर्थक है और उसने समूह को हथियार और अरबों डॉलर भेजे हैं।

वैश्विक अर्थव्यवस्था

इजरायल जवाबी कार्रवाई करता है और संभवतः उसके परमाणु और तेल संयंत्रों पर हमला करेगा। भारत 85 प्रतिशत से अधिक कच्चे तेल के आयात पर निर्भर है, जिसे पेट्रोल और डीजल जैसे ईंधन में परिवर्तित किया जाता है, और इसकी लगभग आधी गैस

की जरूरतें पूरी होती हैं। इनमें से अधिकांश मध्य पूर्व से आते हैं, और अगर इजरायल-बहादुर लड़के, आप वफादार और धैर्यवान लोग, ये शहादतें और जो खून बहा है, वह आपके दृढ़ संकल्प को हिला नहीं सकता बल्कि आपको और अधिक दृढ़ बनाता चाहिए। खामेनेई ने अरब देशों को संबोधित करते हुए अपना आधा भाषण अरबी में दिया। खामेनेई की शुक्रवार की नमाज में अंतिम उपस्थिति रिवोल्यूशनरी गार्ड जनरल कासिम सुलेमानी की मृत्यु के बाद हुई थी, जो 2020 में बगदाद में अमेरिकी ड्रोन हमले में मारे गए थे। खामेनेई के भाषण से पहले लेबनानी हिज्जुब्लह नेता हसन नसरल्लह की मृत्यु की संमर्धन में एक समारोह आयोजित किया गया था। राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन और शीर्ष रिवोल्यूशनरी गार्ड जनरलों सहित अधिकांश उच्च पदस्थ ईरानी अधिकारी समारोह में शामिल हुए। ईरान हिज्जुब्लह का मुख्य समर्थक है और उसने समूह को हथियार और अरबों डॉलर भेजे हैं।

ले जाने में कामयाबी हासिल की।

शुक्रवार सुबह करीब पांच बजे कोंडवा पुलिस थाने में शिकायत दर्ज कराई गई। राज्य विधानसभा चुनाव से ठीक पहले हुई इस घटना ने राजनीतिक विवाद का रूप ले लिया है।घटना पर अपनी तीखी प्रतिक्रिया देते हुए एनसीपी (सपा) सुप्रीमो शरद पवार ने कहा, एक तरफ, हमारे पास भाजपा के नेतृत्व वाली

सरकार द्वारा घोषित लड़की बहन योजना है, जबकि दूसरी तरफ महिलाओं पर अत्याचार हो रहे हैं। एक तरफ, लड़की बहन योजना के माध्यम से महिलाओं की वित्तीय सहायता प्रदान करने का प्रयास किया जा रहा है, वहीं दूसरी तरफ महिलाओं पर बढ़ते अत्याचारों के कारण लोगों में काफी गुस्सा है।' विधानसभा में विपक्ष के नेता विजय वडेठ्वीर ने कहा, राज्य विधानसभा चुनावों से पहले, मुख्यमंत्री और दो उपमुख्यमंत्री खुद को भाऊ और दोपुत्र के रूप में ब्रांड करने में लगे हुए हैं और दूसरी तरफ, पिछले दो दिनों में पुणे में महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार की चौकाने वाली घटनाएं सामने आई हैं। वडेठ्वीरवार की भाई, भाऊ और दादा टिप्पणी मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडुनवीस और अजीत पवार के संदर्भ में की गई थी।

याचिकाकर्ताओं सहित कई याचिकाओं पर सुनवाई के दौरान यह आदेश पारित किया।

पुणे में ...

ले जाने में कामयाबी हासिल की। शुक्रवार सुबह करीब पांच बजे कोंडवा पुलिस थाने में शिकायत दर्ज कराई गई। राज्य विधानसभा चुनाव से ठीक पहले हुई इस घटना ने राजनीतिक विवाद का रूप ले लिया है।घटना पर अपनी तीखी प्रतिक्रिया देते हुए एनसीपी (सपा) सुप्रीमो शरद पवार ने कहा, एक तरफ, हमारे पास भाजपा के नेतृत्व वाली

सरकार द्वारा घोषित लड़की बहन योजना है, जबकि दूसरी तरफ महिलाओं पर अत्याचार हो रहे हैं। एक तरफ, लड़की बहन योजना के माध्यम से महिलाओं की वित्तीय सहायता प्रदान करने का प्रयास किया जा रहा है, वहीं दूसरी तरफ महिलाओं पर बढ़ते अत्याचारों के कारण लोगों में काफी गुस्सा है।' विधानसभा में विपक्ष के नेता विजय वडेठ्वीर ने कहा, राज्य विधानसभा चुनावों से पहले, मुख्यमंत्री और दो उपमुख्यमंत्री खुद को भाऊ और दोपुत्र के रूप में ब्रांड करने में लगे हुए हैं और दूसरी तरफ, पिछले दो दिनों में पुणे में महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार की चौकाने वाली घटनाएं सामने आई हैं। वडेठ्वीरवार की भाई, भाऊ और दादा टिप्पणी मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडुनवीस और अजीत पवार के संदर्भ में की गई थी।

ऐतिहासिक कश्मीरी ...

ऑटो रिक्शा व बसों की अवैध पार्किंग के कारण ट्रैफिक जाम की समस्या सबसे ज्यादा रहती है। उन्होंने कहा कि इसके अलावा आईएसबीटी कश्मीरी गेट, मेड्रो स्टेशन के आसपास भी अतिक्रमण है, जिससे यहां ट्रैफिक जाम रहता है। वर्मा के मुताबिक अतिक्रमण हट जाए और ऑटो

रिक्शा व निजी वाहनों को नियंत्रित कर दिया जाए तो समस्या का समाधान हो जाएगा। परिवहन विभाग के अधिकारियों के मुताबिक दिल्ली सरकार ने कई नीतियां लागू कर अंतरराज्यीय बस टर्मिनल (आईएसबीटी) के आसपास ट्रैफिक जाम कम करने के लिए कदम उठाए हैं। इसके तहत अब निजी और सरकारी अंतरराज्यीय सड़क किनारे अवैध रूप से पार्क करने से रोका जा सके, जिससे ट्रैफिक जाम होता है। इसके अलावा बसों को पूर्व निर्धारित दर पर 25 मिनट का निश्चित पार्किंग समय दिया जाएगा। अगर कोई बस इस अवॉरिंट समय से अधिक खड़ी होगी तो उससे अतिरिक्त शुल्क लिया जाएगा। अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए प्ला फास्टेज वाली बसों को टर्मिनल में प्रवेश की अनुमति नहीं दी जाएगी। दिल्ली में तीन आईएसबीटी हैं - कश्मीरी गेट, आनंद विहार और सराय काले शौ। राज निवास के अधिकारियों ने कहा कि आईएसबीटी के बाहर यातायात की भीड़ कम हो गई है, और आईएसबीटी के ज्यादातर इस्तेमाल को रोकने के लिए यातायात की भीड़ को रोकने के लिए यातायात के आसपास लॉक डाउन सत्रों को हटा दिया है। दिल्ली में रोशना रोड एक महीने से अधिक समय तक यातायात और पैदल चढ़ने वालों के लिए बंद रहगा, शुक्रवार को एक एडवाइजरी में कहा गया।

कांग्रेस ने पूरे उत्तर भारत को मादक पदार्थों का केंद्र बनाया था : शाह

भाषा। अहमदाबाद

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने दिल्ली में मादक पदार्थ की जन्मी को लेकर शुक्रवार को कांग्रेस पर हमला बोला और आरोप लगाया कि 2014 से पहले जब वह (कांग्रेस) सत्ता में थी, तो उसने पूरे उत्तर भारत को अवैध मादक पदार्थ व्यापार का केंद्र बना दिया था पुलिस ने इस सप्ताह की शुरुआत में दिल्ली में मादक पदार्थ सबसे बड़ी खेप की बरामदगी के तहत 560 किलोग्राम कोकोन और 40 किलोग्राम हाइड्रोपोनिक मारिजुआना जब्त किया, जिसकी अनुमानित कीमत लगभग 5,620 करोड़ रुपए है।गांधीनगर जिले के मनसा कस्बे में एक सभा को संबोधित करते हुए शाह ने कहा कि गिरफ्तार आरोपी तुषार गोयल दिल्ली युवा कांग्रेस के आरटीआई प्रकोष्ठ का अध्यक्ष है। पिछले 10 वर्षों के दौरान की गई जर्नियों के बारे में आंकड़े देते हुए शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2014 में पदभार संभालने के तुरंत बाद मादक पदार्थ मुक्त भारत



अभियान शुरू किया था। शाह ने कहा, दो दिन पहले दिल्ली में 5,600 करोड़ रुपए का मादक द्रव्य बरामद किया गया। जब कांग्रेस 2004 से 2014 के बीच केंद्र की सत्ता में थी, तब देशभर में करीब 1.52 लाख किलोग्राम मादक द्रव्य जब्त किया गया था। लेकिन हमारे मादक पदार्थ विरोधी अभियान को बढ़ाैत हमने 2014 से 2024 तक 10 वर्षों में 5.43 लाख किलोग्राम ड्रग्स जब्त किया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के 10 साल

के शासन के दौरान 768 करोड़ रुपए के मादक पदार्थ जब्त किए गए, जबकि 2014 से भाजपा शासन के तहत इतने ही वर्षों में 27,600 करोड़ रुपए के मादक द्रव्य जब्त किए गए। शाह ने पूछा, मैं सोच रहा था कि इन सरकारों के कार्यकाल में हुई जर्नियों में इतना अंतर क्यों है। जांच में पता चला कि मुख्य आरोपी तुषार गोयल, जिसे गिरफ्तार किया गया है, दिल्ली कांग्रेस के आरटीआई प्रकोष्ठ का अध्यक्ष है। क्या किसी राजनीतिक

क्या ड्रग तस्कट के भाजपा नेताओं से संबंध के बारे में बताएं
गृह मंत्री: कंग्रेस
नई दिल्ली। खगोस ने राष्ट्रीय राजधानी से 5,600 कटोड़ टमा से अधिक मूल्य के मादकपदार्थ की जर्नी के मामले ने गृह मंत्री अमित शाह के हमले पर पलटवार करते हुए शुक्रवार को उन पर असत्य बोलने का आरोप लगाया और सवाल किया किया वह ड्रग तस्कट के भाजपा नेताओं से संबंध के बारे में बताएंगे। पार्टी के नीडिया विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने मादकपदार्थ जर्नी के मामले ने मुख्य आरोपी की भाजपा के कुछ नेताओं के साथ वरिष्ठ तस्करी साझा करते हुए गृह मंत्री पर पलटवार किया। गृह मंत्री अमित शाह ने राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से 5,600 कटोड़ टमा से अधिक मूल्य के मादकपदार्थ की जर्नी के मामले ने खगोस के एकपूर्व पदाधिकारी की सल्लिगता को लेकर शुक्रवार को उस पर निशाना साधा और कस कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार जहल युवाओं को खोल, शिया और नवोन्मेष की ओर ले जा रही है, वही, प्रमुख विपक्षी दल ऊहे मादक पदार्थ की अडेरी दुनिया ने ले जाना चाहता है।शाह ने कस पर एक पोस्ट ने कस, एक ओर जहल मोदी सरकार नशासुवत भारत के लिए कई न बर्दाश्त करने की नीति अपना रही है, वही उतर भारत से पकड़ी गई ड्रग्स की 5,600 कटोड़ टमा की खेप के सल्लिगले ने खगोस के एक प्रमुख व्तिवित की सल्लिगता बेहद खतरनाक और शर्मनाक है। गृह मंत्री के इस पोस्ट को टीएस्ट करते हुए खेड़ा ने कस, क्या वह इस डा तस्कट का भाजपा नेताओं से कनेक्शन बताएंगे? उन्होंने शाह पर असत्य बोलने का आरोप भी लगाया। खगोस महासचिव जयराम शोश ने कटथ जस्ते हुए कस कि गृह मंत्री, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से आगे निकलने की कोशिश कर रहे है। दिल्ली पुलिस ने हाल ने ही राष्ट्रीय राजधानी से 560 किलोग्राम से अधिक कोकीन और 40 किलोग्राम हाइड्रोपोनिक मारिजुआना जब्त किया था, जिसकी अनुमानित कीमत करीब 5,620 कटोड़ टमा है। दिल्ली पुलिस के विशेष प्रकोष्ठ ने दक्षिण दिल्ली के जहाियालपुर से चार लोगों को पकडा था और उनके पास से 602 किलोग्राम मादकपदार्थ की खेप जब्त की थी।

दल के लिए मादक पदार्थों का उन्मूलन करना संभव है, यदि उसके

अपने कुछ सदस्य मादक पदार्थों के व्यापार में लिप्त हों? शाह ने कहा

टाटा प्ले बिज पर देखें सबसे बड़ी ओटीटी हिट

मुंबई। टाटा प्ले बिज पर, एक सफलरिजन, एक नैशनल और एक ही ऐप के अंदर देख सकते हैं, अनन्दा पडे की ‘कॉल भी बे’। एशियन थिएटर, तनाव सीजन 2 में देखने को मिला मानव बिज और अरबाज खान का कानदार अभिनय। वहीं ताजा खबर सीजन 2, लव सिलियर, जूट एंड जूलिएट 3 ने भी इस माह मनोरंजन करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। ये सभी ओटीटी ऐप्स देखने के लिए टाटा प्ले बिज की सदस्यता में। टाटा प्ले बिज ऐपटॉपों पर एक ही सदस्यता में 30 से अधिक राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय, क्षेत्रीय ओटीटी ऐप्स और खेलों का आनंद लिया जा सकता है। 249/- रुपये प्रतिमाह में 30 से अधिक ऐप्स में से अमेजन प्राइम और डिज्नी भी 6 ऐप्स की सदस्यता मिलती है। टाटा प्ले डीटीए सदस्य डीटीएप चैनलों के साथ नेटवर्कलस की सदस्यता भी ले सकते हैं।

संभव स्टील लिमिटेड ने दाखिल किया डीआरएचपी

मुंबई। संभव स्टील ट्यूब्स लिमिटेड (एसएसटीएल या कंपनी) ने बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (सेबी) के पास अपना ड्राफ्ट रेड हेरिंश प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) दाखिल किया है। क्रिसिल रिपोर्ट के अनुसार कंपनी 31 मार्च, 2024 तक स्थापित क्षमता के मामले में भारत में इलेक्ट्रिक टैरिफेस्ट वेडेड (ईआरइस्केयू) स्टील पाइप और स्ट्रक्चरल ट्यूब (होलो सेक्शन) के प्रमुख निर्माताओं में से एक है। कंपनी ने आर्थिक सार्वजनिक निर्माण के माध्यम से इंडिटी शेयर्स (प्रत्येक का अंकित मूल्य 10) की पेशकश के माध्यम से 5,400 मिलियन (540 करोड़) तक के फंड जुटाने की योजना बनाई है। (लिस्टिंग विवरण)गुजरात वेथ मैनेजमेंट लिमिटेड और मोतीलाल ओसवाल इन्वैस्टमेंट एडवाइजर्स लिमिटेड इस इश्यू के बुक रनिंग लीड मैनेजर है।

नवरात्रि पर शुद्धता पर जोर

नई दिल्ली। नवरात्रि का नौ दिवसीय त्योहार पंजाब गिल की नवरात्रि थाली एक बेहतरीन विकल्प है, जो एक स्टाइल और संतोषजनक दावत पैदा करती है। व्रत रखने वालों या नवरात्रि के उत्साह को महसूस करने की इच्छा रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए, यह शुद्ध-शाकाहारी मेनू पूरे त्योहार के दौरान में पोषण और स्वाद का एक नैसर्गिक मिश्रण प्रदान करता है। इस नवरात्रि, पंजाब गिल के साथ उत्सव मनाएं और एक स्टाइलड यात्रा का आनंद लें, जो परंपरा, मर्ति और एकजुटता की खुशी का समान कर्ता है। पंजाब गिल के बेहद कुशल शेफ द्वारा तैयार की गई यह थाली सांत्विक सामग्री, समृद्ध बनावट और प्रामाणिक उत्सव के स्वादों के बीच एकदम सही संतुलन बनाती है। पंजाब गिल कानपुर, इंदौर, लखनऊ और अहमदाबाद में अपने रेस्तरां में विशेष शुद्ध शाकाहारी मेनू भी पेश कर रहा है।

पाइन लैक्स का कॉर्पोरेट गिरिफंटो सॉल्यूशंस

कानपुर। पाइन लैक्स के साथ साझेदारी में लॉन्च किया गया अमेजन गोल्ड वाउचर, ऐसा ही एक बेहतरीन कॉर्पोरेट गिरिफंटो सॉल्यूशन है। यह गोल्ड वाउचर अमेजन पे वी सुविधा और खेलों में निवेश को एक साथ पेश करता है। अमेजन गोल्ड वाउचर को अग्रणी फिनटेक कंपनी पाइन लैक्स प्राइवेट लिमिटेड (पाइन लैक्स) द्वारा जारी और संचालित किया जाता है। अमेजन गोल्ड वाउचर कॉर्पोरेट गिरिफंटो के क्षेत्र में एक नवोपचार प्रवर्त है। यह यूजर को पलेविडिओ, सुरक्षा प्रदान करता है, साथ ही यह उपकरणों में भी आसान है। बहद कर्नाचारियों को पुरस्कृत करना हो या ग्राहकों को प्रभावित करना हो, इन वाउचर की मदद से कारोबारियों को भी महंगे गिफ्ट प्रदान करना सरल, सुरक्षित और सुविधाजनक हो जाता है। इन वाउचर्स को पाने वाले की जरूरत के अनुसार करंटमाइज भी किया जा सकता है।

हरियाणा के लोग प्रधानमंत्री के चक्रव्यूह को तोड़ने के लिए प्रहार करेंगे : राहुल

भाषा। नई दिल्ली

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की आर्थिक नीतियों को लेकर शुक्रवार को उस पर प्रहार किया और कहा कि हरियाणा के लोग जल्द ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पूंजीवादी नीतियों के चक्रव्यूह को तोड़ने के लिए अगला प्रहार करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि हरियाणा की सत्ता में आने के बाद कांग्रेस रोजगार सृजन पर जोर देगी तथा राज्य को नशामुक्त किया जाएगा जिससे हर

रेलवे के निजीकरण का सवाल ही नहीं, किफ़ायती सेवा पर ध्यान : वैष्णव

नासिका। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने शुक्रवार को कहा कि रेलवे के निजीकरण का कोई सवाल ही नहीं है और राष्ट्रीय परिवहन सेवा प्रदाता का ध्यान सभी को किफ़ायती सेवा प्रदान करने पर है। रेल मंत्री ने यहां कहा कि इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि लोग 400 रुपए से कम खर्च में 1,000 किलोमीटर तक आराम से यात्रा कर सकें। उन्होंने यहां रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) के स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते हुए कहा, अगले पांच वर्षों में रेलवे का पूरा कायाकल्प होगा। वंदे भारत, नमो भारत जैसी ट्रेनें, कवच ट्रेन सुरक्षा तंत्र की तैनाती इस बदलाव का नेतृत्व करेंगी।

चंद्रबाबू नायडू ने तिरुमला में भगवान वेंकेटेश्वर स्वामी को शेशम की पोशाक भेंट की

तिरुपति (आंध्र प्रदेश)। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने शुक्रवार को तिरुमला हिस्स स्थित मंदिर में भगवान वेंकटेश्वर स्वामी को शर्य सस्कार की ओर से पट्टू वस्त्रालू (रेशम की पोशाक) भेंट की। वह नौ दिवसीय सालाना ब्रह्मोत्सव में भाग लेने यहां पहुंचे हैं। नायडू अपनी पत्नी भुवनेश्वरी के साथ शाम में तिरुपति पहुंचे जहां अधिकारियों ने उनका भव्य



परिवार खुशहाल होगा। हरियाणा की सभी 90 सीट के लिए शनिवार को मतदान होगा और मतगणना आठ अक्टूबर को होगी। राहुल गांधी ने एक्स पर पोस्ट किया, हाल ही में मैंने गोहाना की स्वादिष्ट लडकियों और उन्हें अधिक व्यापक रूप से बेचने की संभावना के बारे में बात की थी।

किसी भी समाज के विकास का आइना है महिला विकास : राष्ट्रपति मुर्मू



भाषा। जयपुर

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शुक्रवार को कहा कि महिलाओं का विकास किसी भी समाज के विकास का आइना है। उन्होंने बच्चों की शिक्षा पर जोर देते

हुए शुक्रवार को कहा कि शिक्षा ही विकास की कुंजी है। मुर्मू, ऐतिहासिक मानगढ़ धाम बांसवाड़ा में आदि गौरव सम्मान समारोह को संबोधित कर रही थीं उन्होंने कहा, आज आदि गौरव सम्मान प्राप्त करने

वाले सभी व्यक्तियों और संस्थाओं को मैं बहुत-बहुत बधाई देती हूं। व्यक्तिगत सम्मान प्राप्त करने वाले लोगों में महिलाओं की संख्या अधिक है। समाज की शान्ति के लिए, राजस्थान के लिए और पूरे देश के लिए गौरव की बात है। यह मैं इसलिए कह रही हूं कि महिलाओं का विकास, किसी भी समाज के विकास का आइना है। राष्ट्रपति ने कहा कि इस सम्मान समारोह से यह भी सिद्ध हुआ कि जनजाति समुदाय के लोगों में बहुमुखी क्षमता है और उन्होंने अनेक क्षेत्रों में अमूल्य योगदान दिया है।

एक्सिस वैल्यू 50 इडेक्स फंड देगा लाभ

मुंबई। एक्सिस म्यूचुअल फंड, भारत में सबसे तेजी से बढ़ते और प्रमुख फंड हाउस में से एक, अपने नए फंड ऑफर – एक्सिस निफ्टी 500 वैल्यू 50 इडेक्स फंड के लॉन्च की घोषणा करते हुए खुश है। इस ओपन-एंडेड इंडेक्स फंड का लक्ष्य निफ्टी 500 वैल्यू 50 टोटल रिटर्न इंडेक्सके प्रदर्शन को दोहराना है। नया फंड ऑफर 04 अक्टूबर, 2024 को खुलेगा और 18 अक्टूबर, 2024 को बंद होगा। इस फंड का प्रबंधन श्री कार्तिक कुमार और हितेश दास द्वारा किया जाएगा एक्सिस एक्सिस के एमडी और सीओ भी. गोपकुमार ने कहा, जब फैंक्टर निवेश की बात आती है तो भारत अभी भी एक प्रारंभिक चरण में है, इस विषय को हाल ही में निवेशकों के बीच स्वीकृति मिली है। एक्सिस म्यूचुअल फंड में, हमारा उद्देश्य हमेशा निवेशकों को अभिनव और निवेशक केंद्रित निवेश समाधान प्रदान करना रहा है। इस विश्वास को देखते हुए, हमारा नवीनतम फंड, एक्सिस निफ्टी 500 वैल्यू 50 इडेक्स फंड निवेशकों को अपेक्षाकृत कम लागत पर सही लेवल वैल्यू रणनीति में भाग लेने का सुविधाजनक तरीका प्रदान करता है।

भारत को सैन्य प्रौद्योगिकी और उत्पादन दर में चीन की बराबरी करने क जरूरत है वायुसेना प्रमुख

भाषा। नई दिल्ली

वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल ए.पी. सिंह ने शुक्रवार को कहा कि वायुसेना का लक्ष्य स्वदेशीकरण कार्यक्रम के तहत 2047 तक अपनी सभी आवश्यकताओं से जुड़े उत्पादन भारत में करना है। उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एएचएल) को आपूर्ति में देरी को पाटने के अपने वादे के अनुसार सालाना 24 तेजस विमान लड़ाकू विमानों का उत्पादन करना चाहिए भारतीय वायुसेना दिवस आठ अक्टूबर से पहले एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए एयर चीफ मार्शल ने कहा कि भारत को प्रौद्योगिकी और सैन्य उपकरणों के उत्पादन की गति के मामले में चीन के वरगवर पहुंचने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि हम अपने पड़ोसी से बहुत पीछे हैं। वायुसेना प्रमुख सिंह ने साथ



ही कहा कि भारतीय सेना विभिन्न आयुध प्रणालियों और रक्षा मशीनों को संचालित करने वाले कर्मियों सहित कर्मिकों के मामले में बहुत आगे है। उन्होंने कहा कि मुझे पुरा विश्वास है कि जहां तक जवानों का सवाल है, जहां तक मशीन के पीछे काम करने वाले लोगों का सवाल है, तो हम उनसे बहुत आगे हैं।एयर चीफ मार्शल ने कहा, जहां तक प्रौद्योगिकी का सवाल है, हमारी स्थिति उतनी अच्छी नहीं है। हम पिछड़ गए हैं। कुछ समय पहले हम प्रौद्योगिकी में उनसे बेहतर

कि मोदी के प्रधानमंत्री बनने से पहले कांग्रेस ने पूरे उत्तर भारत को, चाहे वह जम्मू-कश्मीर हो, पंजाब हो, हरियाणा हो या दिल्ली हो, मादक पदार्थ के कारोबार का केंद्र बना दिया था। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने इस कारोबार के खिलाफ निर्णायक कदम उठाए हैं। शाह ने कहा कि गुजरात में भी भाजपा सरकार ने सिर्फ तीन साल में 8,500 करोड़ रुपए का मादक पदार्थ जब्त किया है। शाह ने कहा, जिस पार्टी के सदस्य खुद मादक पदार्थों के व्यापार में लिप्त हों, वह कभी भी किसी राज्य या देश को नशे की बुराई से मुक्त नहीं कर सकती। प्रधानमंत्री के नशा मुक्त भारत के लक्ष्य को हासिल करने में सक्षम एकमात्र पार्टी भाजपा है। वह मनसा में 421 बिस्तरों वाले अस्पताल की आधारशिला रखने के बाद लोगों को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम से पहले शाह ने गांधीनगर नगर निगम की विभिन्न विकास परियोजनाओं को शुरुआत करने के बाद गांधीनगर शहर में लोगों को संबोधित किया।

विचक न्यूज
आईयूएमएल, एसडीपीआई और जमात-ए-इस्लामी कर रहे अल्पसंख्यकों का धुवीकरण : माकपा

दिलचस्पपुरमा। केरल में सतारूह नाट्यवादी कम्युनिस्ट पार्टी (नाकपा) ने शुक्रवार को आरोप लगाया कि राज्य के वरट्टपथी विचारसरण के आधार पर अल्पसंख्यकों की मोहलदी करने के लिए खगोस की सदस्यीनी इत्येनय नूयिनयन मुस्लिम लीग (आईयूएमएल), एसडीपीआई और जमात-ए-इस्लामी ने हत्य मिला लिया है। नाकपा के राज्य सचिव एम.वी.गोविन्द ने यहां आयोजित संवाददाता सम्मेलन में कस कितीन दलों के इस कदम का केरल की राजनीति पर दूरगामी असर होगा। उन्होंने आरोप लगाया कि तीनों दल राज्य ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के मजबूत होने के लिए अनुकूल परिस्थितिया पैदा कर रहे है। गोविन्द ने कस, ये अल्प संख्यकको वी वरट्टपथी मान्यताओ के आधार पर समर्पित करने के लिए सोशल डेमोरेटिक पार्टी ऑफ इंडिया (एसडीपीआई) की विचारधारा को लागू कर रहे है। इस कदम के जरिए ये केरल में भाजपा को घट बनाने के अलावा स्थिति उत्पन्न कर रहे है। उन्होंने आरोप लगाया कि आईयूएमएल, एसडीपीआई और जमात-ए-इस्लामी गत संसदीय चुनाव के बाद से सांप्रदायिकधुवीकरण की दिशा में काम कर रहे है और ये ए गतिविधिया जारी करे हुए है।

बिहार में बाढ़ से अबतक 45 लाख लोग प्रभावित, मुजफ्फरपुर के लोग राहत-कर्मों से नाखुश
पटना-मुजफ्फरपुर। बिहार में बाढ़ की स्थिति शुक्रवार को भी गंभीर बनी रही, हालांकि कई नदियों का जलस्तर कम हो गया। वहीं मुजफ्फरपुर में बाढ़ से प्रभावित कुछ लोगों ने अपार्याप्त राहत उपायों का आरोप लगाते हुए सरकार का कर देा। अधिकारियों ने यह जानकारी दी है।आरएमएल विभाग (डीएमडी) के अनुसार, बिहार में पिछले नौहैन से दो बार आई आपाव के कारण राज्य के कुू 38 में 30 जिलों के 45 लाख से अधिक लोग प्रभावित हुए है। मुजफ्फरमी नौतीश कुमार ने बाढ़ प्रभावित प्रत्यक्षअिहार केरकखाते ने 7,000 टमा की वित्तीय सहायता हस्तान्तरित करने की प्रक्रिया शुरू की। उन्होंने दरभंगा और आसपास के इलाकों में बाढ़ से प्रभावित क्षेत्रों का भी जाँचदिया किया। जल संसाधन विभाग (इस्केयूआरडी) ने एक बुलेटिन में कस, बागमती, बूढ़ी गंडक, गंडक, गंगा और कमला बलान सहित अरिचतय नदियों का जलस्तर कम हो गया है, लेकिन अब भी विभिन्न इलाकों पर ए खतरने के निशान से ऊपर बह रही है। इसमें बताया गया कि इस्केयूआरडी अलर्ट पर है और संवेदनशील स्थानों पर बाढ़ के लिए सुरक्षा संबंधित कार्य चिा जा रहे है। हालांकि, मुजफ्फरपुर जिले के औरई क्षेत्र में बाढ़ प्रभावित कुछ लोग रहत कर्मों से खुश नहीं है। उन्होंने सुरक्षाकर्मियों पर पशवार किया, मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी राष्ट्रीय राजमार्ग को घंटे जाम कसा और सड़क पर टावर लगाए। मुजफ्फरपुर की पुलिस अधीशक (गामीण) विद्या सागा ने संवाददाताओ को बताया, पुलिस ने मौके पर पहुंचकर गामीणो द्वारा जाम किए गए राजमार्ग को खुलवाया।

एचडीएफसी सिक्वोरिटीज निवेशकों को बना रहा है सशक्त

नई दिल्ली। एचडीएफसी सिक्वोरिटीज 2025 में अपनी 25 वीं वर्षगांठ मनाने की तैयारी कर रही है, यह सशक्त है कि कंपनी ने अपनी स्थापना से अब तक एक लंबा सफर तय किया है। एक प्रापर्टिक पोए-रिड सफलता से लेकर एक पूर्ण डिजिटल इकोसिस्टम तक की यात्रा एचडीएफसी सिक्वोरिटीज की नवाचार के प्रति प्रतिक्रिया और अपने ग्राहकों को सर्वोत्तम सेवाएं प्रदान करने के उद्येक प्रयास की दर्शाती है। उन्मेष नर्मा, एमजीवट्टिप वार्डन प्रेसिडेंट, डेड आफ इंस्टीट्यूशनल इकॉटिज, एचडीएफसी सिक्वोरिटीज ने आज आयोजित प्रकरार वार्ता में बताया कि डिजिटल प्रत्यक्षअिहार केरकखाते ने 7,000 टमा की वित्तीय सहायता हस्तान्तरित करने की प्रक्रिया शुरू की। उन्होंने दरभंगा और आसपास के इलाकों में बाढ़ से प्रभावित क्षेत्रों का भी जाँचदिया किया। जल संसाधन विभाग (इस्केयूआरडी) ने एक बुलेटिन में कस, बागमती, बूढ़ी गंडक, गंडक, गंगा और कमला बलान सहित अरिचतय नदियों का जलस्तर कम हो गया है, लेकिन अब भी विभिन्न इलाकों पर ए खतरने के निशान से ऊपर बह रही है। इसमें बताया गया कि इस्केयूआरडी अलर्ट पर है और संवेदनशील स्थानों पर बाढ़ के लिए सुरक्षा संबंधित कार्य चिा जा रहे है। हालांकि, मुजफ्फरपुर जिले के औरई क्षेत्र में बाढ़ प्रभावित कुछ लोग रहत कर्मों से खुश नहीं है। उन्होंने सुरक्षाकर्मियों पर पशवार किया, मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी राष्ट्रीय राजमार्ग को घंटे जाम कसा और सड़क पर टावर लगाए। मुजफ्फरपुर की पुलिस अधीशक (गामीण) विद्या सागा ने संवाददाताओ को बताया, पुलिस ने मौके पर पहुंचकर गामीणो द्वारा जाम किए गए राजमार्ग को खुलवाया।

एचडीएफसी सिक्वोरिटीज निवेशकों को बना रहा है सशक्त
नई दिल्ली। एचडीएफसी सिक्वोरिटीज 2025 में अपनी 25 वीं वर्षगांठ मनाने की तैयारी कर रही है, यह सशक्त है कि कंपनी ने अपनी स्थापना से अब तक एक लंबा सफर तय किया है। एक प्रापर्टिक पोए-रिड सफलता से लेकर एक पूर्ण डिजिटल इकोसिस्टम तक की यात्रा एचडीएफसी सिक्वोरिटीज की नवाचार के प्रति प्रतिक्रिया और अपने ग्राहकों को सर्वोत्तम सेवाएं प्रदान करने के उद्येक प्रयास की दर्शाती है। उन्मेष नर्मा, एमजीवट्टिप वार्डन प्रेसिडेंट, डेड आफ इंस्टीट्यूशनल इकॉटिज, एचडीएफसी सिक्वोरिटीज ने आज आयोजित प्रकरार वार्ता में बताया कि डिजिटल प्रत्यक्षअिहार केरकखाते ने 7,000 टमा की वित्तीय सहायता हस्तान्तरित करने की प्रक्रिया शुरू की। उन्होंने दरभंगा और आसपास के इलाकों में बाढ़ से प्रभावित क्षेत्रों का भी जाँचदिया किया। जल संसाधन विभाग (इस्केयूआरडी) ने एक बुलेटिन में कस, बागमती, बूढ़ी गंडक, गंडक, गंगा और कमला बलान सहित अरिचतय नदियों का जलस्तर कम हो गया है, लेकिन अब भी विभिन्न इलाकों पर ए खतरने के निशान से ऊपर बह रही है। इसमें बताया गया कि इस्केयूआरडी अलर्ट पर है और संवेदनशील स्थानों पर बाढ़ के लिए सुरक्षा संबंधित कार्य चिा जा रहे है। हालांकि, मुजफ्फरपुर जिले के औरई क्षेत्र में बाढ़ प्रभावित कुछ लोग रहत कर्मों से खुश नहीं है। उन्होंने सुरक्षाकर्मियों पर पशवार किया, मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी राष्ट्रीय राजमार्ग को घंटे जाम कसा और सड़क पर टावर लगाए। मुजफ्फरपुर की पुलिस अधीशक (गामीण) विद्या सागा ने संवाददाताओ को बताया, पुलिस ने मौके पर पहुंचकर गामीणो द्वारा जाम किए गए राजमार्ग को खुलवाया।

एनेर्जॉन व इंडिया पोस्ट के साथ एमओयू

मुंबई। एनेर्जॉन ट्रांसपोर्टेशन सर्विसेज प्राइेट लिमिटेड एनेर्जॉन इंडिया ने देश में अपने लॉजिस्टिक्स नेटवर्क को मजबूत बनाने के लिए पोस्टल विभाग इंडिया के साथ एक मेमोरेंडम ऑफअंडरस्टैंडिंग पर दस्तरखत किए। एनेर्जॉन के ग्राहक केंद्रित और टेक्नोलॉजिकल कोशल के साथ इंडिया पोस्ट के अतिम छेद तक पहुंच रखने वाले डिजितीरी नेटवर्क और स्टारकों की विशेषज्ञता की मदद से यह गठबंधन ई.कॉमर्स लॉजिस्टिक्स के क्षेत्र में नए मानक स्थापित कर देगा। इस एमओयू के अंतर्गत एनेर्जॉन अपने लॉजिस्टिक्स नेटवर्क में क्षमता को साझा करने संसाधनों के ज्यादा प्रभावी उपयोग और एफिशियेंसी बढ़ाने के लिए समुन इंटीग्रेशन और ज्ञान के आदान-प्रदान द्वारा अपने ऑपरेशंस में लालतन बनाएंगे। इस गठबंधन द्वारा दोनों संगठनों का विकास होगा तथा एनेर्जॉन के ग्राहकों को बहामों के लिए डिजितीरी के अनुभव में सुचारु आगता। रसायक टूट्टेशन और गामीणो हिसेसो के ग्राहकों को इन सफेजरी का विशेष लाभ मिलेगा। एनेर्जॉन इंडिया के वीीए ऑपरेशंसए अभिनव सिंह ने कस कि भारत में इंडिया पोस्ट के साथ हमारी साझेदारी में भारत में एनेर्जॉन की वृद्धि में मुख्य भूमिका निभाई है। इसने ई.कॉमर्स के स्टार ट्रेन में पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारत में स्टारों से सेवा दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित कर रहे हवेंगे। यह पार्टनरशिप सरकार द्वारा अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रक्रियाओं द्वारा इंडिया पोस्ट की सेवाओं को सेवाएं दे रहे इस परिस्थित संसाधन के साथ हमारी पार्टनरशिप के साथ हम लॉजिस्टिक्स और कस्टमर सेवा के क्षेत्र में लालतार कई सालों तक नए मानक स्थापित

इजराइल का बेरूत में भीषण हवाई हमला

● सीरिया से मुख्य सड़क संपर्क को काट

भाषा। बेरूत
इजराइल ने बेरूत के दक्षिणी उपनगरीय इलाकों में रातभर कई चरणों में भीषण हवाई हमले किए तथा लेबनान एवं सीरिया के बीच के मुख्य सड़क संपर्क को काट दिया। इजराइली बमबारी के कारण लेबनान से भाग रहे हजारों लोग जिस सीमावर्ती स्थल से सीरिया में प्रवेश करते हैं वह इसी मार्ग पर स्थित है। रात भर हुए विस्फोटों ने बेरूत के दक्षिणी उपनगरीय इलाकों को हिलाकर रख दिया। हवाई बमबारी के कारण रात में आकाश में धुएं के गुबार और आग की लापट उठीं दिखीं। विस्फोट इतने शक्तिशाली थे कि



लेबनान की राजधानी से कई किलोमीटर दूर तक की इमारतें हिल गईं। इजराइली सेना ने फिलहाल यह नहीं बताया है कि उसका लक्ष्य क्या था। हताहतों के बारे में भी अभी कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। इजरायली सेना ने शुक्रवार को कहा कि एक दिन पहले बेरूत में एक हमले में हिजबुल्ला के संचार प्रभाग के प्रमुख मोहम्मद राशिद स्केफी की मौत हो

गई थी। सेना ने एक बयान में कहा कि स्केफी हिजबुल्ला का एक वरिष्ठ आतंकवादी था जो वर्ष 2000 से संचार इकाई के लिए जिम्मेदार था और संगठन के उच्चाधिकारियों के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा था। लेबनान की सरकारी राष्ट्रीय समाचार एजेंसी ने बताया कि बृहस्पतिवार देर रात क्षेत्र में लगातार 10 से अधिक हवाई हमले किए गए। एजेंसी ने बताया कि

इजराइल ने हमला किया, तो उसका जवाब पहले से कहीं अधिक जोरदार तरीके से दिया जाएगा : ईरानी विदेश मंत्री

बेस्त्। ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अरघारी ने शुक्रवार को चेतावनी दी कि अगर इजराइल उनके देश पर हमला करता है, तो उसका जवाब पहले से कहीं अधिक जोरदार तरीके से दिया जाएगा। अब्बास इस समय लेबनान के अधिकारियों से मुलाकात करने के लिए बेस्त् में है। इरान के इजराइल पर क्म से कम 180 मिसाइले दगने की घटना के बाद वह तीन दिवसीय यात्रा पर लेबनान पहुंचे है। हाल केदिनों ने परिधम-एशिया ने एककेबाद एकघटनाएं हो रही है, जिससे क्षेत्र युद्ध के मुहाने पर खड़ा हो गया है। अब्बास ने लेबनान की संसद के अध्यक्ष नबी बैरी से मुलाकात केबाद क्म, अगर इजराइल हमारे खिलाफ कोई क्म उठाता है, तो हमारा जवाब पहले से कहीं अधिक जोरदार होगा।

इजराइली हवाई हमले के कारण व्यस्त मसना बॉर्डर क्रॉसिंग के पास सड़क संपर्क काट गया, जहां से पिछले दो हफ्तों में लेबनान में युद्ध के कारण हजारों लोग भागकर सीरिया में घुस गए थे। दोनों देशों को जोड़ने वाले सबसे व्यस्त सड़क संपर्क को काटने वाले हवाई हमले के एक दिन पहले एक इजराइली सैन्य प्रवक्ता ने कहा

था कि हिजबुल्ला सीमा पार से सैन्य उपकरणों के परिवहन की कोशिश कर रहा है। ऐसा माना जाता है कि हिजबुल्ला को अपने अधिकांश हथियार सीरिया के रास्ते ईरान से प्राप्त हुए हैं। संगठन की सीमा के दोनों ओर मौजूदगी है, एक ऐसा क्षेत्र जहां वह सीरियाई राष्ट्रपति बशर असद की सेना के साथ लड़ रहा है।

जयशंकर ने श्रीलंका के शीर्ष नेतृत्व से मुलाकात की

आर्थिक संकट से उबरने में सहयोग का दिया आश्वासन

भाषा। कोलंबो

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने शुक्रवार को श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरु कुमार दिसानायके से मुलाकात की और दोनों देशों के बीच जारी सहयोग को प्रगाढ़ करने के तरीकों एवं भारत-श्रीलंका संबंधों को मजबूत करने पर चर्चा की। जयशंकर ने श्रीलंका को आर्थिक संकट से उबरने में भारत के सहयोग जारी रखने के प्रति भी आश्स्त किया। श्रीलंका के राष्ट्रपति के रूप में दिसानायके के



शपथ लेने के पखवाड़े भर के अंदर, जयशंकर एक दिवसीय दौरे पर शुक्रवार सुबह यहां पहुंचे। उन्होंने श्रीलंका की प्रधानमंत्री हरिनी अमरसूर्या और विदेश मंत्री विजिता हेराथ को भी मुलाकात की। दिसानायके के नेतृत्व वाली नेशनल पीपुल्स पावर (एनपीपी) की सरकार के 23 सितंबर को सत्ता में आने के बाद जयशंकर श्रीलंका का दौरा करने

वाले पहले विदेशी राजनयिक हैं। जयशंकर ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, (श्रीलंका के) राष्ट्रपति अनुरु दिसानायके से आज कोलंबो में मिलकर अच्छा लगा। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ओर से शुभकामनाएं दीं। उन्होंने पोस्ट में कहा, भारत-श्रीलंका संबंधों के लिए उनकी गर्मजोशी भरी भावनाओं और मार्गदर्शकों की सराहना

की। दोनों देशों और क्षेत्र के लोगों के लाभ के लिए जारी सहयोग को प्रगाढ़ करने और भारत-श्रीलंका संबंधों को मजबूत करने के तरीकों पर चर्चा की। इसके शीघ्र बाद, दिसानायके ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि चर्चा पर्यटन, ऊर्जा और निवेश में सहयोग बढ़ाने तथा मरत्यु पालन, सुरक्षा और राष्ट्रीय एकता पर सहयोग जारी रखने पर केंद्रित रही। उन्होंने कहा, भारत के विदेश मंत्री डॉ एस जयशंकर की श्रीलंका की आधिकारिक यात्रा के दौरान आज उनसे मुलाकात की। श्रीलंका के राष्ट्रपति ने पोस्ट में कहा, डॉ जयशंकर ने श्रीलंका को आर्थिक संकट से उबरने में भारत के सहयोग की बात दोहराई।

चीन के बढ़ते प्रभाव के लिए जिम्मेदार लोग चीनी गाथा की सराहना कर रहे: गोयल
वाशिंगटन। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने बृहस्पतिवार को कहा कि पूरी दुनिया जब यह मान रही है कि चीन एक अपारदर्शी अर्थव्यवस्था है तो ऐसे समय में भी कुछ लोग, जो भारतीय उद्योग में इसके बढ़ते प्रभाव के लिए संभवतः जिम्मेदार हैं, चीनी गाथा की प्रशंसा कर रहे हैं या उसका बचाव कर रहे हैं। गोयल ने पूर्ववर्ती कांग्रेस नीत सरकार की आलोचना करते हुए कहा कि यह शर्तों की बात है कि भारत ने घंटियां और अपारदर्शी चीनतां भी सीमागत को भारतीय विनिर्माण को नष्ट कर दिया।

युद्ध, अकाल, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस दौर में अगले हफ्ते से शुरू होगी नोबेल पुरस्कारों की घोषणा

भाषा। स्तावंजर (नॉर्वे)

दुनिया के कई हिस्सों में छिड़े युद्ध, शरणार्थी संकट, अकाल और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस दौर में अगले हफ्ते से नोबेल पुरस्कारों की घोषणा शुरू हो जाएगी। पुरस्कार के पेलान के सप्ताह में संयोग से सात अक्टूबर की वह तिथि भी आएगी जो हमसा की अगुवाई में इजराइल पर किए गए हमले की बरसी भी है। हमसा के हमले के बाद से पूरे पश्चिम एशिया में रक्तपात और युद्ध की शुरुआत हो गई जो करीब सालभर से जारी है। साहित्य और विज्ञान के लिए नोबेल पुरस्कार को छूट दी जा सकती है। लेकिन संघर्ष को समाप्त करने के प्रयासों को



मान्यता देने वाला शांति पुरस्कार अगर दिया जाता है तो यह अंतरराष्ट्रीय हिंसा के महीलों में दिया जाएगा। स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट के निदेशक डैन स्मिथ ने कहा, 'यह दुनिया पर नजर डालता हूं तो बहुत अधिक संघर्ष, शत्रुता और टकराव देखाता हूं। मुझे आश्चर्य होता है कि क्या यह वह वर्ष है जब नोबेल शांति पुरस्कार की घोषणा नहीं की जानी

मलेशिया के प्रधानमंत्री विभिन्न विषयों पर अंतरिम नेता यूनुस के साथ चर्चा के लिए बांग्लादेश पहुंचे



नीडिया की खबरे के अनुसार, अनवर की यात्रा व्यापार एवं विदेश, प्राकसी श्रमिकों और वैश्वीय शरणार्थी संकट पर केंद्रित होगी। यूनुस ने ढाक के रूमास्ट शाहनजाल अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे पर अनवर का स्वागत किया, जहां उन्हें बंदूकों की सलागी दी गई। पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के मारदा घले जाने के बाद आठ अगस्त को यूनुस के सत्ता संभालने के बाद से यह किसी विदेशी नेता की बांग्लादेश की पहली यात्रा है। यह 11 वर्षों ने किसी मलेशियाई नेता की बांग्लादेश की पहली राजकीय यात्रा भी है। परिश्रमन से यह पदवी अगस्त 58 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व कर रहे है। अगले साल, मलेशिया दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों केसंगठन की अध्यक्षता करेगा और बांग्लादेश उस क्षेत्र केसाथ अपना व्यापार बढ़ाने के लिए उत्सुक है। बांग्लादेश वैश्वीय शरणार्थी संकट केसमाधान ने आसियान को अधिकधिकत्व से शामिल करने की नीति पर भी काम कर रहा है।

ईस्टर्न एक्वाइन इंसेफे लाइटिस क्या होता है, मच्छर जनित घातक बीमारी

सिडनी। अमेरिका में स्वास्थ्य अधिकारी एक दुर्लभ लेकिन संभावित रूप से मच्छर जनित घातक बीमारी के कारण चेतावनी जारी कर रहे हैं और सार्वजनिक पाकों को बंद किया जा रहा है। इस सप्ताह, अमेरिका के न्यू हैम्पशायर प्रांत के एक व्यक्ति की ईस्टर्न एक्वाइन इंसेफेलाइटिस के कारण अस्पताल में भर्ती होने के बाद मृत्यु हो गई। अमेरिका के अन्य प्रांतों में भी इस बीमारी के मामले सामने आए हैं लेकिन ईस्टर्न एक्वाइन इंसेफेलाइटिस क्या है? यह कैसे फैलता है? जैसा कि नाम से पता चलता है, क्या घोड़ों का इससे लेना-देना है? और क्या यह ऑस्ट्रेलिया के लिए एक समस्या है? ईस्टर्न एक्वाइन इंसेफेलाइटिस क्या होता है? ईस्टर्न एक्वाइन इंसेफेलाइटिस एक वायरस के कारण होता है जो आमतौर पर केवल अमेरिका के कुछ पूर्वी हिस्सों में पाया जाता है, मध्य अमेरिका से लेकर

कनाडा तक। ईस्टर्न एक्वाइन इंसेफेलाइटिस का वायरस तंत्रिका संबंधी रोग, विशेष रूप से इसेफेलाइटिस (मस्तिष्क की सूजन और सूजन) का कारण बनता है और मच्छर के काटने से मनुष्यों में फैलता है। इस बीमारी के लक्षण गंभीर और संभावित रूप से घातक हो सकते हैं। लेकिन, इस वायरस वाले मच्छर द्वारा काटे गए अधिकतर लोगों में इसके लक्षण नहीं दिखते हैं। जिन लोगों में भी इस बीमारी के मामले सामने आए हैं लेकिन ईस्टर्न एक्वाइन इंसेफेलाइटिस का वायरस हो नहीं बल्कि घोड़े भी प्रभावित हो सकते हैं और मनुष्यों को तरह संक्रमित मच्छर के काटने से उन्हें भी घातक इंसेफेलाइटिस

पाकिस्तान ने दिया सशस्त्र बलों के लिए 45 अरब का बजट

भाषा। इस्लामाबाद

पाकिस्तान सरकार ने सशस्त्र बलों के लिए 45 अरब रूपए का अतिरिक्त बजट उपलब्ध कराने का फैसला किया है, ताकि नकदी की कमी से जुझ रहे देश में चीन के वाणिज्यिक हितों की रक्षा करने और अंतरराष्ट्रीय सीमाओं पर बाड़ लगाने का प्रबंधन करने की उसकी क्षमता को मजबूत किया जा सके। द एक्सप्रेस यह निर्णय को खबर के अनुसार, यह नियुक्त बृहस्पतिवार को कैबिनेट की आर्थिक समन्वय समिति (ईसीसी) की बैठक में लिया गया, जिसकी अध्यक्षता वित्त मंत्री गोहम्पद औरंगजेब ने की। अखबार ने कहा कि 45 अरब रूपए में से 35.4 अरब रूपए सेना को और 9.5 अरब रूपए नौसेना को विभिन्न उद्देश्यों



के लिए दिए जाएंगे। ईसीसी ने चालू वित्त वर्ष के दौरान रक्षा सेवाओं की पहले से स्वीकृत परियोजनाओं के लिए 45 अरब रूपए के तकनीकी अनुसूचक अनुदान के लिए रक्षा प्रभाग द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव पर विचार किया और उसे मंजूरी दी। जून में बजट की मंजूरी के बाद सशस्त्र बलों के लिए स्वीकृत यह दूसरा बड़ा अनुसूचक अनुदान है। इससे पहले ईसीसी ने ऑपरेशन अम्म-ए-इस्तेहकाम के लिए 60 अरब रूपए दिए थे। ए

इमरान खान की पार्टी के विरोध प्रदर्शन से पहले पाकिस्तान में सुरक्षा बढ़ाई गई

इस्लामाबाद। पाकिस्तानी प्राधिकारियों ने इमरान खान को गेल से रिहा करने का दबाव बनाने के उद्देश्य से पूर्व प्रधानमंत्री की पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) द्वारा विरोध प्रदर्शन किए जाने की योजना को विफल करने के लिए देश की राजधानी इस्लामाबाद को शुक्रवार को सील कर दिया।विरोध प्रदर्शन का आरंभ फ़िरोज से नेता बने 71 वर्षीय खान ने किया था, जो एक वर्ष से अधिक समय से सवालपिंडी की अटियाला जेल में बंद है। उन्होंने आगे सभ्यत्व से राजधानी के प्रतिष्ठित डी-चौक पर एक होरद विरोध दर्ज करने को कहा। यह वहीं जगह है जहां खान ने 2014 में चुनावों में कथित धांधली के खिलाफ 126 दिनों तक धरना दिया था। सरकार ने शहर से मात्र 144 लापर कट सभी तरह के विरोध प्रदर्शनों एवं सभाओं पर रोक लगा दी और राजधानी के सभी प्रमुख प्रवेश बिंदुओं को अवरुद्ध कर दिया।

अनुसूचक अनुदान 2127 अरब रूपए के रक्षा बजट के अतिरिक्त है। आतंकवादी हमलों की बढ़ती संख्या के कारण, चीन ने अपनी सुरक्षा चिंताओं को दूर करने के लिए आतंकवाद विरोधी सहयोग पर एक

समझौते पर हस्ताक्षर करने की मांग की है। चीन ने पाकिस्तान में पहले से काम कर रहे अपने नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक संयुक्त कंपनी की स्थापना का भी प्रस्ताव रखा है।

ब्रिटेन ने संघर्ष प्रभावित लेबनान के लिए मानवीय सहायता मेजी

लंदन। ब्रिटेन ने शुक्रवार को कहा कि वह पश्चिम एशिया में जारी संकट के बीच आम लोगों के व्यापक विस्थापन और मृतकों की बढ़ती संख्या के मद्देनजर लेबनान को मानवीय सहायता के रूप में एक करोड़ ब्रिट एंटीपाउंड (जीबीपी) की मदद भेज रहा है।ब्रिटेन का विदेश, राष्ट्रमंडल और विकास कार्यालय (एफ्फ्सीडीओ) ब्रिटिश नागरिकों से लेबनान छोड़ने की लगातार अपील कर रहा है। साथ ही एफ्फ्सीडीओ ने हिज्बुल्ला व इजराइल के बीच तत्काल संघर्ष विराम का अनुरोध किया है। सहायता पैकेज विश्वसनीय मानवीय संगठनों के माध्यम से वितरित किया जाएगा, जो लेबनान में लंबे समय से सहायता प्रदान करने का काम कर रहे हैं। ब्रिटेन की विकास राज्य मंत्री एनेलीज डोइस ने कहा, लेबनान में संघर्ष के दौरान लोगों को जो नुकसान हुआ है। वह सभी को स्पष्ट रूप से पता है। ब्रिटेन से मिलने वाली यह अतिरिक्त धनराशि तेजी से बिगड़ती मानवीय स्थिति को निर्यात करने में मदद करेगी और निरंतर हिंसा से विस्थापित लोगों को राहत प्रदान मिलेगी। उन्होंने कहा, यह जीवन रक्षक सहायता महत्वपूर्ण है, लेकिन यह दीर्घकालिक समाधान नहीं है।

विवक न्यूज

न्यूजीलैंड ने अगर समाचार सामग्री के लिए शुल्क लगाया तो लिंक साझा करना बंद करेगे : गूगल
वेलिंग्टन। गूगल ने शुक्रवार को कहा कि यदि न्यूजीलैंड की सरकार प्रौद्योगिकी कानूनों को अपने मंच पर प्रदर्शित लेखों के लिए गुगतान को अनिवार्य बनाने वाला कानून पारित करती है, तो वह देश की समाचार सामग्री का अपने मंच पर लिंक साझा करना बंद कर देगी और स्थानीय नीडिया कानूनों से सहयोग भी देक देगी। गूगल ने न्यूजीलैंड की समाचार साइट को अपनी सेवा से हटाने का संकेत शुक्रवार को एकलॉग पोस्ट जारी कर दिया था। यह उस कानूनीयों की याद दिलाता है, जिसे कानूनी ने तब आनया था, जब ऑस्ट्रेलिया और कनाडा हाल के वर्षों ने इसी प्रकार केकानून बनाने की तैयारी कर रहे थे।न्यूजीलैंड सरकार ने इस साल जुलाई में इस्तफा करते हुए घोषणा की थी कि सरकार उस विधायक पर आगे बढ़ेगी जिसने प्रौद्योगिकी मंचो पर समाचार सामग्री से उत्पन्न राजस्व को इसे बनाने वाले नीडिया आउटलेट्स केसाथ साझा करने के लिए सझाईते करना अनिवार्य होगा।

पाकिस्तान : इमरान खान के अट्टालाख पर इस्लामाबाद में एक्ता हुए प्रदर्शनकारियों पर आंसू गैस का इस्तेमाल
इस्लामाबाद। पाकिस्तानी अधिकारियों ने जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की रिहाई की मांग को लेकर शुक्रवार को डी-चौकपर एक्ता हुए प्रदर्शनकारियों को तितर-बितर करने के लिए आंसू गैस का इस्तेमाल किया। अधिकारियों ने खान (71) के आचरण को आरंभित विरोध प्रदर्शनों को रोकने के लिए इस्लामाबाद और सवालपिंडी के अधिवंश हिस्सों में गोबाइल व इटलेट सेवाएं भी निलंबित कर दीं। खान एक साल से अधिक समय से सवालपिंडी की अटियाला जेल में बंद है। उन्होंने आगे सभ्यत्व से राजधानी के इस प्रतिष्ठितस्थल पर एक्ता होकर विरोध र्ज करने की अपील की थी। यह वहीं स्थल है जहां खान ने 2014 में चुनावों में कथित धांधली के खिलाफ 126 दिन तक धरना दिया था। डी-चौक पर नीडिया से बात करते हुए इस्लामाबाद के पुलिस महानिरीक्षकसैयद अली नासिर रिजवी ने कहा कि पुलिस ने इस्लामाबाद में प्रवेश केसभी रास्ते बंद कर दिए है और लगभग 30 प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार भी किया है। उन्होंने कहा, जहां भी पुलिस या सभ्यते को नुकसान पहुंचाने की कोशिश की गई है, वहां कर्वाँ की जा रही है। उसी तब तक 30 से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है।

एसबीआई व सिंगापुर एयरलाइंस के साथ साझेदारी

सिंगापुर। एसबीआई कार्ड ने सिंगापुर की राष्ट्रीय एयरलाइंस सिंगापुर एयरलाइंस लिमिटेड (एसआईए) के साथ आज क्रिसपालावर एसबीआई कार्ड लॉन्च किया। इस अगुवे यात्रा केंद्रित सह-ब्रैंडेड फ़्रेडिट कार्ड को सुपर-प्रीमियम कार्डधारकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया है जिसका लाभ हावकों को हवाईयात्रा और गमलों दोनों प्राप्त होने के लिए। एसआईए के इस सहभू ने सिंगापुर एयरलाइंस, स्पेट्ट एयरलाइंस, फ़िरस्थीप डेंट कॉर्पो, क्रिच-लाफ़फ़टाइल एष और पेलेगो शामिल है। नए लॉन्च किए गए फ़्रेडिट कार्ड दो रूपों में उपलब्ध है - क्रिसपालावर एसबीआई कार्ड और क्रिसपालावर कार्ड एक्सेस। इस साझेदारी के साथ, क्रिसपालावर एसबीआई कार्ड के हावक अपनी यात्रा खर्चों पर कई बड़े पुस्कार और तमगन तरह के लाभ प्राप्त कर सकते हैं।एसबीआई कार्ड के एनबी और सीईओ श्री विजिनी के पास सभ्यत्व लिए कुछ ना कुछ है ताकि अवरूच महीने में पूरे परिवार के मनोरंजन के लिए यह एक्तात्र जगह बन जाए। महीने की गुरुआत करते हुए जिनीवी डीटीएव अपने साथ लेकर आया है वायरस की दिलाकत कठनाई। फ़िलहाल इसका पहली बार प्रसाराह हर दिन शाम 6 बजे किया जा रहा है। इस इमोजेशन वजन में गुनेद खान, सैरा मणि और फराह शाहे सै कलाकार है। इसमें रूबाब की कलना दिखाई गई है।उसकी तिरछुसबाज ना गेथरा की कलह से अरार के लिए उनके प्यार को कई सारी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। इसकी वजह से दिल टूटते है और इस शो के मुख्य किरदारों को सभी गलतफहमियों और उलझनों के बीच एक होने के लिए सभ्यत्व करना पड़ता है। पहली बार भारतीय दर्शकों के लिए प्रसारित से रही जूवी अब हर दिन रात 9 बजे देख सकते है। इसमें रियल लाइफ़ जोड़ी इकरा अजीब और वासिए हुसैन, निरमा के इट-नॉर्ड बने एक कॉमेडिक ड्रामा में नजर आ रहे है। दटअसल, एक लड़की निरमा अपने सपनों के पीछे भागते हुए कई सारे झूठ को जाल में फंस जाती है। दर्शकों के लिए एक परदेवी तनो, सुनो यंदन में इकरा के साथ फरखन सईद अपने सीजन 1 और 2 के साथ वापस लौट रहे है।

जिंदगी में बेहतरीन ड्रामा और शॉर्ट फिल्मों की गूंज

हालीवुड। जिंदगी डीटीएव लेकर आया है कार्यक्रमों का एक विशेष लाइन-अप। इसमें महशूर फैमिली शोज से लेकर दिलचस्प ड्रामा और हल्की-फुल्की कॉमेडी का पूरा गुलदस्ता है, जिसे हर किसी के हंस और हसके को रचाने में रसदें हुए बनाया गया है। इस महीने में दर्शकों के लिए कटरेट की एक बेहत बड़ी लिस्ट पेश की जा रही है, जिसमें वलासिक और सबसे सभ्यटीय शोज, दिल को माने वाले बेहतरीन ड्रामा और शॉर्ट फिल्में भी है।जिंदगी के पास सभ्यत्व लिए कुछ ना कुछ है ताकि अवरूच महीने में पूरे परिवार के मनोरंजन के लिए यह एक्तात्र जगह बन जाए। महीने की गुरुआत करते हुए जिनीवी डीटीएव अपने साथ लेकर आया है वायरस की दिलाकत कठनाई। फ़िलहाल इसका पहली बार प्रसाराह हर दिन शाम 6 बजे किया जा रहा है।

इस इमोजेशन वजन में गुनेद खान, सैरा मणि और फराह शाहे सै कलाकार है। इसमें रूबाब की कलना दिखाई गई है।उसकी तिरछुसबाज ना गेथरा की कलह से अरार के लिए उनके प्यार को कई सारी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। इसकी वजह से दिल टूटते है और इस शो के मुख्य किरदारों को सभी गलतफहमियों और उलझनों के बीच एक होने के लिए सभ्यत्व करना पड़ता है। पहली बार भारतीय दर्शकों के लिए प्रसारित से रही जूवी अब हर दिन रात 9 बजे देख सकते है। इसमें रियल लाइफ़ जोड़ी इकरा अजीब और वासिए हुसैन, निरमा के इट-नॉर्ड बने एक कॉमेडिक ड्रामा में नजर आ रहे है। दटअसल, एक लड़की निरमा अपने सपनों के पीछे भागते हुए कई सारे झूठ को जाल में फंस जाती है। दर्शकों के लिए एक परदेवी तनो, सुनो यंदन में इकरा के साथ फरखन सईद अपने सीजन 1 और 2 के साथ वापस लौट रहे है।

अमेरिक में दो भारतीय अमेरिकी महिलाएं व्हाइट हाउस फेलो के स्प में नामित

वाशिंगटन। अमेरिया में दो भारतीय अमेरिकी महिलाओ- बोरटन से पदिमनी फिल्लई और न्यूयॉर्क से नलिनी टाटा को बृहस्पतिवार को 2024-2025 के सत्र के लिए व्हाइट हाउस फेलो नामित किया गया। इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम के लिए अमेरिया से कुल 15 विभिन्न प्रतिभाशाली व्यक्तियों का चयन किया गया है। फेलो व्हाइट हाउस (अमेरिका के राष्ट्रपति के आधिकारिक आवास एवं कार्यलय) के वरिष्ठ कर्मचारियों, वैज्ञानिक नियोत्रा और अन्य शीर्ष प्रशासनिक अधिकारियों के साथ एकसाल तककाम करने केबाद एक बेहतर नेता के रूप में आगे समुदाय में नियुक्त किया गया है। मैसाचुसेट्स केन्यूटन की फिल्लई एक उद्युक्तनी डूनीमिटर है जो प्रतिस्था विज्ञान में खोज एवं जैव-सम्बावी डिजाइन में प्रगति केबीच की खाई को पारने व साथ करती है ताकिमानव रोगों केउपचार में मदद मिल सकें।उन्होंने मैसाचुसेट्स स्ट्रेटीज्ऑफ़टेक्नोलॉजी(एनआईटी) में एक टीम का नेतृत्व किया जो जानवरों केसाथ वैक्सा करने के लिए जैनीयेथेपी विस्तित कर रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान सीएनबीसी, 2 अटलरॉलिक एड ए न्यूयॉर्क टाइम्स सहित कई स्थानीय समाजनों ने फिल्लई के लेखों परविशेष धिये थे जिनमें उन्होंने टीवक्सा, प्रतिस्था और स्वास्थ्य के लिहाज से संवेदनशील समुदायों पर महामारी के दुष्प्रभाव को लेकर चर्चा की थी। फिल्लई ने एक विस्थापितय से इन्फ़र्नलबालॉजी में पीएचडी और रेडियल विस्तित कर रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान सीएनबीसी, 2 अटलरॉलिक एड ए न्यूयॉर्क टाइम्स सहित कई स्थानीय समाजनों ने फिल्लई के लेखों परविशेष धिये थे जिनमें उन्होंने टीवक्सा, प्रतिस्था और स्वास्थ्य के लिहाज से संवेदनशील समुदायों पर महामारी के दुष्प्रभाव को लेकर चर्चा की थी। फिल्लई ने एक विस्थापितय से इन्फ़र्नलबालॉजी में पीएचडी और रेडियल विस्तित कर रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान सीएनबीसी, 2 अटलरॉलिक एड ए न्यूयॉर्क टाइम्स सहित कई स्थानीय समाजनों ने फिल्लई के लेखों परविशेष धिये थे जिनमें उन्होंने टीवक्सा, प्रतिस्था और स्वास्थ्य के लिहाज से संवेदनशील समुदायों पर महामारी के दुष्प्रभाव को लेकर चर्चा की थी। फिल्लई ने एक विस्थापितय से इन्फ़र्नलबालॉजी में पीएचडी और रेडियल विस्तित कर रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान सीएनबीसी, 2 अटलरॉलिक एड ए न्यूयॉर्क टाइम्स सहित कई स्थानीय समाजनों ने फिल्लई के लेखों परविशेष धिये थे जिनमें उन्होंने टीवक्सा, प्रतिस्था और स्वास्थ्य के लिहाज से संवेदनशील समुदायों पर महामारी के दुष्प्रभाव को लेकर चर्चा की थी। फिल्लई ने एक विस्थापितय से इन्फ़र्नलबालॉजी में पीएचडी और रेडियल विस्तित कर रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान सीएनबीसी, 2 अटलरॉलिक एड ए न्यूयॉर्क टाइम्स सहित कई स्थानीय समाजनों ने फिल्लई के लेखों परविशेष धिये थे जिनमें उन्होंने टीवक्सा, प्रतिस्था और स्वास्थ्य के लिहाज से संवेदनशील समुदायों पर महामारी के दुष्प्रभाव को लेकर चर्चा की थी। फिल्लई ने एक विस्थापितय से इन्फ़र्नलबालॉजी में पीएचडी और रेडियल विस्तित कर रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान सीएनबीसी, 2 अटलरॉलिक एड ए न्यूयॉर्क टाइम्स सहित कई स्थानीय समाजनों ने फिल्लई के लेखों परविशेष धिये थे जिनमें उन्होंने टीवक्सा, प्रतिस्था और स्वास्थ्य के लिहाज से संवेदनशील समुदायों पर महामारी के दुष्प्रभाव को लेकर चर्चा की थी। फिल्लई ने एक विस्थापितय से इन्फ़र्नलबालॉजी में पीएचडी और रेडियल विस्तित कर रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान सीएनबीसी, 2 अटलरॉलिक एड ए न्यूयॉर्क टाइम्स सहित कई स्थानीय समाजनों ने फिल्लई के लेखों परविशेष धिये थे जिनमें उन्होंने टीवक्सा, प्रतिस्था और स्वास्थ्य के लिहाज से संवेदनशील समुदायों पर महामारी के दुष्प्रभाव को लेकर चर्चा की थी। फिल्लई ने एक विस्थापितय से इन्फ़र्नलबालॉजी में पीएचडी और रेडियल विस्तित कर रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान सीएनबीसी, 2 अटलरॉलिक एड ए न्यूयॉर्क टाइम्स सहित कई स्थानीय समाजनों ने फिल्लई के लेखों परविशेष धिये थे जिनमें उन्होंने टीवक्सा, प्रतिस्था और स्वास्थ्य के लिहाज से संवेदनशील समुदायों पर महामारी के दुष्प्रभाव को लेकर चर्चा की थी। फिल्लई ने एक विस्थापितय से इन्फ़र्नलबालॉजी में पीएचडी और रेडियल विस्तित कर रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान सीएनबीसी, 2 अटलरॉलिक एड ए न्यूयॉर्क टाइम्स सहित कई स्थानीय समाजनों ने फिल्लई के लेखों परविशेष धिये थे जिनमें उन्होंने टीवक्सा, प्रतिस्था और स्वास्थ्य के लिहाज से संवेदनशील समुदायों पर महामारी के दुष्प्रभाव को लेकर चर्चा की थी। फिल्लई ने एक विस्थापितय से इन्फ़र्नलबालॉजी में पीएचडी और रेडियल विस्तित कर रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान सीएनबीसी, 2 अटलरॉलिक एड ए न्यूयॉर्क टाइम्स सहित कई स्थानीय समाजनों ने फिल्लई के लेखों परविशेष धिये थे जिनमें उन्होंने टीवक्सा, प्रतिस्था और स्वास्थ्य के लिहाज से संवेदनशील समुदायों पर महामारी के दुष्प्रभाव को लेकर चर्चा की थी। फिल्लई ने एक विस्थापितय से इन्फ़र्नलबालॉजी में पीएचडी और रेडियल विस्तित कर रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान सीएनबीसी, 2 अटलरॉलिक एड ए न्यूयॉर्क टाइम्स सहित कई स्थानीय समाजनों ने फिल्लई के लेखों परविशेष धिये थे जिनमें उन्होंने टीवक्सा, प्रतिस्था और स्वास्थ्य के लिहाज से संवेदनशील समुदायों पर महामारी के दुष्प्रभाव को लेकर चर्चा की थी। फिल्लई ने एक विस्थापितय से इन्फ़र्नलबालॉजी में पीएचडी और रेडियल विस्तित कर रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान सीएनबीसी, 2 अटलरॉलिक एड ए न्यूयॉर्क टाइम्स सहित कई स्थानीय समाजनों ने फिल्लई के लेखों परविशेष धिये थे जिनमें उन्होंने टीवक्सा, प्रतिस्था और स्वास्थ्य के लिहाज से संवेदनशील समुदायों पर महामारी के दुष्प्रभाव को लेकर चर्चा की थी। फिल्लई ने एक विस्थापितय से इन्फ़र्नलबालॉजी में पीएचडी और रेडियल विस्तित कर रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान सीएनबीसी, 2 अटलरॉलिक एड ए न्यूयॉर्क टाइम्स सहित कई स्थानीय समाजनों ने फिल्लई के लेखों परविशेष धिये थे जिनमें उन्होंने टीवक्सा, प्रतिस्था और स्वास्थ्य के लिहाज से संवेदनशील समुदायों पर महामारी के दुष्प्रभाव को लेकर चर्चा की थी। फिल्लई ने एक विस्थापितय से इन्फ़र्नलबालॉजी में पीएचडी और रेडियल विस्तित कर रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान सीएनबीसी, 2 अटलरॉलिक एड ए न्यूयॉर्क टाइम्स सहित कई स्थानीय समाजनों ने फिल्लई के लेखों परविशेष धिये थे जिनमें उन्होंने टीवक्सा, प्रतिस्था और स्वास्थ्य के लिहाज से संवेदनशील समुदायों पर महामारी के दुष्प्रभाव को लेकर चर्चा की थी। फिल्लई ने एक विस्थापितय से इन्फ़र्नलबालॉजी में पीएचडी और रेडियल विस्तित कर रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान सीएनबीसी, 2 अटलरॉलिक एड ए न्यूयॉर्क टाइम्स सहित कई स्थानीय समाजनों ने फिल्लई के लेखों परविशेष धिये थे जिनमें उन्होंने टीवक्सा, प्रतिस्था और स्वास्थ्य के लिहाज से संवेदनशील समुदायों पर महामारी के दुष्प्रभाव को लेकर चर्चा की थी। फिल्लई ने एक विस्थापितय से इन्फ़र्नलबालॉजी में पीएचडी और रेडियल विस्तित कर रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान सीएनबीसी, 2 अटलरॉलिक एड ए न्यूयॉर्क टाइम्स सहित कई स्थानीय समाजनों ने फिल्लई के लेखों परविशेष धिये थे जिनमें उन्होंने टीवक्सा, प्रतिस्था और स्वास्थ्य के लिहाज से संवेदनशील समुदायों पर महामारी के दुष्प्रभाव को लेकर चर्चा की थी। फिल्लई ने एक विस्थापितय से इन्फ़र्नलबालॉजी में पीएचडी और रेडियल विस्तित कर रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान सीएनबीसी, 2 अटलरॉलिक एड ए न्यूयॉर्क टाइम्स सहित कई स्थानीय समाजनों ने फिल्लई के लेखों परविशेष धिये थे जिनमें उन्होंने टीवक्सा, प्रतिस्था और स्वास्थ्य के लिहाज से संवेदनशील समुदायों पर महामारी के दुष्प्रभाव को लेकर चर्चा की थी। फिल्लई ने एक विस्थापितय से इन्फ़र्नलबालॉजी में पीएचडी और रेडियल विस्तित कर रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान सीएनबीसी, 2 अटलरॉलिक एड ए न्यूयॉर्क टाइम्स सहित कई स्थानीय समाजनों ने फिल्लई के लेखों परविशेष धिये थे जिनमें उन्होंने टीवक्सा, प्रतिस्था और स्वास्थ्य के लिहाज से संवेदनशील समुदायों पर महामारी के दुष्प्रभाव को लेकर चर्चा की थी। फिल्लई ने एक विस्थापितय से इन्फ़र्नलबालॉजी में पीएचडी और रेडियल विस्तित कर रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान सीएनबीसी, 2 अटलरॉलिक एड ए न्यूयॉर्क टाइम्स सहित कई स्थानीय समाजनों ने फिल्लई के लेखों परविशेष धिये थे जिनमें उन्होंने टीवक्सा, प्रतिस्था और स्वास्थ्य के लिहाज से संवेदनशील समुदायों पर महामारी के दुष्प्रभाव को लेकर चर्चा की थी। फिल्लई ने एक विस्थापितय से इन्फ़र्नलबालॉजी में पीएचडी और रेडियल विस्तित कर रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान सीएनबीसी, 2 अटलरॉलिक एड ए न्यूयॉर्क टाइम्स सहित कई स्थानीय समाजनों ने फिल्लई के लेखों परविशेष धिये थे जिनमें उन्होंने टीवक्सा, प्रतिस्था और स्वास्थ्य के लिहाज से संवेदनशील समुदायों पर महामारी के दुष्प्रभाव को लेकर चर्चा की थी। फिल्लई ने एक विस्थापितय से इन्फ़र्नलबालॉजी में पीएचडी और रेडियल विस्तित कर रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान सीएनबीसी, 2 अटलरॉलिक एड ए न्यूयॉर्क टाइम्स सहित कई स्थानीय समाजनों ने फिल्लई के लेखों परविशेष धिये थे जिनमें उन्होंने टीवक्सा, प्रतिस्था और स्वास्थ्य के लिहाज से संवेदनशील समुदायों पर महामारी के दुष्प्रभाव को लेकर चर्चा की थी। फिल्लई ने एक विस्थापितय से इन्फ़र्नलबालॉजी में पीएचडी और रेडियल विस्तित कर रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान सीएनबीसी, 2 अटलरॉलिक एड ए न्यूयॉर्क टाइम्स सहित कई स्थानीय समाजनों ने फिल्लई के लेखों परविशेष धिये थे जिनमें उन्होंने टीवक्सा, प्रतिस्था और

